

नमो नमो निम्मल दंसणस्स



# आगमसुताणि (सटीकं)

भाग: - १४

संशोधक सम्पादकश्च :

मुनि दीपरत्नसागर

बालब्रह्मचारी श्री नेमिनाथाय नमः  
नमो नमो निम्मल दंसणस्स  
श्री आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्योनमः

# आगम सुत्ताणि (सटीक)

भाग:- १४

निरयावतिकाउपाङ्गसूत्रं, कल्पवतीसिकाउपाङ्गसूत्रं, पांषेकाउपाङ्गसूत्रं,  
पुष्पचूलिकाउपाङ्गसूत्रं, वृष्णिदशाउपाङ्गसूत्रं  
चतुःशरणप्रकीर्णकसूत्रं, अक्षरप्रत्याख्यानप्रकीर्णकसूत्रं,  
महाप्रत्याख्यानप्रकीर्णकसूत्रं, भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णकसूत्रं  
तंदुलवैचारिकप्रकीर्णकसूत्रं, संस्तारकप्रकीर्णकसूत्रं  
गच्छाचारप्रकीर्णकसूत्रं, गणिविद्याप्रकीर्णकसूत्रं  
देवेन्द्रस्तवप्रकीर्णकसूत्रं, मरमसमाधिप्रकीर्णकसूत्रं

-: संशोधकः सम्पादकश्च :-

**मुनि दीपरत्नसागर**

ता. १४/४/२०००

रविवार २०५६

चैत्र सुद ११

४५- आगम सुत्ताणि-सटीक

मूल्य रू. ११०००/-

卐 आगम श्रुत प्रकाशन 卐

-: संपर्क स्थल :-

“आगम आराधना केन्द्र” शीतलनाथ सोसायटी विभाग-१,  
प्लेट नं-१३, ४-थी मंडल, ब्हायसेन्टर, खानपुर,  
अहमदाबाद (गुजरात)

| आगमाः-१९.....३३ विषयानुक्रमः                      |                      |            |          |                          |            |
|---|----------------------|------------|----------|--------------------------|------------|
| मूलाङ्कः  | विषयः                | पृष्ठाङ्कः | मूलाङ्कः | विषयः                    | पृष्ठाङ्कः |
| १९ नियावलिकाउपाङ्गसूत्रस्य विषयानुक्रमः           |                      |            |          |                          |            |
| १-१९  | अध्ययन-१ कालः        | ५          | -२१      | अध्ययनानि-३.....१०       | २६         |
| -२०   | अध्ययन-२ सुकालः      | २६         |          | कृष्णः, सुकृष्णः इत्यादि |            |
| २० कल्पवतंसिकाउपाङ्गसूत्रस्य विषयानुक्रमः         |                      |            |          |                          |            |
| १   | अध्ययन-१ पद्मः       | २७         | ३-५      | अध्ययनानि-३.....१०       | २८         |
| -२  | अध्ययन-२ महापद्मः    | २८         |          | भद्रः, समुद्रः इत्यादि   |            |
| २१ पुष्पिकाउपाङ्गसूत्रस्य विषयानुक्रमः            |                      |            |          |                          |            |
| १-३   | अध्ययन-१ चन्द्रः     | ३०         | -९       | अध्ययन-५ पूर्णभद्रः      | ४८         |
| -४  | अध्ययन-२ सूर्यः      | ३२         | -१०      | अध्ययन-६ माणिभद्रः       | ४८         |
| -७  | अध्ययन-३ शुक्रः      | ३२         | -११      | अध्ययनानि-७.....१०       | ४९         |
| -८  | अध्ययन-४ बहुपुत्रिका | ४०         |          | दत्तः, शिवः इत्यादि      |            |
| २२ पुष्पचूलिकाउपाङ्गसूत्रस्य विषयानुक्रमः         |                      |            |          |                          |            |
| १-३   | अध्ययन-१ भूता        | ५०         | -३       | अध्ययनानि-२.....१०       | ५२         |
| २३ वृष्णिदशाउपाङ्गसूत्रस्य विषयानुक्रमः           |                      |            |          |                          |            |
| १-३   | अध्ययन-१ निषट्टः     | ५३         | ४-५      | अध्ययनानि-२.....१०       | ५७         |
| २४ चतुःशरणप्रकीर्णकसूत्रस्य विषयानुक्रमः          |                      |            |          |                          |            |
| १-७   | आवश्यक-अर्थाधिकारः   | ५८         | -५४      | दुष्कृतगर्हा             | ७४         |
| -९  | मंगल-आदिः            | ६०         | -५८      | सुकृत-अनुमोदना           | ७७         |
| -४८   | चतुःशरण              | ६१         | -६३      | उपसंहारः                 | ७८         |
| २५ आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णकसूत्रस्य विषयानुक्रमः |                      |            |          |                          |            |
| १-१०  | प्रथमा-प्ररूपणा      | ७९         | -४५      | असमाधिमरण                | ८६         |
| -३३   | प्रतिक्रमणादि आलोचना | ८१         | -७१      | पंडितमरण एव              | ८८         |
| -३६   | आलोचनादायकः-ग्राहकः  | ८६         |          | आराधनादिः                |            |

| मूलाङ्कः  | विषयः                   | पृष्ठाङ्कः | मूलाङ्कः | विषयः                    | पृष्ठाङ्कः |
|---|-------------------------|------------|----------|--------------------------|------------|
| <b>२६ महाप्रत्याख्यानप्रकीर्णकसूत्रस्य विषयानुक्रमः</b> |                         |            |          |                          |            |
| १-२   | मङ्गलं                  | ९३         | -१७      | भावना                    | ९४         |
| -७  | व्युत्सर्जन, क्षमापनादि | ९३         | -३६      | मिथ्यात्वत्याग, आलोचनादि | ९५         |
| -१२   | निन्द्या-गर्हाआदि       | ९४         | -१४२     | विविधं धर्मोपदेशादि      | ९७         |
| <b>२७ भक्तपरिज्ञाप्रकीर्णकसूत्रस्य विषयानुक्रमः</b>     |                         |            |          |                          |            |
| १-४   | मङ्गलं, ज्ञानमहत्ता     | ११०        | -२३      | आलोचना प्रायश्चित्       | १११        |
| -७  | शाश्वत अशाश्वत सुखं     | ११०        | -३३      | व्रत-सामायिक-आरोपणं      | ११३        |
| -११   | मरण भेदानि              | १११        | -१७३     | आचरणा, क्षमापना आदि      | ११४        |
| <b>२८ तन्दुलवैचारिकप्रकीर्णकसूत्रस्य विषयानुक्रमः</b>   |                         |            |          |                          |            |
| १-३   | मङ्गलं-द्वाराणि         | १३१        | -७४      | देहसंहननं-आहारादि        | १६०        |
| -७  | गर्भः-प्रकरणं           | १३३        | -९५      | काल-प्रमाणं              | १६५        |
| -५७   | जीवस्यदशदशा             | १३४        | -११६     | अनित्य, अशुचित्वादि      | १७६        |
| -६४   | धर्मोपदेश एवं फलं       | १५०        | -१६१     | उपदेशः, उपसंहारः         | १९४        |
| <b>२९ संस्तरकप्रकीर्णकसूत्रस्य विषयानुक्रमः</b>         |                         |            |          |                          |            |
| १-३०  | मङ्गलं, संस्तरकगुणाः    | १९५        | -८८      | संस्तरकस्य ध्यन्ताः      | २०१        |
| -५५   | संस्तरकस्वरूपं, लाभं    | १९८        | -१३३     | भावना                    | २०५        |
| <b>३० गच्छाचारप्रकीर्णकसूत्रस्य विषयानुक्रमः</b>        |                         |            |          |                          |            |
| १-२   | मङ्गलं-आदि              | २०९        | -१०६     | गुरुस्वरूपं              | २२३        |
| -६  | गच्छे वसमानस्य गुणाः    | २१०        | -१३४     | आचार्यस्वरूपं            | २४६        |
| -४०   | आचार्यस्वरूपं           | २१०        | -१३७     | उपसंहारः                 | २५६        |
| <b>३१ गणिविद्याप्रकीर्णकसूत्रस्य विषयानुक्रमः</b>       |                         |            |          |                          |            |
| १-३   | प्रथमं द्वारं-दिवसं     | २५९        | -५८      | षष्ठं द्वारं-मुहूर्तं    | २६४        |
| -१०   | द्वितीयं द्वारं-तिथिः   | २५९        | -६३      | सप्तमं द्वारं-शकुनबलं    | २६६        |
| -४१   | तृतीयं द्वारं-नक्षत्रः  | २६०        | -७१      | अष्टमं द्वारं-लानः       | २६६        |
| -४६   | चतुर्थं द्वारं-करणं     | २६४        | -८४      | नवमं द्वारं-निमित्तबलं   | २६७        |
| -४८   | पञ्चमं द्वारं-ग्रहः     | २६४        | -८५      | उपसंहारः                 | २६९        |

| मूलाङ्कः  | विषयः                   | पृष्ठाङ्कः | मूलाङ्कः | विषयः                | पृष्ठाङ्कः |
|---|-------------------------|------------|----------|----------------------|------------|
| <b>३२ देवेन्द्रस्तवप्रकीर्णकसूत्रस्य विषयानुक्रमः</b> |                         |            |          |                      |            |
| १-११  | मङ्गलं, देवेन्द्रपृच्छा | २७०        | -२७३     | वैमानिक-अधिकारः      | २८९        |
| -६६   | भवनपति अधिकारः          | २७१        | -३०२     | इसिप्रभापृथ्वि एवं   | ३०१        |
| -८०   | वाणव्यन्तर अधिकारः      | २७७        |          | सिद्धाधिकारः         |            |
| -१६१  | ज्योतिष्क-अधिकारः       | २७९        | -३०७     | जिनऋद्धिः, उपसंहारः  | ३०५        |
| <b>३३ मरणसमाधिप्रकीर्णकसूत्रस्य विषयानुक्रमः</b>      |                         |            |          |                      |            |
| १-१०  | मरणविधिः आरम्भः         | ३०६        | -२५७     | आतुरप्रत्वाख्यानादि  | ३३०        |
| -८३   | आराधना, मरणस्वरूपं      | ३०७        | -२६६     | पञ्चमहाव्रतस्यरक्षा  | ३३६        |
| -९२   | आचार्यस्य गुणाः         | ३१६        | -४१२     | आराधना, उपदेश आदिः   | ३३७        |
| -१२६  | आलोचनावर्णनं            | ३१७        | -५२५     | विविध-उदाहरणादि      | ३५४        |
| -१२८  | तपसः भेदाः              | ३२०        | -५५०     | मरणभेदानि निरुपणं    | ३६७        |
| -१५७  | ज्ञानादि गुण वर्णनं     | ३२१        | -५६९     | आराधना-अनुचितन       | ३७०        |
| -१७४  | आत्मनः शुद्धि           | ३२३        | -६३९     | द्वादश-भावना         | ३७२        |
| -२०७  | संलेखना                 | ३२६        | -६६४     | पण्डितमरणं, उपसंहारः | ३८०        |

## भागः-१४

आगमाः-१९..... ३३ पर्यन्ताः

- निरयावलिकादिउपाङ्गपञ्चक -

- दशप्रकीर्णकानि -

## આર્થિક અનુદાતા

-પ.પૂ. માલવભુષણ તપસ્વી આચાર્યદેવ શ્રી નવરત્નસાગર સૂરીશ્વરજી મ. સા. ની પ્રેરણાથી શ્રી લાલભાઈ દેવચંદ શાહ તરફથી - નકલ એક.

-પ.પૂ. સરળ સ્વભાવી-શ્રીમદ્ ભગવતીસૂત્ર વ્યાખ્યાન પદુ આચાર્યદેવ શ્રી નરદેવસાગરસૂરીશ્વરજી મ. સા. તથા પૂજ્યશ્રીના શિષ્યરત્ન તપસ્વી ગણિવર્યશ્રી ચંદ્રકીર્તિસાગરજી મ. સા. ની પ્રેરણાથી શ્રી પુરુષાદાનીય પાર્શ્વનાથ શ્વે. મૂર્તિ. જૈન સંઘ, દેવકીનંદન સોસાયટી, અમદાવાદ તરફથી નકલ એક.

-પ.પૂ. શાસન પ્રભાવક-કિયારાગી આચાર્યદેવશ્રી વિજય ઋચકચંદ્ર સૂરીશ્વરજી મ. સા. ની પ્રેરણાથી એક સદ્ગૃહસ્થ તરફથી નકલ એક.

-પ.પૂ. સાહિત્યપ્રેમી મુનિરાજ શ્રી સર્વોદય સાગરજી મ. સા. ની પ્રેરણાથી-“અચલગચ્છાધિપતિ પ.પૂ. આ. ભ. શ્રી ગુણસાગરસૂરીશ્વરજી મ. સા. ના શિષ્યરત્ન પ.પૂ. મુનિરાજ શ્રી ચારિત્રરત્નસાગરજી મ. ની ૧૯મી અઢાઇ નિમિત્તે-શ્રી ચારિત્રરત્ન ડા. ચે. ટ્રસ્ટ તરફથી નકલ એક.

-પ.પૂ. યૈયાપૃત્યકારિકા સાધવી શ્રી મલયાશ્રીજી મ. સા. ના શિષ્યા વ્યવહાર વિચક્ષણા પૂ. સાધવી શ્રી હિતજ્ઞાશ્રીજી મ. ની પ્રેરણાથી જૈન આરાધના મંદિર-“જ્ઞાનખાતા” તરફથી નકલ એક.

-પ.પૂ. સૌમ્યમૂર્તિ સાધવીશ્રી સૌમ્યગુણાશ્રીજી મ. ની પ્રેરણાથી પ.પૂ. ગુરુમાતા-વાત્સલ્યમૂર્તિ સા. શ્રી રત્નત્રયાશ્રીજી મ. ની પંચમી પુન્યતિથિ નિમિત્તે શ્રીમતી લીલમબેન પ્રાણલાલ પી. દામાણી તરફથી નકલ એક.

-પ.પૂ. સ્વનામધન્યા સા. શ્રી સૌમ્યગુણાશ્રીજી તથા તેઓના શિષ્યા સા. શ્રી સમજ્ઞાશ્રીજીની પ્રેરણાથી-૨૦૫૩ના ચશસ્વી ચાતુર્માસ નિમિત્તે શ્રી પાર્શ્વપદ્માવતી જૈન સંઘ, પાણલનગર, અમદાવાદ તરફથી નકલ બે.

-પ.પૂ. રત્નત્રયારાધકા સાધવીશ્રી સૌમ્યગુણાશ્રીજી તથા તેઓની શિષ્યા સા. શ્રી સમજ્ઞાશ્રીજીની પ્રેરણાથી સંવત ૨૦૫૪ના નિર્મળ આરાધનામય ચાતુર્માસની સ્મૃતિમાં-ઘાટલોડિયા (પાવાપુરી) જૈન શ્વે. મૂર્તિ. સંઘ, અમદાવાદ તરફથી નકલ એક.

-પ.પૂ. સાધ્વી શ્રી રત્નત્રયાશ્રીજી મ.ના પરમ વિનેયા સા.શ્રી સૌમ્યગુણાશ્રીજીની પ્રેરણાથી તેઓના સંસારીભાઈશ્રી ઇન્દ્રવદનભાઈ દામાણીના અનુમોદનીય પુરુષાર્થથી “આગમ દીપ-સંપુટ”ના બદલામાં પ્રાપ્ત રકમમાંથી-નકલ ચાર.

-પ.પૂ. પ્રશમરસનિમગ્ના સાધ્વીશ્રી પ્રશમશીલાશ્રીજી મ.ની પ્રેરણાથી- સમ્મેતશિખર તિર્થોદ્ધારિકા પ.પૂ. સાધ્વીશ્રી રંજનશ્રીજી મ.સા.ના શિષ્યા અપ્રતિમ યેથાવૃત્ત્યકારિકા સા.શ્રી મલયાશ્રીજી તત્ શિષ્યા સા. શ્રી નરેન્દ્રશ્રીજી-તત્ શિષ્યા સા. શ્રી પ્રગુણાશ્રીજી મ.ના. આત્મશ્રેયાર્થે- અરિહંત ટાવર, જેન સંઘ, મુંબઈ તરફથી નકલ એક.

-પ.પૂ. આગમોદ્ધારક આચાર્યદેવશ્રી ના સમુદાયવર્તી પ.પૂજ્ય યેથાવૃત્ત્યકારિકા સા.શ્રી મલયાશ્રીજી મ.ના શિષ્યા પૂ.સા. શ્રી કેવલ્યશ્રીજી મ.ના શિષ્યા પૂ.સા.શ્રી ભવ્યાનંદશ્રીજી મ.સા.ના સુશિષ્યા મિષ્ટભાષી સાધ્વીશ્રી પૂર્ણપ્રજ્ઞાશ્રીજી મ.સા. તથા તેમના વિનિત શિષ્યા સા. શ્રી પૂર્ણદર્શિતાશ્રીજી તથા સા. પૂર્ણનંદીતાશ્રીજીની પ્રેરણાથી-સર્વોદય પાર્શ્વનાથ ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ, મુલુન્ડ મુંબઈ તરફથી નકલ એક.

-પ.પૂ. યેથાવૃત્ત્યકારિકા સાધ્વીશ્રી મલયાશ્રીજી મ.ના પ્રશિષ્યા સા. શ્રી ભવ્યાનંદશ્રીજીમ.ના સુવિનિતા સા.શ્રી કલ્પપ્રજ્ઞાશ્રીજી તથા કોકીલકંઠી સા. શ્રી કેરવપ્રજ્ઞાશ્રીજી ની પ્રેરણાથી -મેહુલ સોસાયટી, આરાધનાભવન, સુભાષનગર, વડોદરાની બહેનો તરફથી નકલ એક

-શ્રી વિશાશ્રીમાળી તપગચ્છજ્ઞાતિ-જ્ઞાનખાતું, જેન પાઠશાળા, જામનગર તરફથી નકલ બે.

-શ્રી મંગળ પારેખનો ખાંચો-જેન શ્વે. મૂર્તિ. સંઘ, અમદાવાદ. તરફથી ૨૦૫૪ના ચાતુર્માસ નિમિત્તે નકલ બે.

- શ્રી આકોટા જેન સંઘ, વડોદરાની બહેનો તરફથી નકલ એક.

-શ્રીમતી નયનાબેન રમેશચંદ્ર શાહ, વડોદરાની પ્રેરણાથી આગમોના સેટના બદલામાં પ્રાપ્ત રકમમાંથી નકલ પાંચ.

શોષ સર્વે રકમ “અમારા”આજ પર્યન્ત પ્રકાશનોના  
બદલામાં પ્રાપ્ત થયેલી છે.

नमो नमो निम्नत दंलगस्त  
पंचम नमधर श्री सुधर्मास्वामिने नमः

## ३२ देवेन्द्रस्तव-प्रकिर्णकसूत्रम्

मच्छाय

(नवमं-प्रकिर्णकम्)

(मूलम् + संस्कृत छाया)

- मू. (१) अमरनरवंदिए वंदिऊण उसभाइजिणवरिंदे ।  
वीरवरअपच्छिमंते तेलुक्क गुरू पणमिऊणं ॥
- छा. अमरनरवन्दितान् वन्दित्वा ऋषभादिजिनवरेन्द्रान् ।  
अपश्चिमवीरवरान् तान् त्रैलोक्यगुरून् प्रणम्य ॥
- मू. (२) कोई पढमपाउसंमि सावओ समयनिच्छयविहिण्णू ।  
वन्नेइ थयमुयारं जिनमाणे वद्धमाणम्मि ॥
- छा. कश्चित् श्रावकः समयनिश्चयविधिज्ञः प्रथमप्रावृषि  
वर्णयति स्तवमुदारं जातबहुमाने वर्द्धमाने ॥
- मू. (३) तस्स धुणंतस्स जिणं सोइयकडा पिया सुहनिसत्रा ।  
पंजलिउडा अभिमुही सुणइ थयं वद्धमाणस्स ॥
- छा. तस्य जिनं स्तुवतः समीपे कृतश्रुतिका प्राञ्जलिपुटा  
ऽभिमुखी प्रिया वर्द्धमानस्य स्तवं सुखनिषण्णा शृणोति ॥
- मू. (४) इंदविलयाहिं तिलयरयणांकिए लक्खणांकिए सिरसा ।  
पाए अवगयमाणस्स वंदिमो वद्धमाणस्स ॥
- छा. इन्द्रवनितामिस्तिलकरलाङ्कितान्त्वक्षणाङ्कितान् ।  
अपगतमानस्य वर्द्धमानस्य पादान् शिरसा वन्दामहे ॥
- मू. (५) विनयपणएहि सिढिलमउडेहिं अप(पय)डियजसस्स देवेहिं ।  
पाया पसंतरोसस्स वंदिमो वद्धमाणस्स ॥
- छा. विनयप्रणतैः शिथिलमुकुटैर्देवैः प्रशान्तरोषस्थापति (प्रकटि)त  
यशसो वर्द्धमानस्य पादान् वन्दामहे ॥
- मू. (६) बत्तीसं देविंदा जस्स गुणेहिं उवहम्मिया छायं ।  
तो (नो) तस्स वियच्छेयं पायच्छयं उवेहामो ॥
- छा. (६) द्वात्रिंशद् देवेन्द्रा गुणैर्यस्य छायायामागताः ।  
ततस्तस्य विगतच्छेदां पादच्छायामाश्रयामः ॥



- मू. (७) बत्तीसं देविंदति भणियमित्तमि सा पियं भणइ ।  
अंतरभासं ताहे काहेमो कोउहल्लेणं ॥
- छा. द्वात्रिंशद्देवेन्द्रा इति भणितमात्रे सा भणति ।  
प्रियमन्तरभाषां करिष्यामि कौतूहलेन ॥
- मू. (८) कयरे ते बत्तीसं देविंदा को व कत्थ परिवसइ ।  
केवइया कस्स ठिई को भवणपरिग्गहो तस्स ॥
- छा. कतरे ते द्वात्रिंशद् देवेन्द्राः ? को वा कुत्र परिवसति ।  
कियती कस्य स्थिति ? को भवनपरिग्रहस्तस्य ॥
- मू. (९) केवइया व विमाणा भवना नगरा व हुंति केवइया ।  
पुढवीण व बाहल्लं उच्चत्त विमाणवन्नो वा ॥
- छा. कियन्ति वा विमानानि भवनानि नगराणि वा भवन्ति कियन्ति ?  
पृथिव्या वा बाहल्यमुच्चत्वं विमानवर्णो वा ॥
- मू. (१०) का रंति व का लेणा उक्कोसं मज्झिमजहन् ।  
उत्सास्सो निस्सासो ओही विसओ व को केसिं ॥
- छा. किंरमणाः किलयनाः उक्कृष्टमध्यमजधन्यैः ।  
उच्छ्वासो निश्वासोऽवधिर्विषयो वा कः केषाम् ॥
- मू. (११) विनओवयार ओवहम्मियाइ हासवसमुव्वहंतीए ।  
पडिपुच्छिए पियाए भणइ सुअणु ! तं निसामेह ॥
- छा. विनयोपचारप्राप्तया वचनाङ्गीकार (हासवश) मुद्बहन्त्या ।  
इह प्रियया प्रतिपृष्टे भणति सुतनो ! त्वं निशमय ॥
- मू. (१२) सुअनाणसागराओ सुणिओ पडिपुच्छणाइ जं लद्धं ।  
पुन वागरणावलिअं नामावलियाइ इंदाणं ॥
- छा. श्रुतज्ञानसागरात् श्रुतं प्रतिपृच्छया यल्लब्ध ।  
पुनव्याकरणबलवन्नामावलिकादि इन्द्राणाम् ॥
- मू. (१३) सुण वागरणावलिअं रयणं व पणामियं च वीरेहिं ।  
तारावलिव्व धवलं हियएण पसन्नचित्तेणं ॥
- छा. श्रुणु व्याकरणबलवद् रत्नवद् वीरैर्दत्तं ।  
तारावली धवलं हृदयेन प्रसन्नचेतसा ॥
- मू. (१४) रयणप्पभाइकुडनिकुडवासी सुतणू ! तेउलेसागा ।  
वीसं विक्कासियनयणा भवणवई ते निसामेह (ससदिट्ठी सव्वदेविंदा) ॥
- छा. रत्नप्रभादिकुडयनिष्कुटवासिनः सुतनो ! तेजोलेश्याकाः ।  
विंशतिर्विकसित नयना भवनपतयस्तान् निशमय ॥
- मू. (१५) भवणवई दो ईंदा चमरे वइरोअणे असुराणं ।  
दो नागकुमारिंदा भूयानंदे य धरणे य ॥

- छा. द्वौ भवनपतीन्द्रौ चमरो वैरोचनोऽसुराणाम् ।  
द्वौ नागकुमारेन्द्रौ भूतानन्दश्च धरणश्च ॥
- मू. (१६) दो सुयणु ! सुवर्णिदा वेणुदेवे य वेणुदाली य ।  
दो दीवकुमारिंदा पुण्णे य तथा वसिष्ठे य ॥
- छा. द्वौ सुतनो ! सुवर्णकुमारेन्द्रौ वेणुदेवश्च वेणुदालिश्च ।  
द्वौ द्वीपकुमारेन्द्रौ पूर्णश्च तथा वशिष्टश्च ॥
- मू. (१७) दो उदहिकुमारिंदा जलकंते जलपमे य नामेणं ।  
अमियगङ्गामियवाहण दिसाकुमाराण दो इंदा ॥
- छा. द्वावुदधिकुमारेन्द्रौ जलकान्तो जलप्रमश्च नाम्ना ।  
अमितगतिरमितवाहनो दिक्कुमाराणां द्वाविन्द्रौ ॥
- मू. (१८) दो वाउकुमारिंदा वेलंब पभंजणे य नामेण ।  
दो थणियकुमारिंदा घोसे य तथा महाघोसे ॥
- छा. द्वौ वायुकुमारेन्द्रौ वेलम्बः प्रभञ्जनश्च नाम्ना ।  
द्वौ स्तनितकुमारेन्द्रौ घोषश्च तथा महाघोषः ॥
- मू. (१९) दो विज्जुकुमारिंदा हरिकंतं हरिस्सहे य नामेणं ।  
अग्गिहिसअग्गिमाणव हुयासणवईवि दो इंदा ॥
- छा. द्वौ विद्युत्कुमारेन्द्रौ हरिकान्तो हरिसहश्च नाम्ना ।  
अग्निशिखाऽग्निमानवौ हुताशनपती अपि द्वाविन्द्रौ ॥
- मू. (२०) एए विकसियनयणे ! दसदिसि वियसियजसा मए कहिया ।  
भवणवरसुहनिसन्ने सुण भवणपरिग्गहमिसेसिं ॥
- छा. एते विकसितनयने ! दशदिगविकसितयशसो मया कथिताः ।  
भवनवरसुखनिषण्णे ! श्रृणु भवनपरिग्रहमेषाम् ॥
- मू. (२१) चमरवइरोअणाणं असुरिंदाणं महानुभागाणं ।  
तेसिं भवणवराणं चउसद्धिमहे सयसहस्से ॥
- छा. चमरवैरोचनयोरसुरेन्द्रयोर्महानुभागयोः ।  
तेषां भवनवराणां चतुःषष्टिरघः शतसहस्राणि ॥
- मू. (२२) नागकुमारिंदाणं भूयाणं दधरणाण दुण्हंपि ।  
तेसिं भवणवराणं चुलसीइमहे सयसहस्से ॥
- छा. नागकुमारेन्द्रयोर्भूतानन्दधरणयोर्द्वयोरपि ।  
तेषां भवनवराणां चतुरशीतिरघः शतसहस्राणि ॥
- मू. (२३) दो सुयणु ! सुवर्णिदा वेणुदेवे य वेणुदाली य ।  
तेसिं भवणवराणं बावत्तरिमो सयसहस्सा ॥
- छा. द्वौ सुतनो ! सुवर्णेन्द्रौ वेणुदेवश्च वेणुदालिश्च ।  
तयोर्भवनवराणां द्वासप्तति शतसहस्राणि ॥

- मू. (२४) वाउकुमारिदाणं वेलंबपभंजणाण दुण्हंपि ।  
तेसिं भवणवराणं छन्नवइमहे सयसहस्सा ॥
- छा. वायुकुमारेन्द्रयोर्वेलम्बप्रभञ्जनयोर्द्वयोरपि ।  
तेषां भवनवराणां षन्नवतिरघः शतसहस्राणि ॥
- मू. (२५) चउसट्ठी असुराणं चुलसीई चव होइ नागाणं ।  
बावत्तरि सुवण्णाणं वाउकुमाराण छन्नउई ॥
- छा. चतुःषष्टिसुराणां चतुरशीतिश्चैव भवति नागानाम् ।  
द्वासप्तति सुवर्णानां वायुकुमाराणां षन्नवति ॥
- मू. (२६) दीवदिसाउदहीणं विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीणं ।  
छण्हंपि जुयलयाणं बावत्तरिमो सयसहस्सा ॥
- छा. द्वीपदिगुदधीनां विद्युत्कुमारेन्द्रस्तनिताग्रीनाम् ।  
षण्णामपि युगलानां द्वासप्तति शतसहस्राणि ॥
- मू. (२७) इक्किक्कम्मि य जुयले नियमा बावत्तरि सयसहस्सा ।  
सुंदरि ! लीलाइ ठिए ठिईविसेसं निसामेहि ॥
- छा. एकैकस्मिंश्च युगले नियमादासप्तति शतसहस्राणि ।  
सुन्दरि ! लीलया स्थिते ! स्थितिविशेषं निशमय ॥
- मू. (२८) चमरस्स सागरोवम सुंदरि ! उक्कोसिया ठिई भणिया ।  
साहीया बोद्धव्वा बलिस्स वइरोयणिंदस्स ॥
- छा. चमरस्य सागरोपमं सुन्दरि ! उक्कृष्टा स्थितिर्भणिता ।  
साधिका बोद्धव्या बलेर्वैरोचनेन्द्रस्य ॥
- मू. (२९) जे दाहिणाण इंदा चमरं मुत्तूण सेसया भणिया ।  
पलिओवमं दिवहं ठिई उक्कोसिया तेसिं ॥
- छा. ये दक्षिणानामिन्द्राश्चमरं मुक्त्वा शेषा भणिताः ।  
पत्न्योपमं द्वयर्द्धं स्थितिरुक्कृष्टा तेषाम् ॥
- मू. (३०) जे उत्तरेण इंदा बलिं पमुत्तूण सेसया भणिया ।  
पलिओवमाइं दुन्नि उ देसूणाइं ठिई तेसिं ॥
- छा. ये उत्तरत इन्द्रा बलिं प्रमुच्य शेषा भणिताः ।  
पत्न्योपमे द्वे एव देशोने स्थितिस्तेषाम् ॥
- मू. (३१) एसोवि ठिइविसेसो सुंदररूवे ! विसिद्धरूवाणं ।  
भोमिजसुरवराणं सुण अनुभागो सुनयराणं ॥
- छा. एषोऽपि स्थितिविशेषः सुन्दररूपे ! विशिष्टरूपाणां ।  
भौमेयसुरवराणां श्रृण्वनुभागं सुनगराणाम् ॥
- मू. (३२) जोअणसहस्समेगं ओगाहित्तूण भवणनगराई ।  
रयणप्पभाइ सव्वे इक्कारस जोअणसहस्से ॥

- छा. योजनसहस्रमेकमवगाह्य भवननगराणि ।  
रत्नप्रभायां सर्वाणि एकादश योजनसहस्राणि ॥
- मू. (३३) अंतो चउरंसा खलु अहियमनोहरसहावरमणिज्जा ।  
बाहिरओऽविय वद्दा निम्मलवइरामया सव्वे ॥
- छा. अन्तश्चतुरस्राणि खलु अधिकमनोहरस्वभाववरमणीयानि ।  
बाह्यतोऽपि वृत्तानि निर्मलवज्रमयानि सर्वाणि ॥
- मू. (३४) उक्किन्नंतरफलिहा अब्भितरओ उ भवणवासीणं ।  
भवणनगरा विरायंति कणगसुसिलिड्डपागारा ॥
- छा. उत्कीर्णान्तरपरिखा अभ्यन्तरतस्तु भवनवासिनाम् ।  
भवननगराणि विराजन्ते सुश्लिष्टकनकप्राकाराः ॥
- मू. (३५) वरपउमकण्णियामंडियाहिं हिड्डा सहावलद्वेहिं ।  
सोहिंति पइड्डाणेहिं विविहमणिभत्तिचित्तेहिं ॥
- छा. वरपद्मकर्णिकामण्डिताभिरधः स्वभावलष्टैः ।  
शोभन्ते विविधमणिभक्तिचित्रैः प्रतिष्ठानैः ॥
- मू. (३६) चंदनपड्डिएहि य आसत्तोस्सत्तमल्लदामेहिं ।  
दारेहिं पुरवरा ते पडागमालाउरा रम्मा ॥
- छा. चन्दनपदस्थितैरासक्तोत्सक्तमाल्यदामभिद्धारैः (शोभन्ते)  
तानि पुरवराणि पताकामालातुराणि रम्याणि ॥
- मू. (३७) अट्टेव जोयणाइं उव्विद्धा हुंति ते दुवारवरा ।  
धूमघडियाउलाइं कंचनदामोवणद्धाणि ॥
- छा. अष्टौ च योजनान्युद्विद्धानि भवन्ति तानि द्वारवराणि ।  
धूपघटिकाकुलानि काञ्चनदामोपनद्धानि ॥
- मू. (३८) जहिं देवा भवणवई वरतरुणीगीयवाइयरवेणं ।  
निच्चसुहिया पमुइया गयंपि कालं न याणंति ॥
- छा. यत्र देवा भवनपतयो वरतरुणीगीतवादितरवेण ।  
नित्यसुखितः प्रमुदिता गतमपि कालं न जानन्ति ॥
- मू. (३९) चमरे धरणे तह वेणुदेव पुण्णे य होइ जलकंते ।  
अमियगई वेल्बे घोसे हरी अ अग्गिसिहे ॥
- छा. चमरो धरणस्तथा वेणुदेवः पूर्णश्च भवति जलकान्तः ।  
अमितगतिर्वैलम्बो घोषो हरिश्चाग्निशिखः ॥
- मू. (४०) कणगमणिरयणथूभियरम्माइं सवेइयाइं भवणाइं ।  
एएसिं दाहिणओ सेसाणं दाहिणे (उत्तरे) पासे ॥
- छा. कनकमणिरत्नस्तूपिकारम्याणि सवेदिकानि भवनानि ।  
एतेषां दक्षिणतः शेषाणामुत्तरे पाश्वरे ॥

- मू. (४१) चउतीसा चोयाला अडुतीसं च सयसहस्साइं ।  
चत्ता पन्नासा खलु दाहिणओ हुंति भवणाइं ॥
- छा. चतुस्त्रिंशत् चतुश्चत्वारिंशत् अष्टत्रिंशच्च शतसहस्राणि ।  
चत्वारिंशत् पञ्चाशत् खलु दक्षिणस्यां भवन्ति भवनानि ॥
- मू. (४२) तीसा चत्तालीसा चउतीसं वेव सयसहस्साइं ।  
छत्तीसा छायाला उत्तरओ हुंति भवणाइं ॥
- छा. त्रिंशत् चत्वारिंशत् चतुस्त्रिंशच्चैव शतसहस्राणि ।  
षट्त्रिंशत् षट्चत्वारिंशत् उत्तरस्यां भवन्ति भवनानि ॥
- मू. (४३) भवणविमाणवईणं तायत्तीसा य लोगपाला य ।  
सव्वेसिं तिन्नि परिसा समाणचउगुणायरक्खा उ ॥
- छा. भवनविमानपतीनां त्रायस्त्रिंशाश्च लोकपालाश्च ।  
सर्वेषां तिस्र पर्वदः सामानिकचतुर्गुणा आत्मरक्षाः ॥
- मू. (४४) चउसट्ठी सट्ठी खलु छच्च सहस्सा तहेव चत्तारि ।  
भवणवइवाणमंतरजोइसियाणं च सामाणे ॥
- छा. चतुःषष्टि षष्टि खलु षट् च सहस्राणि तथैव चत्तारि ।  
भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्काणां सामानिकाः ॥
- मू. (४५) पंचग्गमहिसीओ चमरबलीणं हवंति नायव्वा ।  
सेसयभवणिंदाणं छच्चेव य अग्गमहिसीओ ॥
- छा. पञ्चाग्रमहिष्यश्चमरबलिनोः भवन्ति ज्ञातव्याः ।  
शेषभवनेन्द्राणां षट् चैव चाग्रमहिष्यः ॥
- मू. (४६) दो चेव जंबुदीवे चत्तारि य माणुसुत्तरे सेले ।  
छव्वारुणे समुद्दे अड्ड य अरुणम्मि दीवम्मि ॥
- छा. द्वावेव जम्बूद्वीपे चत्वारश्च मानुषोत्तरे शैले ।  
षड् वारुणे समुद्रे अथै चारुणे द्वीपे ॥
- मू. (४७) जंनामए समुद्दे दीवे वा जंमि हुंति आवासा ।  
तन्नामए समुद्दे दीवे वा तेसि उप्पाया ॥
- छा. यन्नामके समुद्रे द्वीपे वा यस्मिन् भवन्त्यावासाः ।  
तन्नामके द्वीपे समुद्रे वा तेषामुत्पातपर्वताः ॥
- मू. (४८) असुराणं नागाणं उदहिकुमाराण हुंति आवासा ।  
वरुणवरे दीवम्मि तत्थेव य तेसि उप्पाया ॥
- छा. असुराणां नागानामुदधिकुमाराणां भवन्त्यावासाः ।  
वरुणवरे द्वीपे तत्रैव च तेषामुत्पाताः ॥
- मू. (४९) दीवदिसाअग्गीणं थणियकुमाराण हुंति आवासा ।  
अरुणवरे दीवम्मि य तत्थेव य तेसि उप्पाया ॥

- छा. द्वीपदिगग्नीनां स्तनितकुमाराणां भवन्त्यावासाः ।  
अरुणवरे द्वीपे तत्रैव च तेषामुत्पातपर्वताः ॥
- मू. (५०) वाउसुवर्णिदाणं एएसिं माणुसुतरे सेले ।  
हरिणो हरिष्यहस्स य विञ्जुप्पभमालवंतेसु ॥
- छा. वायुसुपर्णेन्द्राणामेतेषां मानुषोत्तरे शैले ।  
हरेर्हरिप्रभस्य च विद्युत्प्रभमाल्यवतोः ॥
- मू. (५१) एएसिं देवाणं बलवीरियपरक्कमो अ जो जस्स ।  
ते सुंदरि ! वण्णेहं अहक्कमं आनुपुव्वीए ॥
- छा. एतेषां देवानां बलवीर्यपराक्रमश्च यो यस्य ।  
तं सुन्दरि ! वर्णयेऽहं यथाक्रममानुपूर्व्या ॥
- मू. (५२) जाव य जंबुद्वीवो जाव य चमरस्स चमरचंचा उ ।  
असुरेहिं असुरकन्नाहिं तस्स विसओ भरेउं जे ॥
- छा. यावच्च जम्बूद्वीपो यावच्च चमरस्य चमरचञ्चा ।  
असुरैरसुरकन्याभिर्भर्तुं तस्य विषयः ॥
- मू. (५३) तं चेव समइरेगं बलिस्स वइरोयणस्स बोद्धव्वं ।  
असुरेहिं असुरकन्नाहिं तस्स विसओ भरेउं जे ॥
- छा. स एव समतिरेको बलेर्वैरोचनस्य बोद्धव्यः ।  
असुरैरसुरकन्याभिर्भर्तुं तस्य विषयः ॥
- मू. (५४) धरणोवि नागराया जंबुद्वीवं फडाइ छाइज्जा ।  
तं चेव समइरेगं भूयानंदे य बोद्धव्वं ॥
- छा. धरणोऽपि नागराजो जम्बूद्वीपं फणेनाच्छादयेत् ।  
तमेव समतिरेकं भूतानन्दे च बोद्धव्यः ॥
- मू. (५५) गुरुलोऽवि वेणुदेवो जंबुद्वीवं छइज्ज पक्खेणं ।  
तं चेव समइरेगं वेणुदालिम्मि बोद्धव्वं ॥
- छा. गरुडोऽपि वेणुदेवो जम्बूद्वीपमाच्छादयेत् पक्षेण ।  
तमेव समतिरेकं वेणुदालीं बोद्धव्यः ॥
- मू. (५६) पुण्णोवि जंबुद्वीवं पाणितलेणं छइज्ज इक्केणं ।  
तं चेव समइरेगं हवइ वसिद्धेवि बोद्धव्वं ॥
- छा. पूर्णोऽपि जम्बूद्वीपं पाणितलेनाच्छादयेदेकेन ।  
तमेव समतिरेकं भवति वशिष्टेऽपि बोद्धव्यः ॥
- मू. (५७) इक्काइ जलुम्पीए जंबुद्वीवं भरिज्ज जलकंतो ।  
तं चेव समइरेगं जलप्पभे होइ बोद्धव्वं ॥
- छा. एकया जलोर्म्या जम्बूद्वीपं भरेज्जलकान्तः ।  
तमेव समतिरेकं जलप्रभे भवति बोद्धव्यः ॥

- मू. (५८) अमियगइस्सवि विसओ जंबुद्वीवं तु पायपण्हीए ।  
कंपिज्ज निरवसेसं इयरो पुण तं समइरेगं ॥
- छा. अमितगतरेपि विषयो जम्बूद्वीपं तु पादपार्ष्णिना ।  
कम्पयेन्निरवशेषमितरः पुनस्तं समतिरेकम् ॥
- मू. (५९) इक्काइ वायुगुंजाइ जंबुद्वीवं भरिज्ज वेलंबो ।  
तं चेव समइरेगं पभंजणे होइ बोद्धव्वं ॥
- छा. एकया वातगुञ्जया जम्बूद्वीपं भरेद्वेलम्बः ।  
तमेव समतिरेकं प्रभञ्जने भवति बोद्धव्यः ॥
- मू. (६०) घोसोऽवि जंबुद्वीवं सुंदरि ! इक्केण थणियसदेणं ।  
बहिरीकरिज्ज सव्वं इयरो पुण तं समइरेगं ॥
- छा. धोषोऽपि जम्बूद्वीपं सुन्दरि ! एकेन स्तनितशब्देन ।  
बधिरीकूर्यात्सर्वमितरः पुनस्तं समतिरेकम् ॥
- मू. (६१) इक्काइ विज्जुयाए जंबुद्वीवं हरी पकासिज्ज ।  
तं चेव समइरेगं हरिस्सहे होइ बोद्धव्वं ॥
- छा. एकया विद्युता जम्बूद्वीपं हरि प्रकाशयेत् ।  
तमेव समतिरेकं हरिसहे भवति बोद्धव्यः ॥
- मू. (६२) इक्काइ अग्गिजालाइ जंबुद्वीवं डहिज्ज अग्गिसिहो ।  
तं चेव समइरेगं माणवए होइ बोद्धव्वं ॥
- छा. एकयाऽग्निज्वालयया जम्बूद्वीपं दहेदग्निशिखः ।  
तमेव समतिरेकं माणवके भवति बोद्धव्यः ॥
- मू. (६३) तिरियं तु असंखिज्जा दीवसमुद्दा सएहिं रूवेहिं ।  
अवगाढाउ करिज्जा सुंदरि ! एएसि एणयरो ॥
- छा. तिर्यक् तु असङ्ख्येयान् द्वीपसमुद्रान् स्वकै रूपैः ।  
अवगाढान् कुर्यात् सुन्दरि ! एतेषामेकतरः ॥
- मू. (६४) पभू अन्नयरो इंदो जंबुद्वीवं तु वामहत्थेण ।  
छत्तं जहा धरिज्जा अन्नयओ मंदरं धित्तुं ॥
- छा. प्रभुरेकतर इन्द्रो जम्बूद्वीपं तु वामहस्तेन ।  
छत्रं यथा धर्तुमन्यतो मन्दरं प्रहीतुम् ॥
- मू. (६५) जंबुद्वीवं काऊण छत्तयं मंदरं व से दंडं ।  
पभू अन्नयरो इंदो एसो तेसिं बलविसेसो ॥
- छा. जम्बूद्वीपं कर्तुं छत्रं मन्दरं च तस्य दण्डम् ।  
प्रभुरन्यतर इन्द्र एष तेषां बलविशेषः ॥
- मू. (६६) एसा भवणवईणं भवणटिई वत्रिया समासेणं ।  
सुण वाणमंतरामं भवणवईआनुपुव्वीए ॥

- छा. एषा भवनपतीनां भवनस्थितिर्वर्णिता समासेन ।  
शृणु व्यन्तराणां भवनपत्यानुपूर्व्या ॥
- मू. (६७) पिसाय भूआ जक्खा य रक्खसा किन्नरा य किंपुरिसा ।  
महोरगा य गंधव्वा अट्टविहा वाणमंतरिया ॥
- छा. पिशाचा भूता यक्षाश्च राक्षसाः किन्नराश्च किंपुरुषाः ।  
महोरगाश्च गान्धर्वा अष्टविधा व्यन्तराः ॥
- मू. (६८) एए उ समासेणं कहिया भे वाणमंतरा देवा ।  
पत्तेयंपि य वुच्छं सोलस इंदे महिह्ठीए ॥
- छा. एते तु समासेन कथिता भवत्या व्यन्तरा देवाः ।  
प्रत्येकमपि च वक्ष्ये षोडशेन्द्रान् महर्धिकान् ॥
- मू. (६९) काले य महाकाले सुरुव पडिरुव पुत्रभद्दे य ।  
अमरवइ माणभद्दे भीमे य तथा महाभीमे ॥
- छा. कालश्च महाकालः सुरूपः प्रतिरूपः पूर्णभद्रश्च ।  
अमरतिमाणिभद्रो भीमश्च तथा महाभीमः ॥
- मू. (७०) किन्नरकिंपुरिसे खलु सप्पुरिसे खलु तथा महापुरिसे ।  
अइकायमहाकाए गीयरई चेव गीयजसे ॥
- छा. किन्नरः किंपुरुषः खलु सत्पुरुषः खलु तथा महापुरुषः ।  
अतिकायो महाकायो गीतरतिश्चैव गीतयशाः ॥
- मू. (७१) सत्रिहिए सामाणे धाइ विधाए विसी य इसिपाले ।  
इस्सर महिस्सरे या हवइ सुवच्छे विसाले य ॥
- छा. सत्रिहितः सामानो धाता विधाता ऋषि ऋषिपालः ।  
ईश्वरो महेश्वरश्च भवति सुवत्सो विशालश्च ॥
- मू. (७२) हासे हासरईविअ सेए अ तथा भवे महासेए ।  
पयए पययावईविय नेयव्वा आनुपुव्वीइ ॥
- छा. हासो हासरतिरपि च श्वेतश्च तथा भवति महाश्वेतः ।  
पतङ्गश्च पतङ्गपतिरपि च ज्ञातव्या आनुपूर्व्या ॥
- मू. (७३) उट्टमहे तिरियमि य वसहिं ओर्विति वंतरा देवा ।  
भवणा पुण्ह रयणप्पभाइ उवरिल्लए कंडे ॥
- छा. ऊर्ध्वमधस्तिरश्चि च वसतिमुपयन्ति व्यन्तरा देवाः ।  
भवनानि पुनरेषां रत्नप्रभाया उपरितने काण्डे ॥
- मू. (७४) इक्किक्कम्मि य जुयले नियमा भवणा वरा असंखिज्जा ।  
संखिज्जवित्थडा पुण नवरं एतत्थ नाणत्तं ॥
- छा. एकैकस्मिश्च युगले नियमाद्भवनानि वराण्यसङ्ख्येयानि ।  
सङ्ख्यातविस्तृतानि पुनः परमत्र नानात्वम् ॥



- मू. (७५) जंबुद्वीपसमा खलु उक्कोसेणं भवन्ति भवणवरा ।  
खुद्दा खित्तसमाविअ विदेहसमया य मज्झिमया ॥
- छा. जम्बूद्वीपसमानि खलु उत्कृष्टेन भवन्ति भवनवराणि ।  
क्षुल्लानि भरतक्षेत्रसमान्यपि च विदेहसमानि च मध्यमानि ॥
- मू. (७६) जहिं देवा वंतरिया वरतरुणीगीयवाइयरवेणं ।  
निच्चसुहिया पमुइया गयंपि कालं न याणंति ॥
- छा. यत्र देवा व्यन्तरा वरतरुणीगीतवादित्ररवेण ।  
नित्यसुखिताः प्रमुदिता गतमपि कालं न जानन्ति ॥
- मू. (७७) काले सुरुव पुण्णे भीमे तह किन्नरे य सप्पुरिसे ।  
अइकाए गीयरई अड्डेव य हुंति दाहिणओ ॥
- छा. कालः सुरूपः पूर्णो भीमस्तथा किन्नरश्च सत्पुरुषः ।  
अतिकायो गीतरति अष्टैव च भवन्ति दक्षिणस्याम् ॥
- मू. (७८) मणिकणगरयणथूभिअजंबूणयवेइयाइं भवणाइं ।  
एएसिं दाहिणओ सेसाणं उत्तरे पासे ॥
- छा. मणिकनकरत्नस्तूपिकानि जाम्बूनदवेदिकानि भवनानि ।  
एतेषां दक्षिणतः शेषाणामुत्तरे पार्श्वे ॥
- मू. (७९) दस वाससहस्साइं ठिई जहन्ना उ वंतरसुराणं ।  
पलिओवमं तु इक्कं ठिई उ उक्कोसिया तेसिं ॥
- छा. दश वर्षसहस्राणि जघन्या स्थितिस्तु व्यन्तरसुराणाम् ।  
पल्योपमं त्वेकं स्थितिस्तूक्कृष्टैषाम् ॥
- मू. (८०) एसा वंतरियाणं भवणठिई वन्निया समासेणं ।  
सुण जोइसालयाणं आवासविहिं सुरवराणं ॥
- छा. एषा व्यन्तराणां भवनस्थितिर्वर्णिता समासेन ।  
शृणु ज्योतिष्काणामावासविधिं सुरवराणाम् ॥
- मू. (८१) चंदा सूरा तारागणा य नक्खत्त गहगण समत्ता ।  
पंचविहा जोइसिया ठिई वियारी य ते गणिया ॥
- छा. चन्द्राः सूर्यास्तारकागणश्च नक्षत्राणि ग्रहगणः समस्ताः ।  
पञ्चविधा ज्योतिष्काः स्थितिमन्तो विचारिणश्च ते गणिताः ॥
- मू. (८२) अद्धकविट्ठगसंठाणसंठिया फालियामया रम्मा ।  
जोइसियाण विमाणा तिरियंलोए असंखिज्जा ॥
- छा. अर्द्धकपित्तसंस्थानसंस्थितानि स्फटिकमयानि रम्याणि ।  
ज्योतिष्काणां विमानानि तिर्यगलोकेऽसङ्ख्यातानि ॥
- मू. (८३) धरणियलाउ समाओ सत्तहिं नउएहिं जोयणसएहिं ।  
हिड्डिल्लो होइ तलो सूरु पुण अड्डहिं सएहिं ॥

- छा. समाद् धरणितलात्सप्तभिर्नवतैर्योजनशतैः ।  
अधस्तनं तलं भवति सूर्य पुनरष्टभिः शतैः ॥
- मू. (८४) अट्टसए आसीए चंदो तह चैव होइ उवरितले ।  
एगं दसुत्तरसयं बाहल्लं जोइसस्स भवे ॥
- छा. अष्टशत्यामशीत्यधिकायां चन्द्रस्तथैव भवत्युपरितले ।  
एकं दशोत्तरशतं बाहल्यं ज्योतिषो भवति ॥
- मू. (८५) एगट्ठिभाय काऊण जोअणं तस्स भागछप्पन्नं ।  
चंदपरिमंडलं खलु अडयाला होइ सूरस्स ॥
- छा. एकषष्टिभागंकृत्वा योजनं तस्य षट्पञ्चाशद्भागः ।  
चन्द्रपरिमण्डलं खलु अष्टचत्वारिंशद्भवति सूर्यस्य ॥
- मू. (८६) जहिं देवा जोइसिया वरतरुणीगीयवाइयरवेणं ।  
निच्चसुहिया पमुइया गयंपि कालं न याणंति ॥
- छा. यत्र देवा ज्योतिष्का वरतरुणीगीतवादित्ररवेण ।  
नित्यसुखिताः प्रमुदिताः गतमपि कालं न जानन्ति ॥
- मू. (८७) छप्पन्नं खलु भागा विच्छिन्नं चंदमंडलं होइ ।  
अडवीसं च कलाओ बाहल्लं तस्स बोद्धव्वं ॥
- छा. षट्पञ्चाशत् खलु भागा विस्तीर्णं चन्द्रमण्डलं भवति ।  
अष्टाविंशतिश्च भागा बाहल्यं तस्य बोद्धव्यम् ॥
- मू. (८८) अडयालीसं भागा विच्छिन्नं सूरमंडलं होइ ।  
चउवीसं च कलाओ बाहल्लं तस्स बोद्धव्वं ॥
- छा. अष्टचत्वारिंशद्भागो विस्तीर्णं सूर्यमण्डलं भवति ।  
चतुर्विंशतिश्च भागा बाहल्यं तस्य बोद्धव्यम् ॥
- मू. (८९) अद्धजोअणिया उ गहा तस्सद्धं चैव होइ नक्खत्ता ।  
नक्खत्तद्धे तारा तस्सद्धं चैव बाहल्लं ॥
- छा. अर्द्धयोजनास्तु ग्रहास्तस्यार्द्धमेव भवति नक्षत्राणाम् ।  
नक्षत्रार्द्धं तारकास्तदर्द्धमेव बाहल्यम् ॥
- मू. (९०) जोअणमद्धं ततो गाऊअं पंचधनुसया हुंति ।  
गहनक्खत्तगणार्णं तारविमाण्ण विक्खंभो ॥
- छा. योजनमर्द्धं ततो गव्यूतं पञ्च धनुःशतानि च भवन्ति ।  
ग्रहनक्षत्रगणानां ताराविमानानां विष्कम्भः ॥
- मू. (९१) जो जस्सा विक्खंभो तस्सद्धं चैव होइ बाहल्लं ।  
तं विउणं सविसेसं परिरओ होइ बोद्धव्वो ॥
- छा. यो यस्य विष्कम्भस्तस्य तदर्द्धमेव भवति बाहल्यम् ।  
सविशेषस्त्रिगुणः परिरयो भवति बोद्धव्यः ॥

- मू. (९२) सोलस चैव सहस्सा अद्दु य चउरो य दुत्रि य सहस्सा ।  
जोइसिआण विमाणा वहंति देवाभिउगाओ ॥
- छा. षोडशैव सहस्राणि अष्टौ च चत्वारि च द्वे च सहस्र ।  
ज्योतिष्काणां विमानानि आभियोगिका देवा वहन्ति ॥
- मू. (९३) पुरओ वहंति सीहा दाहिणओ कुंजरा महाकाया ।  
पच्चत्थिमेण वसहा तुरगा पुण उत्तरे पासे ॥
- छा. पुरतो वहन्ति सिंहा दक्षिणतः कुञ्जरा महाकायाः ।  
पश्चिमायां वृषभास्तुरगाः पुनरुत्तरे पाश्वे ॥
- मू. (९४) चंदेहि उ सिग्घयरा सूरुा सूरुहिं तह गहा सिग्घा ।  
नक्खत्ता उ गहेहि य नक्खत्तेहिं तु ताराओ ॥
- छा. चन्द्रेभ्यस्तु शीघ्रतराः सूर्या सूर्येभ्यस्तथा ग्रहाः शीघ्राः ।  
नक्षत्राणि तु ग्रहेभ्यश्च नक्षत्रेभ्यस्तु तारकाः ॥
- मू. (९५) सव्वप्पगई चंदा तारा पुण हुंति सव्वसिग्घगई ।  
एसो गईविसेसो जोइसियाणं तु देवाणं ॥
- छा. सर्वालपगतयश्चन्द्रास्तारकाः पुनर्भवन्ति सर्वशीघ्रगतयः ।  
एष गतिविशेषो ज्योतिष्काणां तु देवानाम् ॥
- मू. (९६) अप्पिड्डियाओ तारा नक्खत्ता खलु तओ महिड्डियए ।  
नक्खत्तेहिं तु गहा गहेहिं सूरुा तओ चंदा ॥
- छा. अल्पर्द्धिकास्तारका नक्षत्राणि खलु ततो महर्द्धिकतराणि ।  
नक्षत्रेभ्यस्तु ग्रहा ग्रहेभ्यः सूर्यास्तेभ्यः चन्द्राः ॥
- मू. (९७) सव्वब्भितरऽभीई मूलो पुण सव्वबाहिरो भमइ ।  
सव्वोवरिं च साई भरणी पुण सव्वहिड्डिमिया ॥
- छा. सर्वाभ्यन्तरेऽभिजिन्मूलः पुनः सर्वाबाहो भ्राम्यति ।  
सर्वोपरिश्चाच्च स्वातिर्भरणि पुनः सर्वाधस्तात् ॥
- मू. (९८) साहा गहनक्खत्ता मज्झेगा हुंति चंदसूराणं ।  
हिड्डा समं च उप्पिं ताराओ चंदसूराणं ॥
- छा. शाखा ग्रहनक्षत्राणि चन्द्रसूर्ययोः काश्चिन्मध्ये ।  
अधः सममुपरि च तारकाश्चन्द्रसूर्ययोः ॥
- मू. (९९) पंचेव धनुसयाइं जहन्नयं अंतरं तु ताराणं ।  
दो चैव गाउआइं निव्वाघाएण उक्कोसं ॥
- छा. पञ्चैव धनुःशतानि जघन्यमन्तरं तु तारकाणाम् ।  
द्वे एव गव्यूते निव्याघतिनोत्कृष्टम् ॥
- मू. (१००) दोत्रि सए छावड्ढे जहन्नयं अंतरं तु ताराणं ।  
बारस चैव सहस्सा दो बायाला य उक्कोसा ॥

- छा. द्वे शते षट्षष्ट्यधिके जघन्यमन्तरं तु तारकयोः ।  
द्वादश चैव सहस्राणि द्वे शते द्विचत्वारिंशच्चोत्कृष्टतः ॥
- मू. (१०१) एयस्स चंदजोगो सत्तद्धिं खंडिओ अहोरत्तो ।  
ते हुंति नव मुहुत्ता सत्तावीसं कलाओ अ ॥
- छा. एतैश्चन्द्रयोगः सप्तषष्टिखण्डितोऽहोरात्रः ।  
ते भवन्ति नव मुहूर्ताः सप्तविंशतिश्च भागाः (अभिजिति) ॥
- मू. (१०२) सयभिसया भरणीओ अद्दा अस्सेस साइ जिद्धा य ।  
एए छन्नक्खत्ता पन्नरसमुहुत्तसंजोगा ॥
- छा. शतभिषग् भरणी आर्द्राऽश्लेषा स्वातिर्ज्येष्ठा च ।  
एतानि षण्णक्षत्राणि पञ्चदशमुहूर्तसंयोगानि ॥
- मू. (१०३) तिन्नेव उत्तराईं पुनव्वसू रोहिणी विसाहा य ।  
एए छन्नक्खत्ता पणयालमुहुत्तसंजोगा ॥
- छा. त्रीण्येवोत्तराणि पुनर्वसू रोहिणी विशाखा च ।  
एतानि षण्णक्षत्राणि पञ्चचत्वारिंशन्मुहूर्तसंयोगानि ॥
- मू. (१०४) अवसेसा नक्खत्ता पन्नरसया हुंति तीसइमुहुत्ता ।  
चंदंमि एस जोगो नक्खत्ताणं मुण्येव्वो ॥
- छा. अवशेषाणि नक्षत्राणि पञ्चदश त्रिंशन्मुहूर्तसंयोगानि ।  
चन्द्रे एष योगो नक्षत्राणां ज्ञातव्यः ॥
- मू. (१०५) अभिई छच्च मुहुत्ते चत्तारि अ केवले अहोरत्ते ।  
सूरेण समं वच्चइ इत्तो सेसाण वुच्छामि ॥
- छा. अभिजित् षट् च मुहूर्तान् चतुरश्र केवलानहोरात्रान् ।  
सूर्येण समं व्रजति अतः शेषाणां वक्ष्ये ॥
- मू. (१०६) सयभिसया भरणीओ अद्दा अस्सेस साइ जिद्धा य ।  
वच्चंति छऽहोरत्ते इक्खवीसं मुहुत्ते य ॥
- छा. शतभिषग् भरणी आर्द्राऽश्लेषा स्वातिर्ज्येष्ठा ।  
व्रजन्ति षडहोरात्रान् एकविंशतिं मुहूर्तान् ॥
- मू. (१०७) तिन्नेव उत्तराईं पुनव्वसू रोहिणी विसाहा य ।  
वच्चंति मुहुत्ते तिन्नि चेव वीसव्वऽहोरत्ते ॥
- छा. त्रीण्येवोत्तराणि पुनर्वसू रोहिणी विशाखा च ।  
व्रजन्ति त्रीण्येव मुहूर्तान् विंशतिं चाहोरात्रान् ॥
- मू. (१०८) अवसेसा नक्खत्ता पन्नरसवि सूरसहगया जंति ।  
बारस चेव मुहुत्ते तेरस य समे अहोरत्ते ॥
- छा. अवशेषाणि नक्षत्राणि पञ्चदशाऽपि सूर्यसहगतानि यान्ति ।  
द्वादशैव मुहूर्तान् त्रयोदश च समानहोरात्रान् ॥

- मू. (१०९) दो चंदा दो सूर्या नक्खत्ता खलु हवंति छप्पन्ना ।  
छावत्तरं गहसयं जंबुद्वीवे विचारीणं ॥
- छा. द्वौ चन्द्रौ द्वौ सूर्यौ नक्षत्राणि खलु भवन्ति षट्पञ्चाशत् ।  
षट्सप्तत्यधिकं ग्रहशतं जम्बूद्वीपे विचारि ॥
- मू. (११०) इक्कं च सयसहस्सं तितीसं खलु भवे सहस्साइं ।  
नव य सया पन्नासा तारागणकोडिकोडीणं ॥
- छा. एकं च शतसहस्रं त्रयस्त्रिंशत्खलु भवन्ति सहस्राणि ।  
नव च शतानि पञ्चाशच्च तारागणकोटीकोटयः ॥
- मू. (१११) चत्तारि चेव चंदा चत्तारि य सूरिया लवणजले ।  
बारं नक्खत्तसयं गहाण तिन्नेव बावन्ना ॥
- छा. चत्वार एव चन्द्राश्चत्वारश्च सूर्या लवणजले ।  
द्वादशं नक्षत्रशतं ग्रहाणां द्वापञ्चाशदधिकानि त्रीणि शतानि ॥
- मू. (११२) दो चेव सयसहस्सा सत्तड्ढिं खलु भवे सहस्साइं ।  
नव य सया लवणजले तारागणकोडिकोडीणं ॥
- छा. द्वे एव शतसहस्रै समषष्टिश्च खलु भवन्ति सहस्राणि ।  
नव च शतानि लवणजले तारकगणकोटीकोटीनाम् ॥
- मू. (११३) चउवीसं ससिरविणो नक्खत्तसया य तिन्नि छत्तीसा ।  
इक्कं च गहसहस्सं छप्पन्नं धायईसंडे ॥
- छा. चतुर्विंशति शशिनो रवयश्च नक्षत्रशतानि च त्रीणि षट्त्रिंशानि ।  
एकं च ग्रहसहस्रं षट्पञ्चाशं धातकीखण्डे ॥
- मू. (११४) अट्टेव सयसहस्सा तिन्नि सहस्सा य सत्त य सया उ ।  
धायईसंडे दीवे तारागणकोडिकोडीणं ॥
- छा. अष्टैव शतसहस्राणि त्रीणि सहस्राणि सप्त च शतानि ।  
धातकीखण्डे तारगणकोटीकोटीनाम् ॥
- मू. (११५) बायालीसं चंदा बायालीसं च दिनयरा दित्ता ।  
कालोदहिंमि एए चरंति संबद्धलेसाया ॥
- छा. द्विचत्वारिंशच्च दिनकरा दीप्ताः ।  
कालोदधावेते चरन्ति संबद्धलेश्याकाः ॥
- मू. (११६) नक्खत्तमिगसहस्सं एगमेव छावत्तरिं च सयमन्नं ।  
छच्च सया छन्नउआ महग्गहाण तिन्नि य सहस्सा ॥
- छा. नक्षत्राणामेक सहस्रं षट्सप्ततं शतमेकमन्यच्च ।  
षट् च शतानि षण्णवतानि महाग्रहाणां त्रीणि च सहस्राणि ॥
- मू. (११७) अट्टावीसं कालोदहिंमि बारस य सहस्साइं ।  
नव य सया पन्नासा तारागणकोडिकोडीणं ॥

- छा. अष्टाविंशतिर्लक्षाः कालोदधीं द्वादश च सहस्राणि ।  
नव च शतानि पञ्चाशच्च तारागणकोटीकोटीनाम् ॥
- मू. (११८) चोयालं चंदसयं चोयालं चैव सूरियाण सयं ।  
पुक्खवरम्मि एए चरंति संबद्धलेसाया ॥
- छा. चतुश्चत्वारिंशं चन्द्रशतं चतुश्चत्वारिशमेव सूर्याणां शतम् ।  
पुष्करवरे एते चरन्ति संबद्धलेश्याकाः ॥
- मू. (११९) चत्तारिं च सहस्सा वत्तीसं चैव हुंति नक्खत्ता ।  
छच्च सया बावत्तर महग्गहा बारस सहस्सा ॥
- छा. चत्वारि च सहस्राणि द्वात्रिंशान्येव भवन्ति नक्षत्राणि ।  
षट् च शतानि द्वासप्ततानि महाग्रहा द्वादश सहस्राणि ॥
- मू. (१२०) छन्नउइ सयसहस्सा चोयालीसं भवे सहस्साइं ।  
चत्तारी य सयाइं तारागणकोडिकोडीणं ॥
- छा. षण्णवति शतसहस्राणि चतुश्चत्वारिंशच्च भवन्ति शतसहस्राणि ।  
चत्वारि च शतानि तारागणकोटीकोटीनाम् ॥
- मू. (१२१) बावत्तरिं च चंदा बावत्तरिमेव दिनयरा दित्ता ।  
पुक्खवरदीवह्णे चरंति एए पयासिंता ॥
- छा. द्वासप्ततिश्च चन्द्रा द्वासप्ततिरेव दिनकरा दीप्ताः ।  
पुष्करवरद्वीपार्द्धे चरन्त्येते प्रकाशयन्तः ॥
- मू. (१२२) तिन्नि सया छत्तीसा छच्च सहस्सा महग्गहाणं तु ।  
नक्खत्ताणं तु भवे सोलाणि दुवे सहस्साणि ॥
- छा. त्रीणि शतानि षट्त्रिंशानि षट् च सहस्राणि तु महाग्रहाणाम् ।  
नक्षत्राणां तु भवतः षोडशे द्वे सहस्रै ॥
- मू. (१२३) अडयालीसं लक्खा बावीसं खलु भवे सहस्साइं ।  
दो अ सय पुक्खरद्धे तारागणकोडिकोडीणं ॥
- छा. अष्टचत्वारिंशल्लक्षा द्वाविंशतिश्च खलु भवन्ति सहस्राणि ।  
द्वे च शते पुष्करार्द्धे तारकगणकोटीकोटीनाम् ॥
- मू. (१२४) बत्तीसं चंदसयं बत्तीसं चैव सूरियाण सयं ।  
सयलं मणुस्सलोयं चरंति एए पयासिंता ॥
- छा. द्वात्रिंशं चन्द्रशतं द्वात्रिंशमेव सूर्याणां शतम् ।  
सकलं मनुष्यलोकं चरत्येतत् प्रकाशयत् ॥
- मू. (१२५) इक्कारस य सहस्सा छप्पिय सोला महग्गहसया उ ।  
छच्च सया छन्नउआ नक्खत्ता तिन्नि य सहस्सा ॥
- छा. एकादश च सहस्राणि षोडशाधिकानि षट्शतानि महाग्रहाः ।  
षट्शतानि षण्णवतानि नक्षत्राणि त्रीणि च सहस्राणि ॥

- मू. (१२६) अट्टासीइ चत्ताइं सयसहस्साइं मणुयलोगम्मि ।  
सत्त य सयामणूणा तारागणकोडिकोडीणं ॥
- छा. चत्वारिंशत्सहस्राधिकानि अष्टाशीति शतसहस्राणि ।  
मनुजलोके सप्त च शतानि अन्यूनानि तारागणकोटीकोटीनाम् ॥
- मू. (१२७) एसो तारापिंडो सच्चसमासेण मणुयलोगम्मि ।  
बहिया पुण ताराओ जिणेहिं भणिया असंखिज्जा ॥
- छा. एष तारापिण्डः सर्वसमासेन मनुजलोके ।  
बहिस्तात्पुनस्तारका जिनेर्भणिता असङ्ख्येयाः ॥
- मू. (१२८) एवइयं तारगं जं भणियं मणुयलोग(मज्झ)म्मि ।  
चारं कलंबुयापुप्फसंठियं जोइसं चरइ ॥
- छा. एतावतताराग्रं यद्भणितं मनुजलोकमध्ये ।  
कदम्बकपुष्पसंस्थितं ज्योतिश्चारं चरति ॥
- मू. (१२९) रविससिगहनक्खत्ता एवइआ आहिया मणुयलोए ।  
जेसिं नामागोयं न पागया पन्नवेइंति ॥
- छा. रविशशिग्रहनक्षत्राण्येतावन्याख्यातानि मनुजलोके ।  
येषां नामगोत्रं न प्राकृताः प्रज्ञापयन्ति ॥
- मू. (१३०) छावट्ठिं पिडयाइं चंदाइच्चाण मणुयलोगम्मि ।  
दो चंदा दो सूरा य हुंति इक्किक्कए पिडये ॥
- छा. षट्षष्टिः पिटकानि चन्द्रादित्ययोर्मनुजलोके ।  
द्वौ चन्द्रौ द्वौ सूर्यौ च भवन्त्येकैकस्मिन् पिटके ॥
- मू. (१३१) छावट्ठिं पिडयाइं नक्खत्ताणं तु मणुयलोगम्मि ।  
छप्पन्नं नक्खत्ता य हुंति इक्किक्कए पिडए ॥
- छा. षट्षष्टिः पिटकानि नक्षत्राणां तु मनुजलोके ।  
षट्षष्ट्याशन्नक्षत्राणि च भवन्त्येकैकस्मिन् पिटके ॥
- मू. (१३२) छावट्ठिं पिडयाणं महग्गहाणं तु मणुयलोगम्मि ।  
छावत्तरं गहसयं च होइ इक्किक्कए पिडए ॥
- छा. षट्षष्टिः पिटकानि महाग्रहाणां तु मनुजलोके ।  
षट्षसप्तत्यधिकं ग्रहशतं च भवत्येकैकस्मिन् पिटके ॥
- मू. (१३३) चत्तारि य पंतीओ चंदाइच्चाण मणुयलोगम्मि ।  
छावट्ठिं छावट्ठिं होइ इक्किक्कया पंती ॥
- छा. चतस्रश्च पङ्क्त्यश्चन्द्रादित्यानां मनुजलोके ।  
षट्षष्टिः षट्षष्टिर्भवन्त्येकैकस्यां पङ्क्तौ ॥
- मू. (१३४) छावट्ठिं पिडयाणं नक्खत्ताणं तु मणुयलोगम्मि ।  
छावट्ठिं छावट्ठिं च होइ इक्किक्कया पंती ॥

- छा. षट्पञ्चाशत् पङ्क्त्यो नक्षत्राणां तु मनुजलोके ।  
षट्षष्टिः २ भवन्त्येकैकस्यां पङ्क्तौ ॥
- मू. (१३५) छावत्तरं गहाणं पतिसयं होइ मणुय लोगमि ।  
छावट्टिं छावट्टिं च होइ इक्किक्कया पंती ॥
- छा. षट्सप्ततं ग्रहाणां पङ्क्तशतं भवति मनुजलोके ।  
षट्षष्टिः २ भवन्त्येकैकस्यां पङ्क्तौ ॥
- मू. (१३६) ते मेरुमाणुसुत्तर पयाहिणावत्तमंडला सव्वे ।  
अणवट्टिएहिं जोएहिं चंदा सूरा गहगणा य ॥
- छा. ते मेरुमानुषोत्तरयोः प्रदक्षिणावर्तमण्डलाः सर्वे ।  
अनवस्थितैर्योगैश्चन्द्राः सूर्या ग्रहगणाश्च ॥
- मू. (१३७) नक्खत्ततारयाणं अवट्टिया मंडला मुणेयव्वा ।  
तेवि य पयाहिणावत्तमेव मेरुं अनुचरंति ॥
- छा. नक्षत्रतारकाणामवस्थितानि मण्डलानि ज्ञातव्यानि ।  
तेऽपि च प्रदक्षिणावर्तमेव मेरुमनुचरन्ति ॥
- मू. (१३८) रयणियरदिनयराणं उट्टमहे एव संकमो नत्थि ।  
मंडलसंकमणं पुण अत्थिंतरबाहिरं तिरियं ॥
- छा. रजनीकरदिनकराणामूर्द्धमधश्च सङ्क्रमो नास्ति ।  
मण्डलसङ्क्रमणं पुनरभ्यन्तरबाह्येषु तिरिश्चि ॥
- मू. (१३९) रयणियरदिनयराणं नक्खत्ताणं च महग्गहाणं च ।  
चारविसैसेण भवे सुहदुक्खविही मणुस्साणं ॥
- छा. रजनीकदिनकराणां नक्षत्राणां महाग्रहाणां च ।  
चारविशेषेण भवति सुखदुःखविधिर्मनुष्याणाम् ॥
- मू. (१४०) तेसिं पविसंताणं तावक्खित्ते उ वट्टए नियमा ।  
तेणेव कमेण पुणो परिहायइ निक्खमिन्ताणं ॥
- छा. तेषु प्रविशत्सु तापक्षेत्रं तु वर्द्धते नियमात् ।  
तेनैव क्रमेण पुनः परिहीयते निष्क्रामत्सु ॥
- मू. (१४१) तेसिं कलंबुयापुप्फसंठिया हुंति तावक्खित्तमुहा ।  
अंतो अ संकुला बाहिं च वित्थडा चंदसूराणं ॥
- छा. तेषां कदम्बकपुष्पसंस्थितानि भवन्ति तापक्षेत्रमुखानि ।  
अन्तश्च सङ्कटानि विहिश्च विस्तृतानि चन्द्रसूर्याणाम् ॥
- मू. (१४२) केणं वट्टइ चंदो ? परिहाणी केण होइ चंदस्स ? ।  
कालो वा जुण्हा वा केणऽनुभावेण चंदस्स ॥
- छा. केन चन्द्रो वर्द्धते ? परिहाणि केन भवति चन्द्रस्य ।  
कालिमा वा ज्योत्स्ना वा केनानुभावेन चन्द्रस्य ॥



- मू. (१४३) किण्हं राहुविमाणं निच्चं चंदेण होइ अविरहियं ।  
चउरगुलमप्पत्तं हिड्डा चंदस्स तं चरइ ॥
- छा. कृष्णं राहुविमानं नित्यं चन्द्रेण भवत्यविरहितम् ।  
चतुरङ्गुलान्यप्राप्तमधस्ताच्चन्द्रस्य तच्चरति ॥
- मू. (१४४) छावट्ठिं छावट्ठिं दिवसे दिवसे उ सुक्क पक्खस्स ।  
जं परिवट्ठइ चंदो खवेइ तं चेव कालेणं ॥
- छा. षट्षष्टिं षट्षष्टिं (भागं) दिवसे दिवसे तु शुक्लपक्षस्य ।  
यत्परिवर्द्धयति चन्द्रं क्षपयति तावन्तमेव कृष्णस्य ॥
- मू. (१४५) पन्नरसइ भागेण य चंदं पन्नरसमेव चंकमइ ।  
पन्नरसइभागेण य पुणोवि तं चेव पक्कमइ ॥
- छा. पञ्चदशभागेन च चन्द्रस्य पञ्चदशभागमेवाक्रामति ।  
पञ्चदशभागेन च पुनरपि तत एव प्रक्राम्यति ॥
- मू. (१४६) एवं वट्ठइ चंदो परिहाणी एव होइ चंदस्स ।  
कालो वा जुण्हा वा तेण य (ऽणु) भावेण चंदस्स ॥
- छा. एवं वर्द्धते चन्द्रः परिहाणिरिव भवति चन्द्रस्य ।  
कालिमा वा ज्योत्स्ना वा तेन च भावेन चन्द्रस्य ॥
- मू. (१४७) अंतो मणुस्सखेत्ते हवंति चारोवगा य उववण्णा ।  
पंचविहा जोइसिया चंदा सूरा गहगणा य ॥
- छा. अन्तर्मनुष्यक्षेत्रे भवन्ति चारोपगाश्चो (श्चारो) पपन्नाः ।  
पंचविधा ज्योतिषिकाः, चंद्राः सूर्या ग्रहगणाश्च ॥
- मू. (१४८) तेण परं जे सेसा चंदाइच्च गहतारनक्खत्ता ।  
नत्थि गई नवि चारो उवड्डिया ते मुणेयच्चा ॥
- छा. ततः परं ये शेषाश्चन्द्रादितया ग्रहास्तारका नक्षत्राणि ।  
नास्ति गतिर्नैव चारः अवस्थितास्ते ज्ञातव्याः ॥
- मू. (१४९) दो चंदा इह दीवे चत्तारि य सागरे लवणतोए ।  
धायइसंडे दीवे बारस चंदा य सूरा य ॥
- छा. द्वी चन्द्राविह द्वीपे चत्वारश्च सागरे लवणतोये ।  
धातकीखण्डे द्वीपे द्वादश चन्द्राश्च सूर्याश्च ॥
- मू. (१५०) एगे जंबुद्वीवे दुगुणा लवणे चउग्गुणा हुंति ।  
कालोयए तिगुणिया ससिसूरा धायइसंडे ॥
- छा. एको जम्बूद्वीपे द्विगुणा लवणे चतुर्गुणा भवन्ति ।  
कालोदे त्रिगुणिताः शशिसूर्या धातकीखण्डे ॥
- मू. (१५१) धायइसंडप्पभिई उद्विड्डा तिगुणिया भवे चंदा ।  
आइल्लचंदसहिया अनंतरानंतरे खित्ते ॥

- छा. धातकीखण्डात् प्रभृति उद्दिष्टास्त्रिगुणिता भवेयुश्चन्द्राः ।  
आदिमचन्द्रसहिता अनन्तरानन्तरे क्षेत्रे ॥
- मू. (१५२) रिक्खग्गहतारग्गा दीवसमुद्वाण इच्छसे नाउं ।  
तस्स ससीहि उ गुणियं रिक्खग्गहतारयग्गं तु ॥
- छा. ऋक्षग्रहतारकाग्राणि द्वीपसमुद्रयोरिच्छसि ज्ञातुं ।  
तस्य शशिभिर्गुणितं ऋक्षग्रहतारकाग्रं तु ॥
- मू. (१५३) बहिया उ माणुसनगस्स चंदसूराणऽवड्डिया जोगा ।  
चंदा अभीइजुत्ता सूरा पुण हुंति पुस्सेहिं ॥
- छा. बहि पुनर्मानुषोत्तरनगात् चन्द्रसूर्ययोरवस्थिता योगः ।  
चन्द्रा अभिजिता युक्ताः सूर्या पुनर्भवन्ति पुष्यैः ॥
- मू. (१५४) चंदाओ सूरस्स य सूरा ससिणो य अंतरं होइ ।  
पन्नाससहस्साइं जोयणाणं अणुणाइं ॥
- छा. चन्द्रात् सूर्यस्य सूर्यात् शशिनश्चान्तरं भवति ।  
पंचाशत् सहस्राणि योजनानामनूनानि ॥
- मू. (१५५) सूरस्स य सूरस्स य ससिणो ससिणो य अंतरं होइ ।  
बहिया उ माणुसनगस्स जोअणाणं सयसहस्सं ॥
- छा. सूर्यस्य सूर्यस्य च शशिनः शशिनश्चान्तरं भवति ।  
बहिस्तात् मानुषनगात् योजनानां शतसहस्रं ॥
- मू. (१५६) सूरंतरिया चदा चंदंतरिया उ दिनयरा दिता ।  
चित्तंतरलेसागा सुहलेसा मंदलेसा य ॥
- छा. सूर्यान्तरिताश्चन्द्राः चन्द्रान्तरिताश्च दिनकरा दीप्ताः ।  
चित्रान्तरलेश्याकाः शुभलेश्या मन्दलेश्याश्च ॥
- मू. (१५७) अट्टासीयं च गहा अट्टावीसं च हुंति नक्खत्ता ।  
एगससीपरिवारो एत्तो ताराण वुच्छामि ॥
- छा. अष्टाशीतिश्च ग्रहाः अष्टाविंशतिश्च भवन्ति नक्षत्राणि ।  
एकशशिपरीवारः इतस्तारकाणां वक्ष्ये ॥
- मू. (१५८) छावड्डि सहस्साइं नव चेव सयाइं पंचसयराइं ।  
एगससी परिवारो ताराणकोडिकोडीणं ॥
- छा. षट्षष्टिः सहस्राणि नव चैव शतानि पंचसप्तानि ।  
एकशशिपरीवारस्तारकगणकोटीकोटीनां ॥
- मू. (१५९) वाससहस्सं पलिओवमं च सूराण सा ठिई भणिया ।  
पलिओवम चंदाणं वाससयसहस्समब्बहियं ॥
- छा. वर्षसहस्रं पल्योपमं च सूर्याणां सा स्थितिर्भणिता ।  
पल्योपमं चन्द्राणां वर्षशतसहस्राभ्यधिकम् ॥

- मू. (१६०) पलिओवमं गहाणं नक्खत्ताणं व जाण पलियद्धं ।  
पलियचउत्थो भाओ ताराणवि सा ठिई भणिया ॥
- छा. पल्योपमं ग्रहाणां नक्षत्राणां च जानीहि पल्योपमार्थं ।  
पल्यचतुर्थो भागस्तारकाणां सा स्थितिर्भणिता ॥
- मू. (१६१) पलिओवमद्वभागो ठिई जहन्ना उ जोइसगणस्स ।  
पलिओवममुक्कोसं वाससयसहस्समब्भहियं ॥
- छा. पल्योपमाष्टभागः स्थितिर्जघन्या तु ज्योतिष्कगणस्य ।  
पल्योपममुक्कृष्टं वर्षशतसहस्राभ्यधिकं ॥
- मू. (१६२) भवणवइवाणवंतरजोइसवासी ठिई मए कहिया ।  
कप्पवईवि य वुच्छं बारस इंदे महिद्धीए ॥
- छा. भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्कवासिनां स्थितिर्मया कथिता ।  
कल्पपतीनपि वक्ष्ये द्वादशेन्द्रान् महर्द्धिकान् ॥
- मू. (१६३) पढमो सोहम्मवई ईसाणवई उ भन्नए बीओ ।  
तत्तो सणंकुमारो हवइ चउत्थो उ माहिंदो ॥
- छा. प्रथमः सौधर्मपतिरीशानपतिस्तु भण्यते द्वितीयः ।  
ततः सनत्कुमारो भवति चतुर्थस्तु माहेन्द्रः ॥
- मू. (१६४) पंचमए पुण बंभो छट्ठो पुण लंतओऽत्थ देविंदो ।  
सत्तमओ महसुक्को अट्टमओ भवे सहस्सरो ॥
- छा. पंचमकः पुनर्ब्रह्मा षष्ठः पुनर्लान्तकोऽत्र देवेन्द्रः ।  
सप्तमस्तु महाशुक्कोऽष्टमो भवेत्सहस्रारः ॥
- मू. (१६५) नवमो अ आणइंदो दसमो उण पाणउऽत्थ देविंदो ।  
आरण इक्कारसमो बारसमो अच्चुए इंदो ॥
- छा. नवमश्चानतेन्द्रो दशमः पुनः पसणतोऽत्तु देवेन्द्रः ।  
आरण एकादशो द्वादशोऽच्च्युत्तु इन्द्रः ॥
- मू. (१६६) एए बारस इंदा कप्पवई कप्पसामिया भणिया ।  
आणाईसरियं वा तेण परं नत्थि देवाणं ॥
- छा. एते द्वादश इन्द्राः कल्पपतयः कल्पस्वामिनो भणिताः ।  
आज्ञा ऐश्वर्यं वा ततः परं नास्ति देवानां ॥
- मू. (१६७) तेण परं देवगणा सयइच्छियभावणाइ उववन्ना ।  
गेविज्जेहिं न सक्को उववाओ अन्नलिंगेणं ॥
- छा. ततः परं देवगणाः स्वकेप्सितभावनायामुत्पन्नाः ।  
त्रैवेयकेषु न शक्योऽन्यलिंगेनोपपातः ॥

- मू. (१६८) जे दंसणवावत्रा लिंगग्रहणं करंति सामण्ये ।  
तेसिंपिय उववाओ उक्कोसो जाव गेविजा ॥
- छा. ये व्यापन्नदर्शना लिंगग्रहणं कुर्वन्ति श्रामण्ये ।  
तेषामपि चोपपात उत्कृष्टो यावद् श्रैवेयके ॥
- मू. (१६९) इत्थ किर विमाणाणं बत्तीसं वण्णिया सयसहस्सा ।  
सोहम्मकप्पवइणो सक्कस्स महानुभागस्स ॥
- छा. अत्र किल विमानानां द्वात्रिंशद्वर्णितानि शतसहस्राणि ।  
सौधर्मकल्पपतेः शक्रस्य महानुभागस्य ॥
- मू. (१७०) ईसाणकप्पवइणो अट्ठावीसं भवे सयसहस्सा ।  
बारस्स सयसहस्सा कप्पम्मि सणंकुमारम्मि ॥
- छा. ईशानकल्पपतेरष्टाविंशतिर्भवन्ति शतसहस्राणि ।  
द्वादश शतसहस्राणि कल्पे सनत्कुमारे ॥
- मू. (१७१) अट्ठेव सयसहस्सा माहिंदंमि उ भवंति कप्पम्मि ।  
चत्तारि सयसहस्सा कप्पम्मि उ बंभलोगम्मि ॥
- छा. अष्टैव शतसहस्राणि माहेन्द्रे तु भवन्ति कल्पे ।  
चत्वारि शतसहस्राणि कल्पे तु ब्रह्मलोके ॥
- मू. (१७२) इत्थ किर विमाणाणं पन्नासं लंतए सहस्साइं ।  
चत्तारि महासुकुं छच्च सहस्सा सहस्सारे ॥
- छा. अत्र किल विमानानां पंचाशत् लान्तके सहस्राणि ।  
चत्वारिंशत् महाशुक्रे षट् च सहस्राणि सहस्रारे ॥
- मू. (१७३) आणयपाणयकप्पे चत्तारि सया ऽऽरण्णुए तिन्नि ।  
सत्त विमाणसयाइं वउसुवि एएसु कप्पेसु ॥
- छा. आनतप्राणतकल्पयोश्चत्वारि शतानि आरणाच्युतयोस्त्रीणि ।  
सप्तविमानशतानि चतुर्ष्वपि एतेषु कल्पेषु ॥
- मू. (१७४) एयाइ विमाणाइं कहियाइं जाइं जत्थ कप्पम्मि ।  
कप्पवईणवि सुंदरि ! ठिईविसेसे निसामेहि ॥
- छा. एतानि विमानानि कथितानि यानि यत्र कल्पे ।  
कल्पपतीनामपि सुन्दरि ! स्थितिविशेषान् निशमय ॥
- मू. (१७५) दो सागरोवमाइं सक्कस्स ठिई महानुभागस्स ।  
साहीया ईसाणे सत्तेव सणंकुमारम्मि ॥
- छा. द्वे सागरोपमे शक्रस्य स्थितिर्महानुभागस्य ।  
साधिके ईशाने सप्तैव सनत्कुमारे ॥
- मू. (१७६) माहिंदं साहियाइं सत्त दस वेव बंभलोगम्मि ।  
चउदस लंतइ कप्पे सत्तरस भवे महासुकुं ॥

- छा. माहेन्द्रे साधिकानि सप्त दशैव ब्रह्मलोके ।  
चतुर्दश लान्तके कल्पे सप्तदश भवन्ति महाशुक्रे ॥
- मू. (१७७) कप्पम्मि सहस्रारे अट्टारस सागरोवमाइं ठिई ।  
एग्गूणाऽऽणयकप्पे वीसा पुण पाणए कप्पे ॥
- छा. कल्पे सहस्रारे अष्टदश सागरोपमाणि स्थिति ।  
एकोनविंशतिरानतकल्पे विंशति पुनः प्राणतकल्पे ॥
- मू. (१७८) पुण्णा य इक्कवीसा उदहिसनामाण आरणे कप्पे ।  
अह अट्टयम्मि कप्पे बावीसं सागराण ठिई ॥
- छा. पूर्णा एकविंशति उदधिसनाम्नां आरणे कल्पे ।  
अथाच्युते कल्पे द्वाविंशति सागरोपमाणां स्थिति ॥
- मू. (१७९) एसा कप्पवईणं कप्पठिई वण्णिया समासेणं ।  
गेविज्जऽनुत्तराणं सुण अनुभागं विमाणाणं ॥
- छा. एषा कल्पपतीनां कल्पस्थितिर्वर्णिता समासेन ।  
त्रैवेयकानुत्तराणां श्रु णु अनुभागं विमानानां ॥
- मू. (१८०) तिन्नेव य गेविज्जा हिट्ठिज्जा मज्झिमा य उवरिज्जा ।  
इक्किक्कपि य तिविहं नव एवं हुंति गेविज्जा ॥
- छा. त्रीण्येव त्रैवेयकाणि अधस्तनानि मध्यमान्युपरितनानि च ।  
एकैकस्मिंश्च त्रिविधानि नवैवं भवन्ति त्रैवेयकाणि ॥
- मू. (१८१) सुदंसणा अमोहा य, सुप्पबुद्धा जसोधरा ।  
वच्छा सुवच्छा सुमणा, सोमनसा पियदंसणा ॥
- छा. सुदर्शनः अमोधः सुप्रबुद्धो यशोधरः ।  
वक्षाः सुवक्षाः सुमनाः सौमनसः प्रियदर्शनः ॥
- मू. (१८२) एक्कारसुत्तरं हेट्ठिमणे सत्तुत्तरं च मज्झिमए ।  
सयमेगं उवरिमए पंवेव अनुत्तरविमाणा ॥
- छा. अधस्तने एकादशोत्तरं शतं सप्तोत्तरं शतं च मध्ये ।  
शतमेकं उपरितने पंचैवानुत्तरविमानानि ॥
- मू. (१८३) हेट्ठिमगेविज्जाणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई ।  
इक्किक्कमारुहिज्जा अट्टहिं सेसेहिं नमियंगी ॥
- छा. अधस्तनाधस्तनत्रैवेयकानां त्रयोविंशति सागरोपमाणि स्थिति ।  
एकैकं वर्धयेत् अष्टसु शेषेषु नमितांगि ॥
- मू. (१८४) विजयं च वेजयंतं जयंतमपराजितं च बोद्धव्यं ।  
सव्वड्डिसिद्धनामं होइ चउण्हं तु मज्झिमयं ॥
- छा. विजयं च वैजयंतं जयन्तमपराजितं च बोद्धव्यं ।  
सर्वार्थसिद्धनाम भवति चतुर्णां तु मध्यमं ॥

- मू. (१८५) पुव्वेण होइ विजयं दाहिणओ होइ वेजयंतं तु ।  
अवरेणं तु जयंतं अवराइयमुत्तरे पासे ॥
- छा. पूर्वस्यां भवति विजयं दक्षिणतो भवति वैजयंतं तु ।  
अपरस्यां तु जयन्तं अपराजितमुत्तरे पाश्वे ॥
- मू. (१८६) एएसु विमाणेसु उ तित्तीसं सागरोवमाइं ठिई ।  
सव्वड्डिसिद्धनामे अजहनुक्कोस तित्तीसा ॥
- छा. एतेषु विमानेषु तु त्रयस्त्रिंशत् सागरोपमाणि स्थितिः ।  
सवार्थसिद्धनानि अजघन्योत्कृष्टा त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि ॥
- मू. (१८७) हिड्डिल्ला उवरिल्ला दो दो जुयलऽद्धचंदसंठाणा ।  
पडिपुण्णचंदसंठाणसंठिया मज्झिमा चउरो ॥
- छा. अधस्तने उपरितने च द्वे द्वे युगले अर्धचन्द्रसंस्थाने ।  
प्रतिपूर्णचन्द्रसंस्थानसंस्थिता मध्यमाश्चत्वारः ॥
- मू. (१८८) गेविज्जाऽऽवलिसरिसा गेविज्जा तिन्नि तिन्नि आसन्ना ।  
हुल्लुयसंठाणाइं अणुत्तराइं विमाणाइं ॥
- छा. ग्रैवेयकावलिसध्शानि ग्रैवेयकाणि त्रीणि त्रीणि आसन्नानि ।  
हुल्लुकसंस्थानानि अनुत्तराणि विमानानि ॥
- मू. (१८९) घनउदहिपइड्डाणा सुरभवणा दोसु हुंति कप्पेसुं ।  
तिसु वाउपइड्डाणा तदुभयसुपइड्डिया तिसि ॥
- छा. धनोदधिप्रतिष्ठानानि सुरभवनानि द्वयोर्भवन्ति कल्पयोः ।  
त्रिषु वायुप्रतिष्ठानानि तदुभयसुप्रतिष्ठितान्युपरि त्रिषु ॥
- मू. (१९०) तेण परं उवरिमया आगासंतरपइड्डिया सव्वे ।  
एस पइड्डाणविही उहं लोए विमाणाणं ॥
- छा. ततः परमुपरितनानि आकाशान्तरप्रतिष्ठितानि सर्वाणि ।  
एष प्रतिष्ठानविधि ऊर्ध्वलोके विमानानां ॥
- मू. (१९१) किण्हा नीला काऊ तेऊलेसा य भवणवंतरिया ।  
जोइससोहम्मीसाणं तेउलेसा मुणेयव्वा ॥
- छा. कृष्णा नीला कापोती तेजोलेश्या च भवनपतिव्यन्तराणां ।  
ज्योतिष्कसौधर्मशानानां तेजोलेश्या ज्ञातव्या ॥
- मू. (१९२) कप्पे सणकुमारो माहिंदे वेव बंभलोए य ।  
एएसु प्फहलेसा तेण परं सुक्कलेसा उ ॥
- छा. कल्पे सनत्कुमारो माहेन्द्रे वैव ब्रह्मलोके च ।  
एतेषु पद्मलेश्या ततः परं शुक्ललेश्या तु ॥
- मू. (१९३) कणगततरत्ताभा सुरवसभा दोसु हुंति कप्पेसु ।  
तिसु हुंति प्फहगोरा तेण परं सुक्किल्ला देवा ॥

- छा. कनकत्वग्रक्ताभाः सुरवृषभा भवन्ति द्वयोः कल्पयोः ।  
त्रिषु भवन्ति पद्मगौरास्ततः परं शुक्ललेश्याका देवाः ॥
- मू. (१९४) भवणवड्वाणमंतरजोइसिया हुंति सत्तरयणीया ।  
कप्पवईणऽइसुंदरि ! सुण उच्चत्तं सुरवराणां ॥
- छा. भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्का भवन्ति सप्तरलयः ।  
कल्पपतीनां अतिसुन्दरि ! शृणुच्चत्वं सुरवराणां ॥
- मू. (१९५) सोहम्मीसाणसुरा उच्चत्ते हुंति सत्तरयणीया ।  
दो दो कप्पा तुल्ला दोसुवि परिहायए रयणी ॥
- छा. सौधर्मेशानसुरा उच्चत्वेन भवन्ति सप्त रलयः ।  
द्वौ द्वौ कल्पौ तुल्यौ द्वयोरपि परिहीयते रलि ॥
- मू. (१९६) गेविज्जेसु य देवा रयणीओ दुन्नि हुंति उच्चाओ ।  
रयणी पुण उच्चत्तं अनुत्तरविमाणवासीणं ॥
- छा. ग्रैवेयकेषु देवा द्वे द्वे रली भवन्त्युच्चाः ।  
रलि पुनरुच्चत्वं अनुत्तरविमानवासिनां ॥
- मू. (१९७) कप्पाओ कप्पम्भि उ जस्स ठिई सागरोवमब्भहिया ।  
उस्सेहो तस्स भवे इक्कारसभागपरिहीणो ॥
- छा. कल्पात् कल्पे तु यस्य स्थिति सागरोपमेणाधिका ।  
उत्सेधस्तस्य भवेत् एकादशभागपरिहीणः ॥
- मू. (१९८) जो अ विमाणस्सेहो पुढवीणं जं च होइ बाहल्लं ।  
दुण्हंपि तं पमाणं बत्तीसं जोयणसयाइं ॥
- छा. यश्च विमानानामुत्सेधो बाहल्यं यच्च भवति पृथिव्याः ।  
द्वयोरपि तत्प्रमाणं द्वात्रिंशद्योजनशतानि ॥
- मू. (१९९) भवणवड्वाणमंतरजोइसिया हुंति कायपवियारा ।  
कप्पवईणवि सुंदरि ! वुच्छं पवियारणाविही उ ॥
- छा. भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्का भवन्ति कायप्रविचाराः ।  
कल्पपतीनामपि सुंदरि ! वक्ष्ये परिचारणाविधिं ॥
- मू. (२००) सोहम्मीसाणेसुं सुरवरा हुंति कायपवियारा ।  
सणकुमारमाहिंदेसु फासपवियारया देवा ॥
- छा. सौधर्मेशानयोः सुरवरा भवन्ति कायप्रवीचाराः ।  
सनत्कुमारमाहेन्द्रयोः स्पर्शप्रविचारका देवाः ॥
- मू. (२०१) बंभे लंतयकप्पे सुरवरा हुंति रूवपवियारा ।  
महसुक्कमसहस्सारे सद्दपवियारया देवा ॥
- छा. ब्रह्मदेवलोके लांतके कल्पे सुरवरा भवन्ति रूपप्रवीचाराः ।  
महाशुक्कसहस्रारयोः शब्दप्रवीचारका देवाः ॥

- मू. (२०२) आणयपाणयकप्ये आरण तह अद्युए सुकप्यम्पि ।  
देवा मनपवियारा तेण परं चूअपवियारा ॥
- छा. आनतप्राणतकल्पयोरारणे तथा अच्युते सुकल्पे ।  
देवा मनःप्रवीचाराः ततः परं च्युतप्रवीचाराः ॥
- मू. (२०३) गोसीसागुरुकेयइपत्तपुत्रागबउलगंधा य ।  
चंपयकुवलयगंधा तगरेलसुगंधगंधाय ॥
- छा. गोशीर्षागुरुकेतकीपुत्रपुत्रागबकुलगन्धाश्च ।  
चम्पककुवलयगन्धाः तगरैलासुगन्धिगन्धाश्च ॥
- मू. (२०४) एसा णं गंधविही उवमाए वण्णिया समासेणं ।  
दिड्डीएवि य तिविहा थिरसुकुमारा य फासेणं ॥
- छा. एष गन्धविधिरुपमया वर्णितः समासेन ।  
दृष्टयाऽपि च त्रि (वि)विधाः स्थिरसुकुमाराश्च स्पर्शेन ॥
- मू. (२०५) तेवीसं च विमाणा चउरासीइं च सयसहस्साइं ।  
सत्तानउई सहस्साइं उह्लंलोए विमाणाणं ॥
- छा. त्रयोविंशतिश्च विमानानि चतुरशीतिश्च शतसहस्राणि ।  
सप्तनवति सहस्राणि ऊर्ध्वलोके विमानानां ॥
- मू. (२०६) अउणानउई सहस्सा चउरासीइं च सयसहस्साइं ।  
एगूणयं दिवह्णं सयं च पुप्फावकिण्णाणं ॥
- छा. एकोननवति सहस्राणि चतुरशीतिश्च शतसहस्राणि ।  
एकोनं चार्धशतं च पुष्पावकीर्णानाम् ॥
- मू. (२०७) सत्तेव सहस्साइं सयाइं बावत्तराइं अट्ट भवे ।  
आवलियाइ विमाणा सेसा पुप्फावकिण्णाणं ॥
- छा. सप्तैव सहस्राणि द्वासप्ततानि शतानि चाष्ट भवन्ति ।  
आवलिकासु विमानानि शेषाणि पुष्पावकीर्णानि ॥
- मू. (२०८) आवलिआइ विमाणाण अंतरं नियमसो असंखिज्जं ।  
संखिज्जमसंखिज्जं भणियं पुप्फावकित्राणं ॥
- छा. आवलिकायां विमानानामन्तरं नियमेनासंख्येयं ।  
संख्येयमसंख्येयं भणितं पुष्पावकीर्णानां ॥
- मू. (२०९) आवलियाइ विमाणा वड्ढा तंसा तहेव चउरंसा ।  
पुप्फावकिण्णया पुण अनेगविहरूवसंठाणा ॥
- छा. आवलिकायां विमानानि वृत्तानि त्र्यस्राणि चतुरस्राणि तथैव ।  
पुष्पावकीर्णानि पुनरनेकविधरूपसंस्थानानि ॥
- मू. (२१०) वड्ढं खु वलयगंपिव तंसा सिंघाडयंपिव विमाणा ।  
चउरंसविमाणा पुण अक्खाडयसंठिया भणिया ॥



- छा. वृत्तानि खलु वलयमिव त्र्यम्नाणि शृंग्गाटकमिव विमानानि ।  
चतुरस्रविमानानि पुनः अक्षाटकसंस्थितानि भणितानि ॥
- मू. (२११) पढमं वट्टविमाणं वीयं तंसं तहेव चउरंसं ।  
एगंतरचउरंसं पुणोवि वट्टं पुणो तंसं ॥
- छा. प्रथमं वृत्तं विमानं द्वितीयं त्र्यस्रं तथैव चतुरस्रं ।  
वृत्तात् एकान्तरेण चतुरस्रं पुनरपि वृत्तं पुनस्त्रयस्रं ॥
- मू. (२१२) वट्टं वट्टस्सुवरिं तंसं तंसस्स उप्परिं होइ ।  
चउरंसं चउरंसं उट्टं तु विमाणसेढीओ ॥
- छा. वृत्तं वृत्तस्योपरि त्र्यस्रं त्र्यस्रस्योपरि भवति ।  
चतुरस्रस्य चतुरस्रं ऊर्ध्वं तु विमानश्रेणयः (एवं) ॥
- मू. (२१३) उवलंबयरजूओ सव्वविमाणाण हुंति समियाओ ।  
उवरिमचरिमंताओ हिट्टिल्लो जाव चरिमंतो ॥
- छा. अवलम्बनरज्जवः सर्वविमानानां भवन्ति समाः ।  
उपरितनचरमान्ताद् यावदधस्तनश्चरमान्तः ॥
- मू. (२१४) पागारपरिक्खित्ता वट्टविमाणा हवंति सव्वेवि ।  
चउरंसविमाणाणं चउद्विसिं वेइया भणिया ॥
- छा. प्राकारपरिक्षिप्तानि वृत्तानि विमानानि भवन्ति सर्वाण्यपि ।  
चतुरस्रविमानानां चतसृषु दिक्षु वेदिका भणिता ॥
- मू. (२१५) जत्तो वट्टविमाणं तत्तो तंसस्स वेइया होइ ।  
पागारो बोद्धव्वो अवसेसाणं तु पासाणं ॥
- छा. यतो वृत्तविमानं ततस्त्रयस्रस्य वेदिका भवति ।  
प्राकारो बोद्धव्यः अवशेषयोस्तु पाश्वर्योः ॥
- मू. (२१६) जे पुण वट्टविमाणा एगदुवारा हवंति सव्वेवि ।  
तित्रि य तंसविमाणे चत्तारि य हुंति चउरंसं ॥
- छा. यानि पुनर्वृत्तविमानानि एकद्वाराणि भवन्ति सर्वाण्यपि ।  
त्रीणि च त्र्यस्रविमाने चत्वारि च भवन्ति चतुरस्र ॥
- मू. (२१७) सत्तेव य कोडीओ हवंति वावत्तरिं सयसहस्सा ।  
एसो भवणसमासो भोमिज्जाणं सुरवराणं ॥
- छा. सप्तैव च कोट्यो भवन्ति द्विसप्तति शतसहस्राणि ।  
एष भवनसमासो भौमेयकानां सुरवराणां ॥
- मू. (२१८) तिरिओववाइयाणं रम्मा भोम्मनगरा असंखिज्जा ।  
तत्तो संखिज्जगुणा जोइसियाणं विमाणा उ ॥
- छा. तिर्यगुपपातिकानां भौमानि नगराणि असंख्येयानि ।  
ततः संख्येयगुणानि ज्योतिष्काणां विमानानि ॥

- मू. (२१९) थोवा विमाणवासी भौमिजा वाणमंतरमसंखा ।  
ततो संखिज्जगुणा जोइसवासी भवे देवा ॥
- छा. स्तोका विमानवासिनो भौमेया व्यन्तरा असंख्येयाः ।  
ततः संख्येयगुणा ज्योतिष्कवासिनो भवन्ति देवाः ॥
- मू. (२२०) पत्तेयविमाणणं देवीणं छब्भवे सयसहस्सा ।  
सोहम्मं कप्पम्मि उ ईसाणे हुंति चत्तारि ॥
- छा. प्रत्येकं वैमानिकानां देवीनां षट् भवन्ति शतसहस्राणि ।  
सौधर्मे कल्पे तु ईशाने भवन्ति चत्वारि शतसहस्राणि ॥
- मू. (२२१) पंचेवनुत्तरां अनुत्तरगईहिं जाइं दिद्दाइं ।  
जत्थ अनुत्तरदेवा भोगसुहमनुवमं पत्ता ॥
- छा. पंचैवानुत्तराणि अनुत्तरगतिभिर्यानि ष्ठानि ।  
यत्रानुत्तरदेवा भोगसुखमनुपमं प्राप्ताः ॥
- मू. (२२२) जत्थ अनुत्तरगंधा तहेव रूवा अनुत्तरा सद्दा ।  
अच्चित्तुग्गलाणं रसो अ फासो अ गंधो अ ॥
- छा. यत्र अनुत्तरगन्धास्तथैव रूपाणि अनुत्तराणि शब्दाश्च ।  
अचित्तपुद्गलानां रसश्च स्पर्शश्च गन्धश्च ॥
- छा. प्रस्फोटिकलिकालुष्याः प्रस्फुटितकमलरेणुसंकाशाः ।  
वरकुसुममधुकरा इव सूक्ष्मतरं नन्दिं घोषयन्ति (आस्वादयन्ति) ॥
- मू. (२२४) वरपउमगब्भगौरा सव्वे ते एगगब्भवसहीओ ।  
गब्भवसहीविमुक्का सुंदरि ! सुक्खं अनुहवंति ॥
- छा. वरपद्मगर्भगौराः सर्वे ते एकगर्भवसतयः ।  
गर्भवसतिविमुक्ताः सुन्दरि ! सौख्यमनुभवन्ति ॥
- मू. (२२५) तेतीसाए सुंदरि ! वाससहस्सेहिं होइ पुण्णेण ।  
आहाराऽवहि देवाणऽनुत्तरविमाणवासिणं ॥
- छा. त्र्यस्त्रिंशति पूर्णायां वर्षसहस्राणां सुन्दरि ! पुण्येन ।  
आहारावधिर्देवानां अनुत्तरविमानवासिनाम् ॥
- मू. (२२६) सोलसहि सहस्सेहिं पंचेहिं सएहिं होइ पुण्णेहिं ।  
आहारो देवाणं मज्झिममाउं धरिताणं ॥
- छा. षोडशभिः सहस्रैः पूर्णैः पञ्चभिः शतैर्भवति ।  
आहारो देवानां मध्यममायुर्धरताम् ॥
- मू. (२२७) दस वाससहस्साइं जहन्नमाउं धरंति जे देवा ।  
तेसिंपि य आहारो चउत्थभत्तेण बोद्धव्वो ॥
- छा. दश वर्षसहस्राणि जघन्यमायुर्धरन्ति ये देवाः ।  
तेषामपि चाहारश्चतुर्थभक्तेन बोद्धव्यः ॥

- मू. (२२८) संवच्छरस्स सुंदरि ! मासाणं अद्धपंचमाणं च ।  
उस्साओ देवाणं अनुत्तरविमाणवासीणं ॥
- छा. संवत्सरे अर्धपञ्चसु मासेषु च सुन्दरि ! ।  
उच्छवासो देवानामनुत्तरविमानवासिनाम् ॥
- मू. (२२९) अद्धद्वमेहिं राइंदिएहिं अद्धहि य सुतणु ! मासेहिं ।  
उस्सासो देवाणं मज्झिममाउं धरिंताणं ॥
- छा. अष्टसु मासेषु सार्धसप्तसु सुतनो ! रात्रिन्दिवेषु च ।  
उच्छवासो देवानां मध्यममायुर्धरताम् ॥
- मू. (२३०) सत्तण्हं थोवाणं पुण्णाणं पुण्णइंदुसरिसमुहे ! ।  
ऊसासो देवाणं जहन्नमाउं धरिंताणं ॥
- छा. सप्तसु स्तोकेषु पूर्णेषु पूर्णेन्दुसधशमुखि ! ।  
उच्छवासो देवानां जघन्यमायुर्धरताम् ॥
- मू. (२३१) जइ सागरोवमाइं जस्स ठिई तस्स तत्तिएहिं पक्खेहिं ।  
ऊसासो देवाणं वाससहस्सेहिं आहारो ॥
- छा. यति सागरोपमाणि यस्य स्थितिस्तस्य ततिभिः पक्षैः ।  
उच्छवासो देवानां वर्षसहस्रैराहारः ॥
- मू. (२३२) आहारो ऊसासो एसो मे वन्निओ समामे णं ।  
सुहुमंतरायनाहि ! सुंदरि ! अचिरेण कालेण ॥
- छा. आहार उच्छवास एष मया वर्णितः सभासेन ।  
सूक्ष्मान्ततयनाभे ! सुन्दरि ! अचिरेण कालेन ॥
- मू. (२३३) एएसिं देवाणं ओही उ विसेसओ उ जो जस्स ।  
तं सुंदरि ! वण्णेऽहं अहक्कमं आनुपुव्वीए ॥
- छा. एतेषां देवानामवधिस्तु विशेषतस्तु यो यस्य ।  
तं सुन्दरि ! वर्णयिष्याम्यहं यथाक्रमं आनुपूर्व्या ।
- मू. (२३४) सोहम्मीसाण पढमं दुच्चं च सणंकुमारमाहिंदा ।  
तच्चं च बंभलंतग सुक्कसहस्सारय चउत्थि ॥
- छा. सौधर्मेशानाः प्रथमां द्वितीयां च सनत्कुमारमाहेन्द्राः ।  
तृतीयां च ब्रह्मलान्तकाः शक्रसहस्रारकाश्च ततुर्थीम् ॥
- मू. (२३५) आणयपाणयकप्पे देवा पासंति पंचमिं पुढविं ।  
तं चेव आरणच्चुय ओहियनाणेण पासंति ॥
- छा. आनतप्राणतकल्पयोर्देवाः पश्यन्ति पञ्चमीं पृथ्वीम् ।  
तामेवारणाच्च्युता अवधिज्ञानेन पश्यन्ति ॥
- मू. (२३६) छट्ठिं हिट्ठिममज्झिमगेविज्जा सत्तमिं च उवरिल्ला ।  
संभिन्नलोगनालिं पासंति अनुत्तरा देवा ॥

- छा. षष्ठीं अधस्तनमध्यमग्रैवेयकाः सप्तमीं चोपरितनाः ।  
संपूर्णलोकनालिकां पश्यन्त्यनुत्तरा देवाः ॥  
मू. (२३७) संखिज्जजोयणा खलु देवाणं अद्धसागरे ऊणे ।  
तेण परमसंखिजा जहन्नयं पन्नवीसं तु ॥
- छा. देवानामूनेऽर्धसागरोपमे आयुषि संख्येययोजनानि ।  
ततः परमसंख्येयानि जघन्वतः पञ्चविंशतिं ॥  
मू. (२३८) तेण परमसंखिजा तिरियं दीवा य सागरा चेव ।  
बहुययरं उवरिमया उहं तु सकप्पथूभाइं ॥
- छा. ततः परेऽसंख्येया द्वीपाः सागराश्चैव तिर्यक् ।  
उपरितना बहुकं ऊर्ध्वं तु स्वकल्पस्तूपान् ॥  
मू. (२३९) नेरइयदेवतित्थंकरा य ओहिस्सऽबाहिरा हुंति ।  
पासंति सव्वओ खलु सेसा देसेण पासंति ॥
- छा. नैरयिकदेवतीर्थकराश्चावधेरबाह्या भवन्ति ।  
पश्यन्ति सर्वतः खलु शेषा देशेन पश्यन्ति ॥  
मू. (२४०) ओहित्राणे विसओ एसो मे वण्णिओ समासेणं ।  
बाहल्लं उच्चत्वं विमाणवन्नं पुणो वुच्छं ॥
- छा. अवधिज्ञाने विषय एष मया वर्णितः समासेन ।  
बाहल्यं उच्चत्वं विमानवर्णं पुनर्वक्ष्ये ॥  
मू. (२४१) सत्तावीसं जोयणसयाइं पुढवीण ताण बाहल्लं ।  
सोहम्पीसाणेसुं रयणविचित्ता य सा पुढवी ॥
- छा. सप्तविंशतिर्योजनशतानि पृथ्वीनां तयोः बाहल्यम् ।  
सौधर्मेशानयोः रत्नविचित्रा च सा पृथ्वी ॥  
मू. (२४२) तत्थ विमाणा बहुविहा पासायपगइवेइयारम्मा ।  
वेरुलियथूभियागा रयणामयदामलंकारा ॥
- छा. तत्र विमानानि बहुविधानि प्रासादप्रकृतिवेदिकारम्याणि ।  
वैडूर्यस्तूपिकानि रत्नमयदामालङ्काराणि ॥  
मू. (२४३) केइत्थऽसियविमाणा अंजणधाउसरिसा सभावेणं ।  
अद्वयरिद्धसवण्णा जत्थावासा सुरगणाणं ॥
- छा. कानिचिदत्र कृष्णानि विमानानि अञ्जनधातुसदृशानि स्वभावेन  
आर्द्राकरिष्ठसवर्णानि यत्रावासाः सुरगणानाम् ॥  
मू. (२४४) केइ य हरियविमाणा मेयगधाऊसरिसा सभावेणं ।  
मोरगीवसवण्णा जत्थावासा सुरगणाणं ॥
- छा. कानिचिच्च हरितानि विमानानि मेदकधातुसदृशानि स्वभावेन ।  
मयूरग्रीवसवर्णानि यत्रावासाः सुरगणानाम् ॥

- मू. (२४५) दीवसिहासरिसवण्णित्थ केई जासुमणसूरसरिसवन्ना ।  
 हिंगुलुयधाउवण्णा जत्थावासा सुरगणाणं ॥
- छा. दीपशिखासीधशवर्णान्यत्र कानिचित् उपासूरसद्गवर्णानि ।  
 हिंगुलकधातुवर्णानि यत्रावासाः सुरगणानाम् ॥
- मू. (२४६) कोरिंटाधाउवण्णित्थ केई फुल्लकणियारसरिसवण्णा य ।  
 हालिद्धभेयवण्णा जत्थावासा सुरगणाणं ॥
- छा. कोरण्टधातुवर्णान्यत्र कानिचित् विकसितकर्णिकारसीधशवर्णानि  
 हरिद्रभेदवर्णानि यत्रावासाः सुरगणानाम् ॥
- मू. (२४७) अवित्तमल्लदामा निम्मलगाया सुगंधनीसासा ।  
 सव्वे अवड्डियवया सयंपभा अनिमिसच्छा य ॥
- छा. अवियुक्तमाल्यदामानो निर्मलगात्राः सुगन्धिनि श्वासाः ।  
 सर्वेऽवस्थितवयसः स्वयंप्रभा अनिमेषाक्षाश्च ॥
- मू. (२४८) बावत्तरिकलापंडिया उ देवा हवंति सव्वेऽवि ।  
 भवसंकमणे तेसिं पडिवाओ होइ नायव्वो ॥
- छा. द्वासप्ततिकलापण्डितास्तु देवा भवन्ति सर्वेऽपि ।  
 भवसंक्रमणे तेषां प्रतिपातो भवति ज्ञातव्यः ॥
- मू. (२४९) कल्लाणफलविवागा सच्छंदविउव्वियाभरणधारी ।  
 आभरणवसणरहिया हवंति साभावियसरीरा ॥
- छा. कल्याणफलविपाकाः स्वच्छन्दविकुर्विताभरणधारिणः ।  
 आभरणवसनरहिता भवन्ति स्वाभाविकशरीराः ॥
- मू. (२५०) वतुलसरिसवरूवा देवा इक्कम्मि टिड्विसेसम्मि ।  
 पच्चग्गऽहीणमहिमा ओगाहणवण्णपरिमाणा ॥
- छा. वृत्तसर्षपरूपा देवा एकस्मिन् स्थितिविशेषे ।  
 प्रत्यग्रा अहीनमहिमाचगाहवर्णपरिणामाः ॥
- मू. (२५१) किण्हा नीला लोहिय हालिद्धा सुक्खिला विरायंति ।  
 पंचसए उविद्धा पासाया तेसु कप्पेसु ॥
- छा. कृष्णा नीला लोहिता हरिद्राः शुक्लाः विराजन्ते ।  
 पंच शतान्युद्विद्धाः प्रासादास्तेषु कल्पेषु ॥
- मू. (२५२) तत्थासणा बहुविहा सयणिज्जा मणिभक्तिसयविवित्ता ।  
 विरइयवित्थडभूसा रयणामयदामलंकारा ॥
- छा. तत्रासनानि बहुविधानि शयनीयानि मणिभक्तिशतविचित्राणि  
 विरचितविस्तृतभूषाणि रत्नमयदामालंकाराणि ॥
- मू. (२५३) छव्वीस जोयणसयाइं पुढवीणं ताण होइ बाहल्लं ।  
 सणंकुमारमाहिंदे रयणविवित्ता य सा पुढवी ॥

- छा. षड्विंशतिर्योजनशतानि पृथ्वीनां तयोः भवति बाहल्यम् ।  
सनत्कुमारमाहेन्द्रयोः रत्नविचित्रा च सा पृथ्वी ॥
- मू. (२५४) तत्थ य नीला लोहिय हालिद्दा सुक्किला विरायंति ।  
छच्च सए उच्चिद्धा पासाया तेसु कप्पेसु ॥
- छा. तत्र च नीला लोहिता हारिद्राः शुक्ला विराजन्ते ।  
षट्च शतान्युद्विद्धाः प्रासादाः तेषु कल्पेषु ॥
- मू. (२५५) तत्थ विमाणा बहुविहा० ॥
- छा. तत्र विमानानि बहुविधानि० ॥
- मू. (२५६) पण्णावीसं जोअणसयाइं पुढवीणं होइ बाहल्लं ।  
बंधयलंतय कप्पे रयणविचिता य सा पुढवी ॥
- छा. पंचविंशतिर्योजनानि पृथ्वीनां भवति ।  
कप्पे रयणविचिता य सा पुढवी ॥
- मू. (२५७) तत्थ विमाणा बहुविहा० ॥
- छा. तत्र विमानानि बहुविधा ॥
- मू. (२५८) लोहियहालिद्दा पुण सुक्किलवण्णा य ते विरायंति ।  
सत्तसए उच्चिद्धा पासाया तेसु कप्पेसु ॥
- छा. लोहिता हारिद्राः पुनः शुक्ल वर्णास्ते विराजन्ते ।  
सप्त शतान्युद्विधाः प्रासादास्तेषु कल्पेषु ॥
- मू. (२५९) चउवीसं जोयणसयाइं पुढवीणं होइ बाहल्लं ।  
सुक्के य सहस्सारे रयणविचिता य सा पुढवी ॥
- छा. चतुर्विंशतिर्योजन शतानि पृथ्व्या भवति बाहल्यम् ।  
शुक्कसहस्रारयोः रत्न विचित्रा सा पृथ्वी ॥
- मू. (२६०) तत्थ विमाण बहुविहा० ॥
- छा. तत्र विमानानि बहुविधानि ॥
- मू. (२६१) हालिद्दभेयवण्णा सुक्किलवण्णा य ते विरायंति ।  
अट्ट य ते उच्चिद्धा पासाया तेसु कप्पेसुं ॥
- छा. हारिद्राभेदवर्णाः शुक्ल वर्णाश्च ते विराजन्ते ।  
अष्टौ चयोजन शतान्युद्विधाः प्रासादस्तयोः कल्पयो ॥
- मू. (२६२) अट्ट य ते उच्चिद्धा पासाया तेसु कप्पेसुं ॥  
तत्थासणा बहुविहा० ॥
- छा. तत्रासनानि बहुविधानि ॥
- मू. (२६३) तेवीसं जोयणसयाइं पुढवीणं तासिं होइ बाहल्लं ।  
आणयपाणयकप्पे आरणच्चुए रयणविचिता उ सा पुढवी ॥
- छा. त्रयोर्विंशतिर्योजन शतानि पृथ्वीनां तासां पुनर्भवति बाहल्यम् ।  
रणाच्च्युतयोश्च रत्नविचित्रातु सा पृथ्वी ॥

- मू. (२६४) तत्थ विमाणा बहुविहा० ॥  
 छा. तत्र विमानानि बहुविधानि ॥
- मू. (२६५) संखंकसन्निकासा सव्वे दगरयतुसारसरिवण्णा ।  
 नव य सए उच्चिद्धा पासाया तेसु कप्पेसुं ॥  
 छा. शङ्खाङ्कसन्निकाशाः सर्वे दकरजस्तुषार षट्गवर्णाः ।  
 नव शतान्यु द्विधाः प्रासादस्तयोः कल्पयोः ॥
- मू. (२६६) बावीसं जोयणसयाइं पुढवीणं तासिं होइ बाहुल्लं ।  
 गेविज्जविमामेसु रयणविचिता उ सा पुढवी ॥  
 छा. द्वाविंशति योजन शतानि पृथ्वीनां बाहल्यम् ।  
 ग्रेवेयके विमानेषु रत्न विचित्रा तु सा पृथ्वी ॥
- मू. (२६७) तत्थ विमाणा बहुविहा० ॥  
 छा. तत्र विमानानि बहुविधानि० ॥
- मू. (२६८) संखंकसन्निकासा सव्वे दगरयतुसारसरिवण्णा ।  
 दस य सए उच्चिद्धा पाताया ते विरायंति ॥  
 छा. शङ्खाङ्कसन्निकाशाः सर्वे दकरजस्तुषारसदष्टगवर्णा ।  
 दश च शतान्युद्विद्धाः प्रासादास्ते विराजन्ते ॥
- मू. (२६९) एगवीस जोयणसयाइं पुढवीणं तेसिं होइ बाहुल्लं ।  
 पंचमु अत्तरेसुं रयणविचिता य सा पुढवी ॥  
 छा. एकविंशतिर्योजनशतानि पृथ्वीनां तासां भवति बाहल्यम् ।  
 पंचस्वनुत्तरेषु रत्नविचित्रा च सा पृथ्वी ॥
- मू. (२७०) तत्थ विमाणा बहुविहा० ॥  
 छा. तत्र विमानानि बहुविधानि० ॥
- मू. (२७१) संखंकसन्निकासा सव्वे दगरयतुसारसरिवण्णा ।  
 इक्कारसउच्चिद्धा पासाया ते विरायंति ॥  
 छा. शंखांकसन्निकाशाः सर्वे दकरजस्तुषारसीष्टगवर्णा ।  
 एकादश शतान्युद्विद्धाः प्रासादारते विराजन्ते ॥
- मू. (२७२) तत्यासणा बहुविहा सयणिज्जा मणिभतिसयविचिता ।  
 विरइयवित्थडदूसा य रयणामयदामलंकारा ॥  
 छा. तत्रासनानि बहुविधानि शयनीयानि मणिभक्तिशतविचित्राणि ।  
 विरचितविस्तृतदूष्याणि रत्नमयदामालकाराणि च ॥
- मू. (२७३) सव्वइविमाणस्स उ सव्वुवरिल्लाउ धूभियंताओ ।  
 बारसहिं जोअणेहिं इसिपम्भारा तओ पुढवी ॥  
 छा. सर्वार्थसिद्धविमानस्य सर्वोपरितनात् स्तूपिकान्तात् ।  
 ततो द्वादशसु योजनेषु ईषट्पद्मभारा पृथ्वी ॥
- मू. (२७४) निम्मलदगरयवण्णा तुसारगोखीरफेणसरिवण्णा ।  
 भणिया उ जिनवरेहिं उताणयछत्तसंठाणा ॥

- छा. निर्मलदकरजोवर्णा तुषारगोक्षीरफेनसद्गवर्णा ।  
भणिता तु जिनवरैरुत्तानकच्छत्रसंस्थाना ॥
- मू. (२७५) पणयालीसं आयामवित्थडा होइ सयसहस्साइं ।  
तं तिउणं सविसेसं परीरओ होइ बोद्धव्वो ॥
- छा. पंचत्वारिंशत्सहस्राणि आयामविस्ताराभ्यां भवन्ति ।  
तत्रिगुणानि सविशेषाणि परिरयो भवति बोद्धव्यः ॥
- मू. (२७६) एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं ।  
तीसं वेव सहस्सा दो अ सया अउणपत्रासा ॥
- छा. एका योजनानां कोटी द्वाचत्वारिंशच्च शतसहस्राणि ।  
त्रिंशच्चैव सहस्राणि द्वे च शते एकोनपंचाशत् ॥
- मू. (२७७) खित्तद्धयविच्छिन्ना अद्धेव य जोयणाणि बाहल्लं ।  
परिहायमाणी चरिमंते मच्छियपत्ताउ तनुययरी ॥
- छा. क्षेत्रार्धकेऽष्ट योजनानि यावत् बाहल्यमष्ट योजनानि ।  
परिहीयमाना चरमान्तेषु मक्षिकापत्रात् तनुतरा ॥
- मू. (२७८) संखंकसत्रिकासा नामेण सुदंसणा अमोहा य ।  
अज्जुणसुवण्णयमई उताणयच्छत्तसंठाणा ॥
- छा. शंखांकसत्रिकाशा नाम्ना सुदर्शना अमोघा च ।  
अर्जुनसुवर्णमयी उत्तानकच्छत्रसंस्थिता ॥
- मू. (२७९) ईसीपम्भाराए सीआए जोअणंमि लोगंतो ।  
तस्सुवरिमम्मि भाए सोलसमे सिद्धमोगाढे ॥
- छा. ईषट्त्राभारायाः सीतापराभिधानायाः योजने कोलान्तः ।  
तस्योपरितनभागे षोडशे सिद्धा अवगाढाः ॥
- मू. (२८०) तत्थेते निच्चयणा भवेयणा निम्मा असंगाय ।  
असरिरा जीवघणा पएसनिव्वत संठाणा ॥
- छा. तत्रएते निच्चयना अवेदना निर्ममा असंगाय ।  
अशरीरा जीव घना प्रदेश निवृत्त संस्थाना ॥
- मू. (२८१) कहिं पडिहया सिद्धा ?, कहिं सिद्धा पइड्डिया ।  
कहिं बोदि चइत्ताणं, कथ गंतूण सिज्झई ॥
- छा. केन सिद्धाः प्रतिहताः क्व सिद्धाः प्रतिष्ठिताः ।  
क्व बोन्दि त्यक्त्वा क्व गत्वा सिद्धयन्ति ॥
- मू. (२८२) अलोए पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइड्डिया ।  
इहं बोदिं चइत्ताणं, तत्थ गंतूण सिज्झई ॥
- छा. अलोकेन प्रतिहताः सिद्धा लोकाग्रे च प्रतिष्ठिताः ।  
इह बोन्दि त्यक्त्वा तत्र गत्वा सिध्यन्ति ॥
- मू. (२८३) जं संठाणं तु इहं भवं चयंतस्स चरमसमयम्मि ।  
आसी य पएसघणं तं संठाणं तहिं तस्स ॥



- छा. यत् संस्थानं तु इह भवं त्यजतश्चरमसमये ।  
आसीच्च प्रदेशघनं तत् संस्थानं तत्र तस्य ॥
- मू. (२८४) दीहं वा हस्सं वा जं संठाणं हविज्जं चरमभवे ।  
तत्तो तिभागहीणा सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥
- छा. दीर्घं वा हस्वं वा यत् प्रमाणं भवेत् चरमभवे ।  
ततस्त्रिभागहीना सिद्धानामवगाहना भणिता ॥
- मू. (२८५) तिन्नि सया छासद्धा धनुत्तिभागो अ होइ बोद्धव्वो ।  
एसा खलु सिद्धाणं उक्कोसोगाहणा भणिया ॥
- छा. त्रीणि शतानि षट्षष्टिर्धनुषस्तृतीयो भागश्च भवति बोद्धव्यः ।  
एषा खलु सिद्धानामुक्कृष्टावगाहना भणिता ॥
- मू. (२८६) चत्तारि य रयणीओ रयणी तिभागूणिया य बोद्धव्वा ।  
एसा खलु सिद्धाणं मज्झिमओगाहणा भणिया ॥
- छा. चतस्रो रत्नयो रत्निस्त्रिभागोना च बोद्धव्या ।  
एषा खलु सिद्धानां मध्यमाऽवगाहना भणिता ॥
- मू. (२८७) इक्का य होइ रयणी अट्टेव य अंगुलाइ साहीया ।  
एसा खलु सिद्धाणं जहन्नओगाहणा भणिया ॥
- छा. एका च भवति रत्निरष्टावेवांगुलानि साधिकानि ।  
एषा खलु सिद्धानां जघन्यिकाऽवगाहना भणिता ॥
- मू. (२८८) ओगाहणाइ सिद्धा भवत्तिभागेण हुंति परिहीणा ।  
संठाणमनित्थंत्थं जरामरणविप्पमुक्काणं ॥
- छा. अवगाहनायां सिद्धां भवन्निभागेन भवन्ति परिहीनाः ।  
संस्थानमनित्थंत्थं जरामरणविप्रमुक्तानाम् ॥
- मू. (२८९) जत्थ य एगो सिद्धो तत्थ अनन्ता भवक्खयविमुक्का ।  
अनुन्नसमोगाढा पुट्ठा सव्वे अलोगंते ॥
- छा. यत्रैकः सिद्धस्तत्रानन्ता भवक्षयविप्रमुक्ताः ।  
अन्योऽन्यसमवगाढाः स्पृष्टाः सर्वेऽलोकान्ते ॥
- मू. (२९०) असरीरा जीवघना उवउत्ता दंसणे य नाणे य ।  
सागारमनागारं लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ॥
- छा. अशरीरा जीवघना उपयुक्ता दर्शने च ज्ञाने च ।  
साकारत्वमनाकारत्वं च लक्षणमेतत्तु सिद्धानाम् ॥
- मू. (२९१) फुसइ अनन्ते सिद्धे सव्वपएसेहिं नियमसो सिद्धो ।  
तेवि असंखिज्जगुणा देसपएसेहिं जे पुट्ठा ॥
- छा. स्पृशति अनन्तान् सिद्धान् सर्वपरदेशैर्निघमतः सिद्धः ।  
ये देशप्रदेशैः स्पृष्टास्तेऽप्यसंख्येयगुणाः ॥
- मू. (२९२) केवलनाणुवउत्ता जाणंती सव्वभावगुणभावे ।  
पासंति सव्वओ खलु केवलदिट्ठीअनन्ताहिं ॥

- छा. केवलज्ञानोपयुक्ता जानन्ति सर्वपदार्थगुणभावान् ।  
पश्यन्ति सर्वतः खलु केवलदृष्टिभिरनन्ताभि ॥
- मू. (२९३) नाणंमि दंसणम्मि य इत्तो एगयरम्मि उवउत्ता ।  
सव्वस्स केवलित्सा जुगवं दो नत्थि उवओगा ॥
- छा. ज्ञाने दर्शने चानयोरेकतरस्मिन् उपयुक्ताः ।  
सर्वस्य केवलिनो युगपद् द्वौ न स्त उपयोगौ ॥
- मू. (२९४) सुरगणसुहं समत्तं सव्वद्धापिंडियं अनंतगुणं ।  
नवि पावइ मुत्तिसुहं णंताहिं वग्गवग्गूहिं ॥
- छा. सुरगणसुखं समस्तं सर्वाद्धापिंडितं अनन्तगुणं ।  
नैव प्राप्नोति मुक्तिसुखं अनन्तैर्वर्गवर्गै ॥
- मू. (२९५) नवि अत्थि माणुसाणं तं सुक्खं नवि य सव्वदेवाणं ।  
जं सिद्धाणं सुक्खं अब्बाबाहं उवगयाणं ॥
- छा. नैवास्ति मनुष्याणां तत् सौख्यं नैव च सर्वदेवानां ।  
यत् सिद्धानां सौख्यमव्याबाधत्वमुपगतानाम्
- मू. (२९६) सिद्धस्स सुहो रासी सव्वद्धापिंडिओ जइ हविज्जा ।  
अनंतगुणवग्गुभइओ सव्वागासे न माइज्जा ॥
- छा. सिद्धास्य सुखराशिः सर्वाद्धापिण्डितो यदि भवेत् ।  
अनन्तगुणवर्गभक्तः सर्वाकाशे न मायात् ॥
- मू. (२९७) जह नाम कोइ मिच्छो नयरगुणे बहुविहे वियाणंतो ।  
न चएइ परिकहेउं उवमाए तहिं असंतीए ॥
- छा. यथा नाम कश्चिन्लेच्छो नगरगुणान् बहुविधान् विजानानः ।  
न शक्नोति परिकथयितुं तत्रासत्यामुपमायाम् ॥
- मू. (२९८) इअ सिद्धाणं सुक्खं अनोवमं नत्थि तस्स ओवम्मं ।  
किंवि विसैसेणित्तो सारिक्खमिणं सुणह वुच्छं ॥
- छा. इति सिद्धानां सौख्यमनुपमं नास्ति तस्यौपम्यं ।  
किंचिद्विशेषेणातः सादृश्यमिदं श्रूणुत वक्ष्ये ॥
- मू. (२९९) जह सव्वकामगुणियं पुरिसो भोतूण भोयणं कोई ।  
तण्हाणुहाविमुक्को अच्छिज्ज जहा अभियतित्तो ॥
- छा. यथा सर्वकामगुणितं भोजनं भुक्त्वा कश्चित् पुरुषः ।  
तृषा क्षुधा विमुक्त आसीत् यथाऽमृततृप्तः ॥
- मू. (३००) इय सव्वकालतित्ता अउलं निव्वाणमुवगया सिद्धा ।  
सासयमव्वाबाहं चिट्ठति सुही सुहं पत्ता ॥
- छा. इति (एवं) सर्वकालतृप्ताः अनुत्थं निर्वाणमुपगताः सिद्धाः ।  
शाश्वतमव्याबाधं सुखिनः सुखं प्राप्तास्तिष्ठन्ति ॥
- मू. (३०१) सिद्धत्ति य बुद्धत्ति य पारगयत्ति य परंपरगयत्ति ।  
उम्मुक्ककम्मकवया अजरा अमरा असंगा य ॥

- छा. सिद्ध इति च बुद्ध इति च पारगत इति च परंपरागत इति ।  
उन्मुक्तकर्मकवचा अजरा अमरा असंगाश्च ॥
- मू. (३०२) निच्छिन्नसव्वदुक्खा जाइजरा मरणबन्धणविमुक्खा ।  
सासयमव्वाबाहं अनुहवंति सुहं सया कालं ॥
- छा. व्युच्छिन्नसर्वदुःखा जातिजरा मरणबन्धनविमुक्ताः ।  
शाश्वतमव्याबाधत्वमनुभवन्ति सदाकालम् ॥
- मू. (३०३) सुरगणइद्धिसमग्गा सव्वद्धापिडियं अनंतगुणा ।  
नवि पावइ जिणइद्धिं नंतेहिंवि वग्गवग्गूहिं ॥
- छा. सुरगणद्धिं समग्गा सर्वाद्धापिडिता अनन्तगुणा ।  
नैव प्राप्नोति जिनद्धिं अनन्तैर्वर्गवर्गैरपि ॥
- मू. (३०४) भवणवइवाणमंतरजोइसवासी विमाणवासी य ।  
सव्विद्धीपरियरिया अरहंते वंवया हुति ॥
- छा. भवनपतयो व्यन्तरा ज्योतिष्कवासिनो विमानवासिनश्च ।  
सर्वद्धिपरिवृता जिनानां वंदका भवन्ति (वन्दनाय यांति) ॥
- मू. (३०५) भवणवइवाणमंतरजोइसवासी विमाणवासी य ।  
इसिवालियमयमहिया करिंति महिमं जिनवराणं ॥
- छा. भवनपतयो व्यन्तरा ज्योतिष्कवासिनो विमानवासिनश्च ।  
ऋषिपालितमतमहिताः कुर्वन्ति महिमानं जिनेन्द्राणाम् ॥
- मू. (३०६) इसिवालियस्स भद्दं सुरवरथयकारयस्स वीरस्स ।  
जेहिं सया धुव्वंता सव्वे इंदा पवरकित्ती ॥
- छा. ऋषिपालिताय भद्रं वीरस्य सुरवरस्तवकारकाय ।  
येन सदा स्तुतिकारकाः सर्वे इन्द्राः परिकीर्तिताः (प्रवरकीर्तिताः) ॥
- मू. (३०७) इसिवा० तेसिं सुरासुरगुरु सिद्धा सिद्धि उवणमंतु ॥
- छा. ऋषिपालिताय भद्रं वीरस्य सुरवरस्य स्तवकारकाय ।  
तेषां सुरासुराणां गुरवः सिद्धाः सिद्धिमुपनयन्तु ॥
- मू. (३०८) भोमेज्जवणयरणं जोइसियाणं विमाणवासीणं ।  
देवनिकाया णं (नंदउ) थवो सहस्सं [समतो] अपरिसेसो ॥
- छा. भौमेयव्यन्तराणां ज्योतिष्काणां विमानवासिनां ।  
देवनिकायानां स्तवः अपरिशेषः समाप्तः ॥

### ३२ नवम प्रकीर्णकं “देवेन्द्रस्तव” समाप्तम्

मुनि दीपरत्नसागरेण संशोधिता सम्पादिता देवेन्द्रस्तवप्रकीर्णकस्य  
पूज्यपाद् आनंदसागरसुरीश्वरेण सम्पादिता संस्कृतछाया परिसमाप्ता ।

\*\*\*

## ભાવભરી વંદના

જેમના દ્વારા સૂત્રમાં ગુંથાયેલ જિનવાણીનો ભવ્ય વારસો  
વર્તમાનકાલીન “આગમસાહિત્ય”માં પ્રાપ્ત થયો  
એ સર્વે સૂરિવર આદિ આર્ષ પૂજ્યશ્રીઓને-

|  |                                    |            |          |
|--|------------------------------------|------------|----------|
| પંચમ ગણધર શ્રી સુધર્મા સ્વામી  | ચૌદ પૂર્વધર શ્રી ભદ્રબાહુ સ્વામી   |            |          |
| દશ પૂર્વધર શ્રી શયંભવસૂરિ  | (અનામી) સર્વે શ્રુત સ્થવીર મહર્ષિઓ |            |          |
| દેવવાચક ગણિ  | શ્રી શ્યામાચાર્ય                   |            |          |
| દેવદ્વિગણિ ક્ષમાશ્રમણ  | જિનભદ્ર ગણિ ક્ષમાશ્રમણ             |            |          |
| સંઘદાસગણિ  | સિદ્ધસેન ગણિ                       |            |          |
| જિનદાસ ગણિ મહત્તર  | અગત્યસિંહ સૂરિ                     |            |          |
| શીલાંકાચાર્ય   | અભયદેવસૂરિ                         |            |          |
| મલયગિરિસૂરિ  | ક્ષેમકીર્તિસૂરિ                    |            |          |
| હરિભદ્રસૂરિ  | આર્યરક્ષિત સૂરિ (?)                |            |          |
| દ્રોણાચાર્ય  | ચંદ્ર સૂરિ                         |            |          |
| વાદિવેતાલ શાંતિચંદ્ર સૂરિ  | મલ્લધારી હેમચંદ્રસૂરિ              |            |          |
| શાંતિચંદ્ર ઉપાધ્યાય  | ધર્મસાગર ઉપાધ્યાય                  |            |          |
| ગુણરત્નસૂરી  | વિજય વિમલગણિ                       |            |          |
| વીરભદ્ર  | ઋષિપાલ                             | બ્રહ્મમુનિ | તિલકસૂરિ |
| સૂત્ર-નિર્ધુક્તિ - ભાષ્ય - ચૂર્ણિ - વૃત્તિ - આદિના રચયિતા અન્ય સર્વે પૂજ્યશ્રી |                                    |            |          |

વર્તમાન કાલિન આગમ સાહિત્ય વારસાને

સંશોધન-સંપાદન-લેખન આદિ દ્વારા મુદ્રીત/અમુદ્રીત સ્વરૂપે રજૂ કર્તા  
સર્વે શ્રુતાનુરાગી પૂજ્યપુરુષોને

|                 |                  |             |
|-----------------|------------------|-------------|
| આનંદ સાગરસૂરિજી | ચંદ્રસાગર સૂરિજી | મુનિ માણેક  |
| જિન વિજયજી      | પુન્યવિજયજી      | ચતુરવિજયજી  |
| જંબુ વિજયજી     | અમરમુનિજી        | કનૈયાલાલજી  |
| લાભસાગરસુરિજી   | આચાર્ય તુલસી     | ચંપક સાગરજી |

## સ્મરણાંજલિ

|                             |                    |               |
|-----------------------------|--------------------|---------------|
| બાબુ ધનપતસિંહ               | પં૦ બેચરદાસ        | પં૦ જીવરાજભાઈ |
| પં૦ ભગવાનદાસ                | પં૦ રૂપેન્દ્રકુમાર | પં૦ હીરાલાલ   |
| શ્રુત પ્રકાશક સર્વે સંસ્થાઓ |                    |               |

## ४५ आगम भूण तथा विवरणानुं श्लोक प्रमाणादर्शक कोष्टक

| क्रम | आगमसूत्रनाम          | मूल<br>श्लोक प्रमाण | वृत्ति-कर्ता                | वृत्ति<br>श्लोकप्रमाण |
|------|----------------------|---------------------|-----------------------------|-----------------------|
| १.   | आचार                 | २५५४                | शीलाङ्गाचार्य               | १२०००                 |
| २.   | सूत्रकृत             | २१००                | शीलाङ्गाचार्य               | १२८५०                 |
| ३.   | स्थान                | ३७००                | अभयदेवसूरि                  | १४२५०                 |
| ४.   | समवाय                | १६६७                | अभयदेवसूरि                  | ३५७५                  |
| ५.   | भगवती                | १५७५१               | अभयदेवसूरि                  | १८६१६                 |
| ६.   | ज्ञाताधर्मकथा        | ५४५०                | अभयदेवसूरि                  | ३८००                  |
| ७.   | उपासकदशा             | ८१२                 | अभयदेवसूरि                  | ८००                   |
| ८.   | अन्तकृद्दशा          | ९००                 | अभयदेवसूरि                  | ४००                   |
| ९.   | अनुत्तरोपपातिकदशा    | १९२                 | अभयदेवसूरि                  | १००                   |
| १०.  | प्रश्नव्याकरण        | १३००                | अभयदेवसूरि                  | ५६३०                  |
| ११.  | विपाकश्रुत           | १२५०                | अभयदेवसूरि                  | ९००                   |
| १२.  | औपपातिक              | ११६७                | अभयदेवसूरि                  | ३१२५                  |
| १३.  | राजप्रश्निय          | २१२०                | मलयगिरिसूरि                 | ३७००                  |
| १४.  | जीवाजीवाभिगम         | ४७००                | मलयगिरिसूरि                 | १४०००                 |
| १५.  | प्रज्ञापना           | ७७८७                | मलयगिरिसूरि                 | १६०००                 |
| १६.  | सूर्यप्रज्ञप्ति      | २२९६                | मलयगिरिसूरि                 | ९०००                  |
| १७.  | चन्द्रप्रज्ञप्ति     | २३००                | मलयगिरिसूरि                 | ९१००                  |
| १८.  | जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति | ४४५४                | शान्तिचन्द्रउपाध्याय        | १८०००                 |
| १९थी | निरयावलिका           | ११००                | चन्द्रसूरि                  | ६००                   |
| २३.  | (पञ्च उपाङ्ग)        | -                   | -                           | -                     |
| २४.  | चतुःशरण              | ८०                  | विजयविमलयगणि                | (?) २००               |
| २५.  | आतुर प्रत्याख्यान    | १००                 | गुणरत्नसूरि (अवचूरि)        | (?) १५०               |
| २६.  | महाप्रत्याख्यान      | १७६                 | आनन्दसागरसूरि (संस्कृतछाया) | १७६                   |
| २७.  | भक्तपरिज्ञा          | २१५                 | आनन्दसागरसूरि (संस्कृतछाया) | २१५                   |
| २८.  | तन्दुल वैचारिक       | ५००                 | विजयविमलयगणि                | (?) ५००               |
| २९.  | संस्तारक             | १५५                 | गुणरत्न सूरि (अवचूरि)       | ११०                   |
| ३०.  | गच्छाचार*            | १७५                 | विजयविमलयगणि                | १५६०                  |
| ३१.  | गणिविद्या            | १०५                 | आनन्दसागरसूरि (संस्कृतछाया) | १०५                   |

| ક્રમ | આગમસૂત્રનામ                         | • મૂલ<br>શ્લોક પ્રમાણ | વૃત્તિ-કર્તા                            | • વૃત્તિ<br>શ્લોકપ્રમાણ |
|------|-------------------------------------|-----------------------|---|-------------------------|
| ૩૨.  | દેવેન્દ્રસ્તવ                       | ૩૭૫                   | આનન્દસાગરસૂરિ (સંસ્કૃત ણ્યા)            | ૩૭૫                     |
| ૩૩.  | મરણસમાધિ ★                          | ૮૩૭                   | આનન્દસાગરસૂરિ (સંસ્કૃત ણ્યા)            | ૮૩૭                     |
| ૩૪.  | નિશીથ                               | ૮૨૧                   | જિનદાસગણિ (ચૂર્ણિ)<br>સહદાસગણિ (ભાષ્ય)  | ૨૮૦૦૦<br>૭૫૦૦           |
| ૩૫.  | વૃહત્કલ્પ                           | ૪૭૩                   | મલયગિરિ+ક્ષેમકીર્તિ<br>સહદાસગણિ (ભાષ્ય) | ૪૨૬૦૦<br>૭૬૦૦           |
| ૩૬.  | વ્યવહાર                             | ૩૭૩                   | મલયગિરિ<br>સહદાસગણિ (ભાષ્ય)             | ૩૪૦૦૦<br>૬૪૦૦           |
| ૩૭.  | દશાશ્રુતસ્કન્ધ                      | ૮૧૬                   | - ? - (ચૂર્ણિ)                          | ૨૨૨૫                    |
| ૩૮.  | જીતકલ્પ ★                           | ૧૩૦                   | સિદ્ધસેનગણિ (ચૂર્ણિ)                    | ૧૦૦૦                    |
| ૩૯.  | મહાનિશીથ                            | ૪૫૪૮                  | -                                       | -                       |
| ૪૦.  | આવશ્યક                              | ૧૩૦                   | હરિભદ્રસૂરિ                             | ૨૨૦૦૦                   |
| ૪૧.  | ઔઘનિર્યુક્તિ<br>- પિન્ડનિર્યુક્તિ ★ | તિ. ૧૩૫૫<br>તિ. ૮૩૫   | દ્રોણાચાર્ય<br>મલયગિરિસૂરિ              | (?) ૭૫૦૦<br>૭૦૦૦        |
| ૪૨.  | દશવૈકાલિક                           | ૮૩૫                   | હરિભદ્રસૂરિ                             | ૭૦૦૦                    |
| ૪૩.  | ઉત્તરાધ્યયન                         | ૨૦૦૦                  | શાંતિસૂરિ                               | ૧૬૦૦૦                   |
| ૪૪.  | નન્દી                               | ૭૦૦                   | મલયગિરિસૂરિ                             | ૭૭૩૨                    |
| ૪૫.  | અનુયોગદ્વાર                         | ૨૦૦૦                  | મલધારીહેમચન્દ્રસૂરિ                     | ૫૧૦૦                    |

### નોંધ :-

- (૧) ઉક્ત ૪૫ આગમ સૂત્રોમાં વર્તમાન કાળે પહેલાં ૧ થી ૧૧ અંગસૂત્રો, ૧૨ થી ૨૩ ઉપાંગસૂત્રો, ૨૪થી૩૩ પ્રકીર્ણકસૂત્રો ૩૪થી ૩૯ છેદસૂત્રો, ૪૦ થી ૪૩ મૂલસૂત્રો, ૪૪-૪૫ ચૂલિકાસૂત્રોના નામે હાલ પ્રસિદ્ધ છે.
- (૨) ઉક્ત શ્લોક સંખ્યા અમે ઉપલબ્ધ માહિતી અને પૃષ્ઠ સંખ્યા આધારે નોંધેલ છે. જો કે તે સંખ્યા માટે મતાંતર તો જોવા મળે જ છે. જેમકે આચાર સૂત્રમાં ૨૫૦૦, ૨૫૫૪, ૨૫૨૫ એવા ત્રણ શ્લોક પ્રમાણ જણવા મળેલ છે. આવો મત-ભેદ અન્ય સૂત્રોમાં પણ છે.
- (૩) ઉક્ત વૃત્તિ-આદિ જે નોંધ છે તે અમે કરેલ સંપાદન મુજબની છે. તે સિવાયની પણ વૃત્તિ-ચૂર્ણિ આદિ સાહિત્ય મુદ્રિત કે અમુદ્રિત અવસ્થામાં હાલ ઉપલબ્ધ છે જ.
- (૪) ગચ્છાચાર અને મરણસમાધિ ના વિકલ્પે ચંદાવેજ્ઞય અને વીરસ્તવ પ્રકીર્ણક આવે છે. જે અમે “આગમસુતાણિ” માં મૂળ રૂપે અને “આગમદીપ”માં અક્ષરશઃ ગુજરાતી અનુવાદ રૂપે આપેલ છે. તેમજ જીતકલ્પ જેના વિકલ્પ રૂપે છે એ

પંચકલ્પનું ભાષ્ય અમે “આગમસુત્તાણિ”માં સંપાદીત કર્યું છે.

- (૫) ઓઘ અને પિણ્ડ એ બંને નિર્યુક્તિ વિકલ્પે છે. જે હાલ મૂલસૂત્ર રૂપે પ્રસિદ્ધ છે. જે બંનેની વૃત્તિ અમે આપી છે. તેમજ તેમાં ભાષ્યની ગાથાઓ પણ સમાવિષ્ટ થઈ છે.
- (૬) ચાર પ્રકીર્ણક સૂત્રો અને મહાનિશીય એ પાંચ આગમની કોઈ વૃત્તિ આદિ ઉપલબ્ધ થવાનો ઉલ્લેખ મળતો નથી. પ્રકીર્ણક ની સંસ્કૃત છાયા ઉપલબ્ધ છે તેથી મૂકી છે. નિશીય-દશા-જિતકલ્પ એ ત્રણેની ચૂર્ણિ આપી છે. જેમાં દશા અને જીતકલ્પ એ બંને ઉપરવૃત્તિ મળતી હોવાનો ઉલ્લેખ છે, પણ અમે તે મેળવી શક્યા નથી. જ્યારે નિશીય ઉપર તો માત્ર વીસમા ઉદ્દેશક:ની જ વૃત્તિ નો ઉલ્લેખ મળે છે.

### ▶ વર્તમાન કાળે ૪૫ આગમમાં ઉપલબ્ધ નિર્યુક્તિ: ◀

| ક્રમ | નિર્યુક્તિ             | શ્લોકપ્રમાણ | ક્રમ | નિર્યુક્તિ             | શ્લોકપ્રમાણ |
|------|------------------------|-------------|------|------------------------|-------------|
| ૧.   | આચાર-નિર્યુક્તિ        | ૪૫૦         | ૬.   | આવશ્યક-નિર્યુક્તિ      | ૨૫૦૦        |
| ૨.   | સૂત્રવૃક્ત-નિર્યુક્તિ  | ૨૬૫         | ૭.   | ઓઘનિર્યુક્તિ           | ૧૩૫૫        |
| ૩.   | બૃહત્કલ્પ-નિર્યુક્તિ * | -           | ૮.   | પિણ્ડનિર્યુક્તિ        | ૮૩૫         |
| ૪.   | વ્યવહાર-નિર્યુક્તિ *   | -           | ૯.   | દશવૈકાલિક-નિર્યુક્તિ   | ૫૦૦         |
| ૫.   | દશાશ્રુત૦-નિર્યુક્તિ   | ૧૮૦         | ૧૦.  | ઉત્તરાધ્યયન-નિર્યુક્તિ | ૭૦૦         |

### નોંધ :-

- (૧) અહીં આપેલ શ્લોક પ્રમાણ એ ગાથા સંખ્યા નથી. “૩૨ અક્ષરનો એક શ્લોક” એ પ્રમાણથી નોંધાયેલ શ્લોક પ્રમાણ છે.
- (૨) ★ વૃહત્કલ્પ અને વ્યવહાર એ બંને સૂત્રોની નિર્યુક્તિ હાલ ભાષ્ય માં ભળી ગઈ છે. જેનો યથાસંભવ ઉલ્લેખ વૃત્તિકાર મહર્ષિ એ ભાષ્ય ઉપરની વૃત્તિમાં કર્યો હોય તેવું જોવા મળેલ છે.
- (૩) ઓઘ અને પિણ્ડનિર્યુક્તિ સ્વતંત્ર મૂલઆગમ સ્વરૂપે સ્થાન પામેલ છે તેથી તેનું સ્વતંત્ર સંપાદન આગમ-૪૧ રૂપે થયેલ છે. (તેમજ આ સંપાદનમાં પણ છે.)
- (૪) બાકીની છ નિર્યુક્તિમાંથી દશાશ્રુતસ્કન્ધ નિર્યુક્તિ ઉપર ચૂર્ણિ અને અન્ય પાંચ નિર્યુક્તિ ઉપરની વૃત્તિ અમે અમારા સંપાદનમાં પ્રકાશીત કરી છે. જ્યાં આ છ નિર્યુક્તિ સ્પષ્ટ અલગ જોઈ શકાય છે.
- (૫) નિર્યુક્તિકર્તા તરીકે ભદ્રવાહુસ્વામી નો ઉલ્લેખ જ જોવા મળે છે.

### વર્તમાન કાળે ૪૫ આગમમાં ઉપલબ્ધ ભાષ્યં

| ક્રમ | ભાષ્ય          | શ્લોકપ્રમાણ | ક્રમ | ભાષ્ય                  | ગાથાપ્રમાણ |
|------|----------------|-------------|------|------------------------|------------|
| ૧.   | નિશીષભાષ્ય     | ૭૫૦૦        | ૬.   | આવશ્યકભાષ્ય *          | ૪૮૩        |
| ૨.   | બૃહત્કલ્પભાષ્ય | ૭૬૦૦        | ૭.   | ઓઘનિર્યુક્તિભાષ્ય *    | ૩૨૨        |
| ૩.   | વ્યવહારભાષ્ય   | ૬૪૦૦        | ૮.   | પિણ્ડનિર્યુક્તિભાષ્ય * | ૪૬         |
| ૪.   | પચ્ચકલ્પભાષ્ય  | ૩૧૮૫        | ૯.   | દશઘૈકાલિકભાષ્ય *       | ૬૩         |
| ૫.   | જીતકલ્પભાષ્ય   | ૩૧૨૫        | ૧૦.  | ઉત્તરાધ્યયનભાષ્ય (?)   | -          |

### નોંધ :-

- (૧) નિશીષ, બૃહત્કલ્પ અને વ્યવહારભાષ્ય ના કર્તા સહ્વદાસગણિ હોવાનું જણાય છે. અમારા સંપાદનમાં નિશીષ ભાષ્ય તેની ચૂર્ણિ સાથે અને બૃહત્કલ્પ તથા વ્યવહાર ભાષ્ય તેની-તેની વૃત્તિ સાથે સમાવિષ્ટ થયું છે.
- (૨) પચ્ચકલ્પભાષ્ય અમારા આગમસુત્તાણિ ભાગ-૩૮ માં પ્રકાશીત થયું.
- (૩) આવશ્યકભાષ્ય માં ગાથા પ્રમાણ ૪૮૩ લખ્યું જેમાં ૧૮૩ ગાથા મૂલ્કભાષ્ય રૂપે છે અને ૩૦૦ ગાથા અન્ય એક ભાષ્યની છે. જેનો સમાવેશ આવશ્યક સૂત્ર-સટીકં માં કર્યો છે. [જો કે વિશેષાવશ્યક ભાષ્ય ખૂબજ પ્રસિધ્ધ થયું છે પણ તે સમગ્ર આવશ્યકસૂત્ર- ઉપરનું ભાષ્ય નથી અને અધ્યયનો અનુસારની અલગ અલગ વૃત્તિ આદિ પેટા વિવરણો તો આવશ્યક અને જીતકલ્પ એ બંને ઉપર મળે છે. જેનો અત્રે ઉલ્લેખ અમે કરેલ નથી.]
- (૪) ઓઘનિર્યુક્તિ, પિણ્ડનિર્યુક્તિ, દશઘૈકાલિકભાષ્ય નો સમાવેશ તેની તેની વૃત્તિ માં થયો જ છે. પણ તેનો કર્તા વિશેનો ઉલ્લેખ અમોને મળેલ નથી. [ઓઘનિર્યુક્તિ ઉપર ૩૦૦૦ શ્લોક પ્રમાણ ભાષ્યનો ઉલ્લેખ પણ જોવા મળેલ છે.]
- (૫) ઉત્તરાધ્યયનભાષ્યની ગાથા નિર્યુક્તિમાં ભળી ગયાનું સંભળાય છે (?)
- (૬) આ રીતે અંગ - ઉપાંગ - પ્રકીર્ણક - ચૂલિકા એ ૩૫ આગમ સૂત્રો ઉપરનો કોઈ ભાષ્યનો ઉલ્લેખ અમારી જાણમાં આવેલ નથી. કોઈક સ્થાને સાક્ષી પાઠ-આદિ સ્વરૂપે ભાષ્યગાથા જોવા મળે છે.
- (૭) ભાષ્યકર્તા તરીકે મુખ્ય નામ સહ્વદાસગણિ જોવા મળેલ છે. તેમજ જિનભદ્રગણિ-ક્ષમાશ્રમણ અને સિદ્ધસેન ગણિ નો પણ ઉલ્લેખ મળે છે. કેટલાંક ભાષ્યના કર્તા અજ્ઞાત જ છે.



### વર્તમાન કાળે ૪૫ આગમમાં ઉપલબ્ધ ચૂર્ણ:

| ક્રમ | ચૂર્ણ                    | શ્લોકપ્રમાણ | ક્રમ | ચૂર્ણ               | શ્લોકપ્રમાણ |
|------|--------------------------|-------------|------|---------------------|-------------|
| ૧.   | આચાર-ચૂર્ણ               | ૮૩૦૦        | ૯.   | દશાશ્રુતસ્કન્ધચૂર્ણ | ૨૨૨૫        |
| ૨.   | સૂત્રકૃત-ચૂર્ણ           | ૯૯૦૦        | ૧૦.  | પન્ચકલ્પચૂર્ણ       | ૩૨૭૫        |
| ૩.   | ભગવતી-ચૂર્ણ              | ૩૧૧૪        | ૧૧.  | જીતકલ્પચૂર્ણ        | ૧૦૦૦        |
| ૪.   | જીવાભિગમ-ચૂર્ણ           | ૧૫૦૦        | ૧૨.  | આવશ્યકચૂર્ણ         | ૧૮૫૦૦       |
| ૫.   | જંબૂદ્વીપપ્રજ્ઞાસિ-ચૂર્ણ | ૧૮૭૯        | ૧૩.  | દશવૈકાલિકચૂર્ણ      | ૭૦૦૦        |
| ૬.   | નિશીથચૂર્ણ               | ૨૮૦૦૦       | ૧૪.  | ઉત્તરાધ્યયનચૂર્ણ    | ૫૮૫૦        |
| ૭.   | વૃહત્કલ્પચૂર્ણ           | ૧૬૦૦૦       | ૧૫.  | નન્દીચૂર્ણ          | ૧૫૦૦        |
| ૮.   | વ્યવહારચૂર્ણ             | ૧૨૦૦        | ૧૬.  | અનુયોગદારચૂર્ણ      | ૨૨૬૫        |

#### નોંધ :-

- (૧) ઉક્ત ૧૬ ચૂર્ણમાંથી નિશીથ, દશાશ્રુતસ્કન્ધ, જીતકલ્પ એ ત્રણ ચૂર્ણ અમારા આ સંપાદનમાં સમાવાઈ ગયેલ છે.
- (૨) આચાર, સૂત્રકૃત, આવશ્યક, દશવૈકાલિક, ઉત્તરાધ્યયન, નન્દી, અનુયોગદાર એ સાત ચૂર્ણ પૂજ્યપાદ આગમોદ્ધારક શ્રી એ પ્રકાશીત કરાવી છે.
- (૩) દશવૈકાલિકની બીજી એક ચૂર્ણ જે અગત્યસિંહસૂરિકૃત છે તેનું પ્રકાશન પૂજ્ય શ્રી પુન્યવિજયજીએ કરાવેલ છે.
- (૪) જંબૂદ્વીપપ્રજ્ઞાસિચૂર્ણ વિશે હીરાલાલ કાપડીયા પ્રશ્નાર્થચિહ્ન ઉભું કરે છે. ભગવતી ચૂર્ણ તો મળેજ છે, પણ હજી પ્રકાશીત થઈ નથી. તેમજ વૃહત્કલ્પ, વ્યવહાર, પન્ચકલ્પ એ ત્રણ હસ્તપ્રતો અમે જોઈ છે પણ પ્રકાશીત થયાનું જાણમાં નથી.
- (૫) ચૂર્ણિકાર તરીકે જિનદાસગણિમહત્તરનું નામ મુખ્યત્વે સંભળાય છે. કેટલાકના મતે અમુક ચૂર્ણના કર્તાનો સ્પષ્ટોલ્લેખ મળતો નથી.

#### “આગમ-પંચાંગી” એક ચિન્ત્ય બાબત”

- ૧ વર્તમાન કાળે પ્રાપ્ત આગમ સાહિત્યની વિચારણા પછી ખરેખર આગમના પાંચ અંગોમાં કેટલું અને શું ઉપલબ્ધ છે તે જાણ્યા પછી એક પ્રશ્ન થાય કે આગમ પંચાંગી ની વાતો કેટલી ચિન્ત્ય છે. અંગ-ઉપાંગ-પ્રકીર્ણક-ચૂલિકા એ ૩૫ આગમો ઉપર માધ્ય નથી. એટલે ૩૫ આગમનું એક અંગ તો અપ્રાપ્ય જ બન્યું. સૂત્ર પરત્વે ઉપલબ્ધ નિર્વૃક્તિ ફક્ત છ છે. એટલે ૩૬ આગમોનું એક અંગ અપ્રાપ્ય જ બન્યું. આ રીતે ક્યાંક માધ્ય, ક્યાંક નિર્વૃક્તિ અને ક્યાંક ચૂર્ણના અભાવે વર્તમાન કાળે સુવ્યવસ્થિત પંચાંગી એક માત્ર આવશ્યક સૂત્રની ગણાય.
- ૨ નન્દીસૂત્ર માં પંચાંગીને બદલે સંગ્રહણી, પ્રતિપત્તિઓ વગેરેના પણ ઉલ્લેખ છે.

## ▶ ડપ આગમ અંતર્ગત વર્તમાન કાળે ઉપલબ્ધ વિભાગો ◀

સૂચના :- અમે સંપાદીત કરેલ આગમસુત્તાણિ-સટીકં માં બેકી નંબરના પૃષ્ઠો ઉપર જમણી બાજુ આગમસૂત્ર ના નામ પછી અંકો આપેલ છે. જેમકે ૧/૩/૬/૨/૫૪ વગેરે. આ અંકો તે તે આગમના વિભાગીકરણને જણાવે છે. જેમકે આચારમાં પ્રથમ અંક શ્રુતસ્કન્ધનો છે તેના વિભાગ રૂપે બીજો અંક ચૂલા છે તેના પેટા વિભાગ રૂપે ત્રીજો અંક અધ્યયનનો છે. તેના પેટા વિભાગ રૂપે ચોથો અંક ઉદ્દેશક નો છે. તેના પેટા વિભાગ રૂપે છેલ્લો અંક મૂલનો છે. આ મૂલ ગદ્ય કે પદ્ય હોઈ શકે. જો ગદ્ય હોય તો ત્યાં પેરેબ્રાક્ સ્પર્શલથી કે છુટુ લખાણ છે અને ગાથા/પદ્ય ને પદ્યની સ્પર્શલથી || - || ગોઠવેલ છે.

પ્રત્યેક આગમ માટે આ રીતે જ ઓબ્લિકમાં (/) પછી ના વિભાગને તેના-તેના પેટા-પેટા વિભાગ સમજવા.

જ્યાં જે-તે પેટા વિભાગ ન હોય ત્યાં (/) ઓબ્લિક પછી ડેસ મુકીને તે વિભાગ ત્યાં નથી તેમ સુચવેલું છે.]

- (૧) આચાર - શ્રુતસ્કન્ધ:/ચૂલા/અધ્યયનં/ઉદ્દેશક:/મૂલં  
ચૂલા નામક પેટા વિભાગ બીજા શ્રુતસ્કન્ધ માં જ છે.
- (૨) સૂત્રકૃત - શ્રુતસ્કન્ધ:/અધ્યયનં/ઉદ્દેશક:/મૂલં
- (૩) સ્થાન - સ્થાનં/અધ્યયનં/મૂલં
- (૪) સમવાય - સમવાય:/મૂલં
- (૫) મગવતી - શતકં/વર્ગ્ગ:-અંતરશતકં/ઉદ્દેશક:/મૂલં  
અહીં શતકના પેટા વિભાગમાં બે નામો છે. (૧) વર્ગ્ગ: (૨) અંતરશતક કેમકે શતક ૨૧, ૨૨, ૨૩ માં શતક ના પેટા વિભાગનું નામ વર્ગ્ગ: જ ણાવેલ છે. શતક - ૩૨, ૩૪, ૩૫, ૩૬, ૪૦ ના પેટા વિભાગને અંતરશતક અથવા શતકશતક નામથી ઓળખાવાય છે.
- (૬) જ્ઞાતાધર્મકથા- શ્રુતસ્કન્ધ:/વર્ગ્ગ:/અધ્યયનં/મૂલં  
પહેલા શ્રુતસ્કન્ધ માં અધ્યયન જ છે. બીજા શ્રુતસ્કન્ધ નો પેટાવિભાગ વર્ગ્ગ નામે છે અને તે વર્ગ્ગ ના પેટા વિભાગમાં અધ્યયન છે.
- (૭) ઉપાસકદશા- અધ્યયનં/મૂલં
- (૮) અન્તકૃદ્દશા- વર્ગ્ગ:/અધ્યયનં/મૂલં
- (૯) અનુસ્તરીપપાતિકદશા- વર્ગ્ગ:/અધ્યયનં/મૂલં
- (૧૦) પ્રશ્નવ્યાકરણ- દ્વારં/અધ્યયનં/મૂલં  
આશ્રવ અને સંવર એવા સ્પષ્ટ બે ભેદ છે જેને આશ્રવદ્વાર અને સંવરદ્વાર કહ્યા છે. (કોઈક દ્વાર ને બદલે શ્રુતસ્કન્ધ શબ્દ પ્રયોગ પણ કરે છે)
- (૧૧) વિપાકશ્રુત- શ્રુતસ્કન્ધ:/અધ્યયનં/મૂલં
- (૧૨) ઔપપાતિક- મૂલં
- (૧૩) રાજપ્રશ્નીય- મૂલં

- (૧૪) **જીવાજીવાભિગમ-** \*પ્રતિપત્તિ:/\* ઉદ્દેશક:/મૂલં  
આ આગમમાં ઉક્ત ત્રણ વિભાગો કર્યા છે તો પણ સમજણ માટે પ્રતિપત્તિ: પછી એક પેટાવિભાગ નોંધનીય છે. કેમકે પ્રતિપત્તિ -૩-માં વૈરહય, તિરિક્ષજોગિય, મનુષ્ય, દેવ એવા ચાર પેટાવિભાગો પડે છે. તેથી તિપત્તિ/(નૈરહયઆદિ)/ઉદ્દેશક:/મૂલં એ રીતે સ્પષ્ટ અલગ પાડેલા છે, એજ રીતે દશમી પ્રતિપત્તિ ના ઉદ્દેશક: નવ નથી પણ તે પેટાવિભાગ પ્રતિપત્તિ: નામે જ છે.
- (૧૫) **પ્રજ્ઞાપના-** પદં/ઉદ્દેશક:/દ્વારં/મૂલં  
પદના પેટા વિભાગમાં ક્યાંક ઉદ્દેશક: છે, ક્યાંક દ્વારં છે પણ પદ-૨૮ના પેટા વિભાગમાં ઉદ્દેશક: અને તેના પેટા વિભાગમાં દ્વારં પણ છે.
- (૧૬) **સૂર્યપ્રજ્ઞાસિ-** પ્રામૃતં/પ્રામૃતપ્રામૃતં/મૂલં
- (૧૭) **ચન્દ્રપ્રજ્ઞાસિ-** પ્રામૃતં/પ્રામૃતપ્રામૃતં/મૂલં  
આગમ ૧૬-૧૭માં પ્રામૃતપ્રામૃત ના પણ પ્રતિપત્તિ: નામક પેટા વિભાગ છે. પણ ઉદ્દેશક: આદિ મુજબ તેનો વિશેષ વિસ્તાર થાયેલ નથી.
- (૧૮) **જમ્બૂદીપપ્રજ્ઞાસિ-** વક્ષસ્કાર:/મૂલં
- (૧૯) **નિરયાવલિકા -** અધ્યયનં/મૂલં
- (૨૦) **કલ્પવતંસિકા -** અધ્યયનં/મૂલં
- (૨૧) **પુષ્પિતાં -** અધ્યયનં/મૂલં
- (૨૨) **પુષ્પચૂલિકા -** અધ્યયનં/મૂલં
- (૨૩) **વણ્હિદશા -** અધ્યયનં/મૂલં  
આગમ ૧૮ થી ૨૩ નિરયાવલિકાદિ નામથી સાથે જોવા મળે છે કેમકે તેને ઉપાંગના પાંચ વર્ગ તરીકે સૂત્રકારે ઓળખાવેલા છે. જેમાં વર્ગ-૧, નિરયાવલિકા, વર્ગ-૨ કલ્પવતંસિકા... વગેરે જાણવા
- (૨૪) **ધી ૩૩) ચતુ:શરણ (આદિ દશોપચત્રા) મૂલં**
- (૩૪) **નિશીય -** ઉદ્દેશક:/મૂલં
- (૩૫) **ઘૃહલ્કલ્પ -** ઉદ્દેશક:/મૂલં
- (૩૬) **વ્યવહાર -** ઉદ્દેશક:/મૂલં
- (૩૭) **દશાશ્રુતસ્કન્ધ -** દશા/મૂલં
- (૩૮) **જીતકલ્પ -** મૂલં
- (૩૯) **મહાનિશીય -** અધ્યયનં/ઉદ્દેશક:/મૂલં
- (૪૦) **આવશ્યક -** અધ્યયનં/મૂલં
- (૪૧) **ઓષ/પિણ્ડનિર્યુક્તિ -** મૂલં
- (૪૨) **દશવૈકાલિક -** અધ્યયનં/ઉદ્દેશક:/મૂલં
- (૪૩) **ઉત્તરાધ્યયન -** અધ્યયનં//મૂલં
- (૪૪- ૪૫) **નન્દી-અનુયોગદ્વાર -** મૂલં

## અમારા સંપાદિત ૪૫ આગમોમાં આવતા મૂલ નો અંક તથા તેમાં સમાવિષ્ટ ગાથા

| ક્રમ | આગમસૂત્ર          | મૂલં | ગાથા | ક્રમ | આગમસૂત્ર         | મૂલં | ગાથા |
|------|-------------------|------|------|------|------------------|------|------|
| ૧.   | આચાર              | ૫૫૨  | ૧૪૭  | ૨૪.  | ચતુ:શરણ          | ૬૩   | ૬૩   |
| ૨.   | સૂત્રકૃત          | ૮૦૬  | ૭૨૩  | ૨૫.  | આતુરપ્રત્યાખ્યાન | ૭૧   | ૭૦   |
| ૩.   | સ્થાન             | ૧૦૧૦ | ૧૬૧  | ૨૬.  | મહાપ્રત્યાખ્યાનં | ૧૪૨  | ૧૪૨  |
| ૪.   | સમવાય             | ૩૮૩  | ૧૩   | ૨૭.  | મક્તપરિણા        | ૧૭૨  | ૧૭૨  |
| ૫.   | ભગવતી             | ૧૦૮૭ | ૧૧૪  | ૨૮.  | તંદુલવૈવારિક     | ૧૬૧  | ૧૩૧  |
| ૬.   | જ્ઞાતાધર્મકથા     | ૨૪૧  | ૫૭   | ૨૯.  | સંસ્તારક         | ૧૩૩  | ૧૩૩  |
| ૭.   | ઉપાસક દશા         | ૭૩   | ૧૩   | ૩૦.  | ગચ્છાચાર         | ૧૩૭  | ૧૩૭  |
| ૮.   | અન્તકૃદ્દશા       | ૬૨   | ૧૨   | ૩૧.  | ગણિવિદ્યા        | ૮૨   | ૮૨   |
| ૯.   | અનુતરોપપાતિક      | ૧૩   | ૪    | ૩૨.  | દેવેન્દ્રસ્તવ    | ૩૦૭  | ૩૦૭  |
| ૧૦.  | પ્રશ્નવ્યાકરણ     | ૪૭   | ૧૪   | ૩૩.  | મરણસમાધિ         | ૬૬૪  | ૬૬૪  |
| ૧૧.  | વિપાકશ્રુત        | ૪૭   | ૩    | ૩૪.  | નિશીષ            | ૧૪૨૦ | -    |
| ૧૨.  | ઔપપાતિક           | ૭૭   | ૩૦   | ૩૫.  | બૃહલ્કલ્પ        | ૨૧૫  | -    |
| ૧૩.  | રાજપ્રશ્નિય       | ૮૫   | -    | ૩૬.  | વ્યવહાર          | ૨૮૫  | -    |
| ૧૪.  | જીવાભિગમ          | ૩૧૮  | ૧૩   | ૩૭.  | દશાશ્રુતસ્કન્ધ   | ૧૧૪  | ૫૬   |
| ૧૫.  | પ્રજ્ઞાપના        | ૬૨૨  | ૨૩૧  | ૩૮.  | જીતકલ્પ          | ૧૦૩  | ૧૦૩  |
| ૧૬.  | સૂર્યપ્રજ્ઞાતિ    | ૨૧૪  | ૧૦૩  | ૩૯.  | મહાનિશીથ         | ૧૫૨૮ | ૮    |
| ૧૭.  | ચન્દ્રપ્રજ્ઞાતિ   | ૨૧૮  | ૧૦૭  | ૪૦.  | આવશ્યક           | ૧૨   | ૨૧   |
| ૧૮.  | જન્મ્વીપપ્રજ્ઞાતિ | ૩૬૫  | ૧૩૧  | ૪૧.  | ઓષનિર્યુક્તિ     | ૧૧૬૫ | ૧૧૬૫ |
| ૧૯.  | નિરયાવલિકા        | ૨૧   | -    | ૪૧.  | વિન્હનિર્યુક્તિ  | ૭૧૨  | ૭૧૨  |
| ૨૦.  | કલ્પવત્સિકા       | ૫    | ૧    | ૪૨.  | દશવૈકાલિક        | ૫૪૦  | ૫૧૫  |
| ૨૧.  | પુષ્પિતા          | ૧૧   | ૨    | ૪૩.  | ઉત્તરાધ્યયન      | ૧૭૩૧ | ૧૬૪૦ |
| ૨૨.  | પુષ્પચૂલિકા       | ૩    | ૧    | ૪૪.  | નદી              | ૧૬૮  | ૧૩   |
| ૨૩.  | વણ્હિદશા          | ૫    | ૧    | ૪૫.  | અનુયોગદ્વાર      | ૩૫૦  | ૧૪૧  |

નોંધ :- ઉક્ત ગાથા સંખ્યાનો સમાવેશ મૂલં માં થઈ જ નથી છે. તે મૂલ સિવાયની અલગ ગાથા સમજવી નહીં. મૂલ ૧૭૬ એ અગ્રો સૂત્ર અને ગાથા બંને માટે નો આપેલો સંયુક્ત અનુક્રમ છે. ગાથા બધાંજ સંપાદનોમાં સામાન્ય અંક ધરાવતી હોવાથી તેનો અલગ અંક આપેલ છે. પણ સૂત્રના વિભાગ દરેક સંપાદકે ભિન્નભિન્ન રીતે કર્યા હોવાથી અમે સૂત્રાંક જુદો પાડતા નથી.

## -: अमारा प्रकाशनी :-

- [१] अभिनव हेम लघुप्रक्रिया - १ - सप्ताङ्ग विवरणम्  
 [२] अभिनव हेम लघुप्रक्रिया - २ - सप्ताङ्ग विवरणम्  
 [३] अभिनव हेम लघुप्रक्रिया - ३ - सप्ताङ्ग विवरणम्  
 [४] अभिनव हेम लघुप्रक्रिया - ४ - सप्ताङ्ग विवरणम्  
 [५] कृदन्तमाला  
 [६] चैत्यवन्दन पर्वमाला  
 [७] चैत्यवन्दन सङ्ग्रह - तीर्थजिनविशेष  
 [८] चैत्यवन्दन चौविशी  
 [९] शत्रुञ्जय भक्ति [आवृत्ति-दो]  
 [१०] अभिनव जैन पञ्चाङ्ग - २०४६  
 [११] अभिनव उपदेश प्रासाद - १- श्रावक कर्तव्य - १ थी ११  
 [१२] अभिनव उपदेश प्रासाद - २- श्रावक कर्तव्य - १२ थी १५  
 [१३] अभिनव उपदेश प्रासाद - ३- श्रावक कर्तव्य - १६ थी ३६  
 [१४] नवपद - श्रीपाल (शाश्वती ओणीना व्याख्यान ३पे)  
 [१५] समाधि मरुत [विधि - सूत्र - पद्य - आराधना-मरुतलेद-संग्रह]  
 [१६] चैत्यवन्दन भाषा [७७७ चैत्यवन्दनोत्तम संग्रह]  
 [१७] तत्त्वार्थ सूत्र प्रबोधटीका [अध्याय-१]  
 [१८] तत्त्वार्थ सूत्रना आगम आधार स्थानो  
 [१९] सिद्धायलनो साथी [आवृत्ति - भे]  
 [२०] चैत्य परिपाटी  
 [२१] अमदावाह जिनमंदिर उपाश्रय आदि डिरेक्टरी  
 [२२] शत्रुञ्जय भक्ति [आवृत्ति - भे]  
 [२३] श्री नवकारमंत्र नवलाभ जप नौधपोथी  
 [२४] श्री यारित्र पद्य ओक करोड जप नौधपोथी  
 [२५] श्री भारप्रत पुस्तिका तथा अन्य नियमो - [आवृत्ति - यार]  
 [२६] अभिनव जैन ध्यांग - २०४२ [सर्वप्रथम १३ विभागीयोंमें]  
 [२७] श्री ज्ञानपद्य पूजा  
 [२८] अंतिम आराधना तथा साधु साध्वी काणधर्म विधि  
 [२९] श्रावक अंतिम आराधना [आवृत्ति त्रय]  
 [३०] वीतराग स्तुति संयथ [११५१ लाववाही स्तुतिओ]  
 [३१] (पूज्य आगमोद्धारक श्री ना समुदायना) कायमी संपर्क स्थणो  
 [३२] तत्त्वार्थाधिगम सूत्र अभिनव टीका - अध्याय-१  
 [३३] तत्त्वार्थाधिगम सूत्र अभिनव टीका - अध्याय-२  
 [३४] तत्त्वार्थाधिगम सूत्र अभिनव टीका - अध्याय-३  
 [३५] तत्त्वार्थाधिगम सूत्र अभिनव टीका - अध्याय-४

- [૩૬] તત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા - અધ્યાય-૫  
 [૩૭] તત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા - અધ્યાય-૬  
 [૩૮] તત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા - અધ્યાય-૭  
 [૩૯] તત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા - અધ્યાય-૮  
 [૪૦] તત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા - અધ્યાય-૯  
 [૪૧] તત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા - અધ્યાય-૧૦

પ્રકાશન ૧ થી ૪૧ અભિનવશ્રુત પ્રકાશને પ્રગટ કરેલ છે.

|                       |                  |                   |
|-----------------------|------------------|-------------------|
| [૪૨] આયારો            | [આગમસુત્તાણિ-૧]  | પદમં અંગસુતં      |
| [૪૩] સૂયગહો           | [આગમસુત્તાણિ-૨]  | વીઅં અંગસુતં      |
| [૪૪] ઠાણં             | [આગમસુત્તાણિ-૩]  | તદયં અંગસુતં      |
| [૪૫] સમવાઓ            | [આગમસુત્તાણિ-૪]  | ચતુત્યં અંગસુતં   |
| [૪૬] વિવાહપત્રતિ      | [આગમસુત્તાણિ-૫]  | પંચમં અંગસુતં     |
| [૪૭] નાયાધમ્મકહાઓ     | [આગમસુત્તાણિ-૬]  | છટ્ટં અંગસુતં     |
| [૪૮] ઉવાસગદસાઓ        | [આગમસુત્તાણિ-૭]  | સત્તમં અંગસુતં    |
| [૪૯] અંતગહ્ડદસાઓ      | [આગમસુત્તાણિ-૮]  | અદ્વમં અંગસુતં    |
| [૫૦] અનુત્તોચવાઇયદસાઓ | [આગમસુત્તાણિ-૯]  | નવમં અંગસુતં      |
| [૫૧] પ્ણહાવાગરણં      | [આગમસુત્તાણિ-૧૦] | દસમં અંગસુતં      |
| [૫૨] વિવાગસૂયં        | [આગમસુત્તાણિ-૧૧] | એક્કરસમં અંગસુતં  |
| [૫૩] ઉવવાઇયં          | [આગમસુત્તાણિ-૧૨] | પદમં ઉવંગસુતં     |
| [૫૪] રાયપ્ણસેણિયં     | [આગમસુત્તાણિ-૧૩] | વીઅં ઉવંગસુતં     |
| [૫૫] જીવાજીવાધિગમં    | [આગમસુત્તાણિ-૧૪] | તદયં ઉવંગસુતં     |
| [૫૬] પત્રવણાસુતં      | [આગમસુત્તાણિ-૧૫] | ચતુત્યં ઉવંગસુતં  |
| [૫૭] સૂરપત્રતિ:       | [આગમસુત્તાણિ-૧૬] | પંચમં ઉવંગસુતં    |
| [૫૮] ચંદપત્રતિ:       | [આગમસુત્તાણિ-૧૭] | છટ્ટં ઉવંગસુતં    |
| [૫૯] જંદૂહીવપત્રતિ    | [આગમસુત્તાણિ-૧૮] | સત્તમં ઉવંગસુતં   |
| [૬૦] નિરયાવલિયાણં     | [આગમસુત્તાણિ-૧૯] | અદ્વમં ઉવંગસુતં   |
| [૬૧] કપ્પવહિંસિયાણં   | [આગમસુત્તાણિ-૨૦] | નવમં ઉવંગસુતં     |
| [૬૨] પુષ્કિયાણં       | [આગમસુત્તાણિ-૨૧] | દસમં ઉવંગસુતં     |
| [૬૩] પુષ્કચૂલિયાણં    | [આગમસુત્તાણિ-૨૨] | એક્કરસમં ઉવંગસુતં |
| [૬૪] વ્ણિહિદસાણં      | [આગમસુત્તાણિ-૨૩] | વારસમં ઉવંગસુતં   |
| [૬૫] ચત્તસરણં         | [આગમસુત્તાણિ-૨૪] | પદમં પર્ઈણાણં     |
| [૬૬] આરપદ્ધવ્ણાણં     | [આગમસુત્તાણિ-૨૫] | વીઅં પર્ઈણાણં     |
| [૬૭] મહાપદ્ધવ્ણાણં    | [આગમસુત્તાણિ-૨૬] | તીદયં પર્ઈણાણં    |
| [૬૮] ભત્તપરિણા        | [આગમસુત્તાણિ-૨૭] | ચતુત્યં પર્ઈણાણં  |

|                     |                     |                   |
|---------------------|---------------------|-------------------|
| [૬૧] તંદુલવેયાલિયં  | [આગમસુત્તાણિ-૨૮ ]   | પંચમં પર્વણગં     |
| [૭૦] સંધારણં        | [આગમસુત્તાણિ-૨૯ ]   | છઠ્ઠું પર્વણગં    |
| [૭૧] ગચ્છાપ્યાર     | [આગમસુત્તાણિ-૩૦/૧ ] | સત્તમં પર્વણગં-૧  |
| [૭૨] ચંદાવેજ્ઞયં    | [આગમસુત્તાણિ-૩૦/૨ ] | સત્તમં પર્વણગં-૨  |
| [૭૩] ગણિવિજ્ઞા      | [આગમસુત્તાણિ-૩૧ ]   | અઢમં પર્વણગં      |
| [૭૪] દેવિંદત્થઓ     | [આગમસુત્તાણિ-૩૨ ]   | નવમં પર્વણગં      |
| [૭૫] મરણસમાહિ       | [આગમસુત્તાણિ-૩૩/૧ ] | દસમં પર્વણગં-૧    |
| [૭૬] વીરત્થય        | [આગમસુત્તાણિ-૩૩/૨ ] | દસમં પર્વણગં-૨    |
| [૭૭] નિસીહ          | [આગમસુત્તાણિ-૩૪ ]   | પઢમં છેયસુત્તં    |
| [૭૮] બુહત્કમ્પો     | [આગમસુત્તાણિ-૩૫ ]   | ઘીઅં છેયસુત્તં    |
| [૭૯] વવહાર          | [આગમસુત્તાણિ-૩૬ ]   | તઇયં છેયસુત્તં    |
| [૮૦] દસાસુયક્કંધં   | [આગમસુત્તાણિ-૩૭ ]   | ચડત્થં છેયસુત્તં  |
| [૮૧] જીયકમ્પો       | [આગમસુત્તાણિ-૩૮/૧ ] | પંચમં છેયસુત્તં-૧ |
| [૮૨] પંચકમ્પમાસ     | [આગમસુત્તાણિ-૩૮/૨ ] | પંચમં છેયસુત્તં-૨ |
| [૮૩] મહાનિસીહં      | [આગમસુત્તાણિ-૩૯ ]   | છઢ્ઠું છેયસુત્તં  |
| [૮૪] આવસસસયં        | [આગમસુત્તાણિ-૪૦ ]   | પઢમં મૂલસુત્તં    |
| [૮૫] ઓહનિજ્ઞુત્તિ   | [આગમસુત્તાણિ-૪૧/૧ ] | ઘીઅં મૂલસુત્તં-૧  |
| [૮૬] પિંડનિજ્ઞુત્તિ | [આગમસુત્તાણિ-૪૧/૨ ] | ઘીઅં મૂલસુત્તં-૨  |
| [૮૭] દસવેયાલિયં     | [આગમસુત્તાણિ-૪૨ ]   | તઇયં મૂલસુત્તં    |
| [૮૮] ઉત્તરજ્ઞયણં    | [આગમસુત્તાણિ-૪૩ ]   | ચડત્થં મૂલસુત્તં  |
| [૮૯] નંદીસૂયં       | [આગમસુત્તાણિ-૪૪ ]   | પઢમા ચૂલિયા       |
| [૯૦] અનુઓગદારં      | [આગમસુત્તાણિ-૪૫ ]   | વિતિયા ચૂલિયા     |

**પ્રકાશન ૪૨ થી ૮૦ આગમશ્રુત પ્રકાશને પ્રગટ કરેલ છે.**

|                         |                |            |                  |
|-------------------------|----------------|------------|------------------|
| [૯૧] આપાર -             | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૧] | પહેલું અંગસૂત્ર  |
| [૯૨] સૂયગડ -            | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૧] | ઘીજું અંગસૂત્ર   |
| [૯૩] ઠાણ -              | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૧] | ત્રીજું અંગસૂત્ર |
| [૯૪] સમવાય -            | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૧] | ચોથું અંગસૂત્ર   |
| [૯૫] વિવાહપત્રત્તિ -    | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૨] | પાંચમું અંગસૂત્ર |
| [૯૬] નાયાધમ્મકહા -      | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૩] | છઠ્ઠું અંગસૂત્ર  |
| [૯૭] ઉવાસગહસા -         | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૩] | સાતમું અંગસૂત્ર  |
| [૯૮] અંતગહસા -          | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૩] | આઠમું અંગસૂત્ર   |
| [૯૯] અનુત્તરોપપાતિકહસા- | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૩] | નવમું અંગસૂત્ર   |
| [૧૦૦] પહ્લાવાગરણ-       | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૩] | દશમું અંગસૂત્ર   |

|       |                 |                |            |                      |
|-------|-----------------|----------------|------------|----------------------|
| [૧૦૧] | વિવાગસૂય -      | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૩] | અગિયારમું અંગસૂત્ર   |
| [૧૦૨] | ઉવવાઇય          | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૪] | પહેલું ઉપાંગસૂત્ર    |
| [૧૦૩] | રાયખસેશ્ચિય -   | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૪] | બીજું ઉપાંગસૂત્ર     |
| [૧૦૪] | જીવાજીવાભિગમ -  | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૪] | ત્રીજું ઉપાંગસૂત્ર   |
| [૧૦૫] | પત્રવજ્ઞાસુત્ર  | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૪] | ચોથું ઉપાંગસૂત્ર     |
| [૧૦૬] | સૂરપત્રતિ -     | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૫] | પાચમું ઉપાંગસૂત્ર    |
| [૧૦૭] | ચંદ્રપત્રતિ -   | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૫] | છઠ્ઠું ઉપાંગસૂત્ર    |
| [૧૦૮] | જંબુદીવપત્રતિ - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૫] | સાતમું ઉપાંગસૂત્ર    |
| [૧૦૯] | નિરયાવલિયા -    | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૫] | આઠમું ઉપાંગસૂત્ર     |
| [૧૧૦] | કપ્પવડિંસિયા -  | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૫] | નવમું ઉપાંગસૂત્ર     |
| [૧૧૧] | પુષ્કિયા -      | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૫] | દશમું ઉપાંગસૂત્ર     |
| [૧૧૨] | પુષ્કયૂલિયા -   | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૫] | અગિયારમું ઉપાંગસૂત્ર |
| [૧૧૩] | વહિહદસા -       | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૫] | બારમું ઉપાંગસૂત્ર    |
| [૧૧૪] | ચંદ્રસરણ -      | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] | પહેલો પયત્રો         |
| [૧૧૫] | આઉરખચ્ચકખાણ -   | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] | બીજો પયત્રો          |
| [૧૧૬] | મહાપચ્ચકખાણ -   | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] | ત્રીજો પયત્રો        |
| [૧૧૭] | ભત્તપરિણ્ણા -   | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] | ચોથો પયત્રો          |
| [૧૧૮] | તંદુલવેયાલિય -  | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] | પાંચમો પયત્રો        |
| [૧૧૯] | સંચારગ -        | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] | છઠ્ઠો પયત્રો         |
| [૧૨૦] | ગચ્છાપાર -      | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] | સાતમો પયત્રો-૧       |
| [૧૨૧] | ચંદાવેજ્જય -    | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] | સાતમો પયત્રો-૨       |
| [૧૨૨] | ગણિવિજ્જ -      | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] | આઠમો પયત્રો          |
| [૧૨૩] | દેવિંદત્યઓ -    | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] | નવમો પયત્રો          |
| [૧૨૪] | વીરત્યવ -       | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] | દશમો પયત્રો          |
| [૧૨૫] | નિસીહ -         | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] | પહેલું છેદસૂત્ર      |
| [૧૨૬] | બુહતકપ્પ -      | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] | બીજું છેદસૂત્ર       |
| [૧૨૭] | વવહાર -         | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] | ત્રીજું છેદસૂત્ર     |
| [૧૨૮] | દસાસુયકપ્પંધ -  | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] | ચોથું છેદસૂત્ર       |
| [૧૨૯] | જીયકપ્પો -      | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] | પાંચમું છેદસૂત્ર     |
| [૧૩૦] | મહાનિસીહ -      | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૬] | છઠ્ઠું છેદસૂત્ર      |
| [૧૩૧] | આવસ્સય -        | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૭] | પહેલું મૂલસૂત્ર      |
| [૧૩૨] | ઓહનિજ્જુતિ -    | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૭] | બીજું મૂલસૂત્ર-૧     |
| [૧૩૩] | પિંડનિજ્જુતિ -  | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૭] | બીજું મૂલસૂત્ર-૨     |
| [૧૩૪] | દસવેયાલિય -     | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૭] | ત્રીજું મૂલસૂત્ર     |



|                     |                |            |                |
|---------------------|----------------|------------|----------------|
| [૧૩૫] ઉત્તરજૂઝપણ -  | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૭] | ચોથું મૂલસુત્ર |
| [૧૩૬] નંદીસુતં -    | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૭] | પહેલી ચૂલિકા   |
| [૧૩૭] અનુયોગદ્વાર - | ગુજરાતી અનુવાદ | [આગમદીપ-૭] | બીજી ચૂલિકા    |

**પ્રકાશન ૯૧ થી ૧૩૭ આગમદીપ પ્રકાશને પ્રગટ કરેલ છે.**

|   |  |             |             |
|---|--|-------------|-------------|
| [૧૩૮] દીક્ષા યોગાદિ વિધિ                      |  |             |             |
| [૧૩૯] ૪૫ આગમ મહાપૂજન વિધિ                     |  |             |             |
| [૧૪૦] આચારાન્ગસૂત્રં સટીકં                    |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૧     |
| [૧૪૧] સૂત્રકૃતાન્ગસૂત્રં સટીકં                |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૨     |
| [૧૪૨] સ્થાનાન્ગસૂત્રં સટીકં                   |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૩     |
| [૧૪૩] સમવાયાન્ગસૂત્રં સટીકં                   |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૪     |
| [૧૪૪] મગવતીઅન્ગસૂત્રં સટીકં                   |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૫/૬   |
| [૧૪૫] જ્ઞાતાધર્મકથાન્ગસૂત્રં સટીકં            |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૭     |
| [૧૪૬] ઉપાસકદશાન્ગસૂત્રં સટીકં                 |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૭     |
| [૧૪૭] અન્તકૃદ્દશાન્ગસૂત્રં સટીકં              |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૭     |
| [૧૪૮] અનુત્તરોપપાતિકદશાન્ગસૂત્રં સટીકં        |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૭     |
| [૧૪૯] પ્રશ્નવ્યાકરણાન્ગસૂત્રં સટીકં           |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૭     |
| [૧૫૦] વિપાકશ્રુતાન્ગસૂત્રં સટીકં              |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૮     |
| [૧૫૧] ઔપપાતિકઉપાન્ગસૂત્રં સટીકં               |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૮     |
| [૧૫૨] રાજપ્રશ્નિયઉપાન્ગસૂત્રં સટીકં           |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૮     |
| [૧૫૩] જીવાજીવાભિગમઉપાન્ગસૂત્રં સટીકં          |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૯     |
| [૧૫૪] પ્રજ્ઞાપનાઉપાન્ગસૂત્રં સટીકં            |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૧૦/૧૧ |
| [૧૫૫] સૂર્યપ્રજ્ઞામિતિઉપાન્ગસૂત્રં સટીકં      |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૧૨    |
| [૧૫૬] ચન્દ્રપ્રજ્ઞામિતિઉપાન્ગસૂત્રં સટીકં     |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૧૨    |
| [૧૫૭] જમ્બૂદ્વીવપ્રજ્ઞામિતિઉપાન્ગસૂત્રં સટીકં |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૧૩    |
| [૧૫૮] નિરયાવલિકાઉપાન્ગસૂત્રં સટીકં            |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૧૪    |
| [૧૫૯] કલ્પવતંસિકાઉપાન્ગસૂત્રં સટીકં           |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૧૪    |
| [૧૬૦] પુષ્પિતાઉપાન્ગસૂત્રં સટીકં              |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૧૪    |
| [૧૬૧] પુષ્પચૂલિકાઉપાન્ગસૂત્રં સટીકં           |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૧૪    |
| [૧૬૨] વર્ણિહદસાઉપાન્ગસૂત્રં સટીકં             |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૧૪    |
| [૧૬૩] ચતુઃશરણપ્રકીર્ણકસૂત્રં સટીકં            |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૧૪    |
| [૧૬૪] આતુરપ્રત્યાવ્યાનપ્રકીર્ણકસૂત્રં સટીકં   |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૧૪    |
| [૧૬૫] મહાપ્રત્યાવ્યાનપ્રકીર્ણકસૂત્રં સચ્ચાચં  |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૧૪    |
| [૧૬૬] ભક્તપરિજ્ઞાપ્રકીર્ણકસૂત્રં સચ્ચાચં      |  | આગમસુત્તાણિ | સટીકં-૧૪    |

|         |                                      |                            |
|---------|--------------------------------------|----------------------------|
| [ ૧૬૭ ] | તંદુલવૈચારિકપ્રકીર્ણકસૂત્રં સટીકં    | આગમસુત્તાણિ સટીકં-૧૪       |
| [ ૧૬૮ ] | સંસ્તારકપ્રકીર્ણકસૂત્રં સચ્ચાયં      | આગમસુત્તાણિ સટીકં-૧૪       |
| [ ૧૬૯ ] | ગચ્છાચારપ્રકીર્ણકસૂત્રં સટીકં        | આગમસુત્તાણિ સટીકં-૧૪       |
| [ ૧૭૦ ] | ગણિવિદ્યાપ્રકીર્ણકસૂત્રં સચ્ચાયં     | આગમસુત્તાણિ સટીકં-૧૪       |
| [ ૧૭૧ ] | દેવેન્દ્રસ્તવપ્રકીર્ણકસૂત્રં સચ્ચાયં | આગમસુત્તાણિ સટીકં-૧૪       |
| [ ૧૭૨ ] | મરણસમાધિપ્રકીર્ણકસૂત્રં સચ્ચાયં      | આગમસુત્તાણિ સટીકં-૧૪       |
| [ ૧૭૩ ] | નિશીઘછેદસૂત્રં સટીકં                 | આગમસુત્તાણિ સટીકં-૧૫-૧૬-૧૭ |
| [ ૧૭૪ ] | વૃહત્કલ્પછેદસૂત્રં સટીકં             | આગમસુત્તાણિ સટીકં-૧૮-૧૯-૨૦ |
| [ ૧૭૫ ] | ધ્વવહારછેદસૂત્રં સટીકં               | આગમ સુત્તાણિ સટીકં-૨૧-૨૨   |
| [ ૧૭૬ ] | દશાશ્રુતસ્કન્ધછેદસૂત્રં સટીકં        | આગમસુત્તાણિ સટીકં-૨૩       |
| [ ૧૭૭ ] | જીતકલ્પછેદસૂત્રં સટીકં               | આગમસુત્તાણિ સટીકં-૨૩       |
| [ ૧૭૮ ] | મહાનિશીઘસૂત્રં (મૂલં)                | આગમસુત્તાણિ સટીકં-૨૩       |
| [ ૧૭૯ ] | આવશ્યકમૂલસૂત્રં સટીકં                | આગમસુત્તાણિ સટીકં-૨૪-૨૫    |
| [ ૧૮૦ ] | ઓઘનિર્યુક્તિમૂલસૂત્રં સટીકં          | આગમ સુત્તામિ સટીકં-૨૬      |
| [ ૧૮૧ ] | પિષ્ઠનિર્યુક્તિમૂલસૂત્રં સટીકં       | આગમસુત્તાણિ સટીકં-૨૬       |
| [ ૧૮૨ ] | દશવૈકાલિકમૂલસૂત્રં સટીકં             | આગમસુત્તાણિ સટીકં-૨૭       |
| [ ૧૮૩ ] | ઉત્તરાધ્યયનમૂલસૂત્રં સટીકં           | આગમસુત્તાણિ સટીકં-૨૮-૨૯    |
| [ ૧૮૪ ] | નન્દી-ચૂલિકાસૂત્રં સટીકં             | આગમસુત્તાણિ સટીકં-૩૦       |
| [ ૧૮૫ ] | અનુયોગદ્વારચૂલિકાસૂત્રં સટીકં        | આગમસુત્તાણિ સટીકં-૩૦       |

પ્રકાશન ૧૩૯ થી ૧૮૫ આગમશ્રુત પ્રકાશન પ્રગટ કરેલ છે.

—: સંપર્ક સ્થળ :-

‘આગમ આરાધના કેન્દ્ર’

શીતલનાથ સોસાયટી-વિભાગ-૧, ફ્લેટ નં-૧૩, ૪થે માળે  
શ્રી નમિનાથ જૈન ટ્રેસરરજી પાછળ, બ્લોઈ સે-ટર, ખાનપુર  
અમદાવાદ-૧

“आगमसुत्ताणि-सटीकं” भाग १ थी ३० नुं विवरण

| आगमसुत्ताणि  | समाविष्टाआगमाः  |
|--------------|---|
| भाग-१        | आयार  |
| भाग-२        | सूत्रकृत  |
| भाग-३        | स्थान   |
| भाग-४        | समवाय   |
| भाग-५-६      | भगवती (अपरनाम व्याख्याप्रज्ञप्ति)   |
| भाग-७        | ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अन्तकृद्दशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्नव्याकरण  |
| भाग-८        | विपाकश्रुत, औपपातिक, राजप्रश्निय  |
| भाग-९        | जीवाजीवाभिगम  |
| भाग-१०-११    | प्रज्ञापना  |
| भाग-१२       | सूर्यप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति   |
| भाग-१३       | जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति  |
| भाग-१४       | निरवायलिका, कल्पवतंसिका, पुष्पिका, पुष्पचूलिका वण्हिदशा, घातुःशरण, आतुरप्रत्याख्यान, महाप्रत्याख्यान, भक्तपरिज्ञा, तन्दुलवैवारिक, संस्तारक, गच्छचार, गणिविद्या, देवेन्द्रस्तव, मरणसमाधि |
| भाग-१५-१६-१७ | नीशीथ   |
| भाग-१८-१९-२० | बृहत्कल्प   |
| भाग-२१-२२    | व्यवहार   |
| भाग-२३       | दशाश्रुतस्कन्ध, जीतकल्प, महनिशीथ  |
| भाग-२४-२५    | आवश्यक  |
| भाग-२६       | ओघनिर्युक्ति, पिण्डनिर्युक्ति   |
| भाग-२७       | दशवैकालिक   |
| भाग-२८-२९    | उत्तराध्ययन   |
| भाग-३०       | नन्दी, अनुयोगद्वार  |

वृत्तिः

चूर्णिः

भाष्यं

निर्युक्तिः

मूलं